RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 अक्टूबर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अक्टूबर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 13
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक **पाक्षिक**

अभिगम पालें, फिर हो प्रवेश।
धर्म स्थान पर रखें विवेक।।
अपने कर्म स्वर्ण ज्यों चमकें।
तो ही जीवन बनेगा श्रेष्ठ।।

यश व्यक्ति के कार्यों का परिणाम है।
वह चाह से नहीं, राह पर चलने से मिलता है।

चन्दन का काष्ठ सच्चा होगा
तो उसकी शीतलता व सुगंध
को कौन रोक सकता है।
चाह से सुगंध पैदा नहीं होती।

निर्णय ही हमें उलझन से
निकालता है।

ताला खुलना चाबी का
चमत्कार नहीं है। चमत्कार है,
चाबी की पहचान।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

सम्मदंसणलंभो वरं खु
तेलोक्कलंभादो।

-भगवती आराधना (742)

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तीन लोक के ऐश्वर्य से भी श्रेष्ठ है।

The achievement of right-vision is better than the again of the wealth of three worlds.

णाणं णरस्स सारो।

-दर्शनपाहुड (31)

ज्ञान मानव-जीवन का सार है।

Knowledge is the essence of human life.

सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरन्ति।

-आचारांग (1/3/1)

अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं।

The ignorant are ever asleep, the wise are always awake.

तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।

-तत्त्वार्थसूत्र (1/2)

जीवाजीवादि तत्त्वार्थों पर (दृढ़) श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन है।

A firm faith in the existence of the fundamentals (soul, non-soul, influx, bondage, stoppage, separation and freedom) is right-vision.

जहा सूई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ।।

-उत्तराध्ययन (29/59)

धागे में पिरोई हुई सूई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती, उसी प्रकार ज्ञानरूप धागे से युक्त आत्मा संसार में भटकती नहीं, विनाश को प्राप्त नहीं होती।

As a threaded needle does not get lost even when it falls to the ground, so a soul endowed with the thread of knowledge does not perish in the worldly wandering.

अनुक्रमणिका

राम चमकते भानु समाना

स्थायी स्तम्भ

06 जीवनी : **Arrival In Jawad** -संकलित

08 धर्मदेशना : **पर-सुख में अपना सुख** -आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

11 धर्मदेशना : **सत्संग है सत्य का पोषक** -आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

15 धर्मदेशना : **निकेय का विवेक** -आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

19 ज्ञान सार : **मधुर वचन** -संकलित

21 ज्ञान सार : **श्रीमद् भगवतीसूत्र** -कंचन काँकरिया

22 ज्ञान सार : **श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र** -सरिता बैंगानी

29 किड्स कॉर्नर : **बालमन में उपजे ज्ञान** -मोनिका जय ओस्तवाल

45 तत्त्व ज्ञान : **नैरयिक व परमाधार्मिक** -संकलित

46 **नीमच चातुर्मास समाचार** -महेश नाहटा

सौरभ विशेषांक

24 **धर्ममूर्ति आनंदकुमारी** -संकलित

31 **विश्वास व संवाद से संवरेगा संबंध** -गौतम पारख

33 **विवेक से ही धर्म स्थान पावन** -लता बोथरा

35 **धर्म स्थान में विशेष** -सजग

36 **आत्मा के पतन से बचाता है विवेक** -डॉ. आभाकिरण गाँधी

38 **धर्म स्थान पर हमारा विवेक** -पदमचन्द गाँधी

42 **धर्म स्थान की आवश्यकता व उपयोग** -सुरेश बोरदिया

भक्ति रस

28 **आचार्य श्री रामेश का संघ** -धर्मेन्द्र पारख

37 **मुँहपत्ती** -धीरज मेहता

44 **पाँच अभिगम पालें** -डॉ. दिलीप धींग

चिन्तन पराग

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

एक ही गाँव में धर्म स्थान अलग-अलग क्यों बनने लगे? मन्दिरमार्गी, दिगम्बर, तेरहपंथ के अपने-अपने धर्म स्थान हों तो बात समझ में आती है, पर स्थानकवासी समाज में भी अलग-अलग धर्म स्थान खड़े होने के पीछे क्या राज है? अलग-अलग धर्म स्थान हमारी असहिष्णुता व अहंकार के स्मारक हैं। अहंकार व असहिष्णुता के कारण पहले सम्प्रदाय खड़ा होता है, उसके बाद वे अपना परचम फहराने के लिए स्मारक खड़े करने लगते हैं। क्या उक्त तथ्य सत्य है? या उपस्थिति ज्यादा होने से स्थान हाऊस फुल हो जाते हैं, उसके कारण दूसरे स्थान खड़े करने पड़ रहे हैं? हाऊस फुल होने की बात तर्कसंगत नहीं है। हाऊस फुल होते भी हैं तो कभी-कभी। रोजमर्रा की हालत तो यह होगी कि 5-10 आदमी मिलने भी मुश्किल हो जाते हैं? धर्म स्थान तो खड़े कर लिये जाते हैं किन्तु धर्म करने वालों के ठिकाने ही नहीं मिलते। ऐसी स्थिति में हाऊस फुल होने के तर्क का कोई महत्त्व नहीं है। वस्तुतः ऐसे धर्म स्थान मूँछ के बाल बनकर खड़े होते हैं। जैसे मृत व्यक्ति के स्थान पर बुत बनाए जाते हैं, वैसे ही ये जीवित अहंकार के बुत हैं।

होता प्रायः यह है कि पूर्व से जो स्थानक आदि होते हैं उनके पदाधिकारी जब अन्य सम्प्रदाय के संत-सती वर्ग को चातुर्मास हेतु वे स्थान उपलब्ध नहीं होने देते या यों कहें कि स्थान खाली रहे तब भी अन्य सम्प्रदाय के संत-सतीवर्ग का चातुर्मास करवाने को तैयार नहीं होते, तब उस सम्प्रदाय के श्रावकों के दिल पर चोट पड़ती है। वे सोचते हैं कि हमारी मान्यता के साधु-साध्वी वर्ग के चातुर्मास का तो हम लाभ ले ही नहीं पाएँगे। हमें अब यहाँ धर्म-ध्यान नहीं करना। अब नया भवन बनाकर वहीं धर्म-ध्यान करेंगे। बस विचारधारा नये भवन बनाने की दिशा में प्रवाहित हो जाती है। एक दूसरा कारण पूर्व में बने धर्म स्थानकों में जब धर्म क्रियाएँ शुद्ध रूप से सम्पादित नहीं हो पाती, तब भी शुद्ध क्रिया के इच्छुक जन शुद्ध क्रिया करने के लक्ष्य से नये भवन बनाने की दिशा में सक्रिय हो जाया करते हैं। इसमें भी सहअस्तित्त्व एवं सहिष्णुता का अभाव परिलक्षित होता है।

चैत्र कृष्ण 6, मंगलवार, 12 अप्रैल 2016

साभार- आरोह

अहंकार के स्मारक

Pujya Hukmesh

ARRIVAL IN JAWAD

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

After the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the English translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

Continued from 15-16 Sep. 2023.....

Dear children!

This way, Pujya Acharya Dev, with a roar of victory on the battlefield of actions, returned to Jawad. Due to intense penance and advancing age, Pujya Shriji's health was gradually declining. Therefore, the leaders of the Sangh strongly requested him to stay there and take a rest. Upon hearing this, Pujya Shriji, after contemplating, assured them of his presence there for a few days and remained diligently devoted to his spiritual practice.

One day, Pujya Shriji had gone outside for a nature call. At that time, there were other saints who arrived at that place. Among them, a curious saint came where Pujya Shriji was seated. Very enthusiastically, he started asking questions about Pujya Shriji. Upon hearing this, the saints who were present there ignored him and sent him away.

When Pujya Shriji returned back, the other saints informed him that a crazy saint had come there and was inquiring about him. Upon hearing this, Pujya Shriji rebuked them, saying, "Brother! It doesn't look graceful for a saint to use such words. Go and apologize to him (मिच्छामि दुक्कडम्)".

Then, following the instructions of Pujya Shriji, those saints went to meet the inquiring saint. When they conveyed Pujya Shriji's message, a profound and heartfelt reverence for Pujya Shriji was also awakened in the hearts of all those saints.

Such was the greatness of Acharya Shriji's inner and outer pure, holy, and virtuous life. **We are extremely fortunate that our Sangha's first Acharya was such a magnificent soul.**

SANTHARA AND GREAT DEPARTURE

Dear children!

While staying in Jaavad, despite physical weakness, Acharya Hukmesh was in a state of deep meditative contemplation with complete alertness along with dietary abstinence. Every inch of his body was radiating an extraordinary spiritual glow. The divine radiance of his countenance was becoming exceptionally luminous, and the light emanating from his aura was illuminating the surrounding environment.

Pujya Shri Ji, in the pursuit of his disciplined actions, while maintaining perfect vigilance, one day addressed Yuvacharya Shri Shivlal Ji and other saints, saying - "I have caused great distress to revered Gurudev and fellow Gurus by strictly adhering to the right code of conduct mentioned in the Aagams. Today, I humbly seek their forgiveness and advise all of you to faithfully observe the same without criticizing or condemning anyone. Furthermore, while maintaining complete discipline, do not allow any deviation in the sacred path of saints."

He continued, "Yuvacharya Shri Ji, I urge you to be a collaborator in everyone's discipline, without compromising on impartial principles and avoiding compromises. In this transient life, one cannot be certain of anything, so if I have hurt anyone's feelings, I sincerely apologize. Moreover, I now wish that Yuvacharya Shri ji listens to my Aalochana (confession) and offers atonement for my sins followed by purification and gives me final Santhara."

Upon hearing this, everyone began to wonder, "What is happening? Acharya Shri Ji appears perfectly healthy, yet he speaks as if he has foreseen his own demise." Contemplating this, and observing Acharya Shri Ji's state of mind, all the saints, apart from Young Acharya Shri, withdrew from the place.

Acharya Shri Ji, with complete vigilance, self-purified himself through introspection and embraced Santhara (the final spiritual journey). As soon as Yuvacharya Shri ji announced the Santhara, people hurriedly arrived at the scene. They were astonished because there were no signs of illness on Acharya Shri Ji's face, yet he had undertaken Santhara with complete discipline.

As the sun started to set, illness grew on him. In the final hours of the night, they were astonished to witness that Acharya Shri Ji's soul had departed from this body and entered the realm beyond. It was the night of Vaishakh Sudi Panchami samvat 1917, on a Tuesday...

At that very moment, the disciples and saints, in unison, conferred the esteemed Acharya position upon Yuvacharya Shri Shivlal Ji M.Sa., and they praised him with proper rituals. Along with this, Acharya Shri Shivlal Ji M.Sa. paid his respects to the earthly body of the departed Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa. with heartfelt salutations.

Continued...

श्रमणोपासक

धर्मदेशना

पर-सुख में अपना सुख

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

किसी समय एक राजा राज्य करता था। उसके पास बहुत से विद्वान् आते रहते थे। वे लोग राजा में जो दुर्गुण देखते उन्हें दूर करने का उपदेश राजा को दिया करते थे। पर राजा किसी की कुछ मानता नहीं था। वह विद्वान् पण्डितों को अपने सुख में विघ्न डालने वाला समझता था। अगर कोई विद्वान् अधिक जोर देकर उपदेश देता तो राजा उसका अपमान करने में भी नहीं चूकता था। इस प्रकार किसी की बात पर कान न देने के कारण राजा के दुर्व्यसन बढ़ते गए।

> “
> मित्रो! दूसरे के सुख में अपना सुख मानने वाले का प्रभाव कैसा होता है, यह इस कहानी से समझो। वास्तव में वही सच्चे सुख का अधिकारी होता है, जो दूसरे के सुख को ही अपना सुख मानता है।

एक रोज राजा अपने साथियों के साथ घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने के लिए जंगल में गया। वहाँ अपना शिकार हाथ से जाते देख उसने शिकार का पीछा किया और बहुत दूर जा पहुँचा। साथी बिछड़ गए, पर शिकार हाथ नहीं लगा।

मनुष्य भले ही अपना कुव्यसन न छोड़े मगर प्रकृति उसे चेतावनी जरूर देती रहती है। यही बात यहाँ हुई। बहुत दूर चले जाने पर राजा रास्ता भूल गया। वह बुरी तरह थक गया। विश्राम के लिए किसी पेड़ के नीचे ठहरा। इतने में जबरदस्त आंधी के साथ वर्षा होने लगी। थोड़ी ही देर में बिजली चमकने लगी। मेघ घोर गर्जना करके मूसलाधार पानी बरसाने लगे और ओलों की बौछार होने लगी। राजा बड़ी विपदा में फँस गया। उसने इसी जंगल में न जाने कितने निरपराध पशुओं को अपनी गोलियों का निशाना बनाया था। आज वह स्वयं प्रकृति की गोलियों (ओलों) का निशाना बना हुआ था। राजा ओलों से बचने के लिए वृक्ष के तने में घुस रहा था, पर वृक्ष ओलों से उसकी रक्षा न कर सका। राजा का घोड़ा थका हुआ तो था ही, ऊपर से ओलों की मार से वह और हाँफ गया और अंत में उसने भी राजा का साथ छोड़ दिया। अब राजा को एक भी सहायक नजर नहीं आ रहा था। उसके महलों में सैंकड़ों दास और दासियों का जमघट था, मगर आज मुसीबत के समय कोई खोज-खबर लेने वाला भी नहीं था।

विपत्ति हमेशा नहीं रहती। कभी न कभी टल जाती है। इस नियम के अनुसार पानी का बरसना, मेघों का गरजना और हवा का चलना बन्द हो गया। धीरे-धीरे बादल भी छँटने लगे। अब राजा के जी में जी आया। उसने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई तो जल ही जल दिखाई दे रहा था, परन्तु दूर नजर दौड़ाने पर अग्नि का कुछ प्रकाश दिखाई दिया।

प्रकाश देखकर राजा के हृदय में तसल्ली बंधी। उसने सोचा- ‘वहाँ कोई मनुष्य अवश्य होगा। वहाँ चलना चाहिए।’ रास्ते में गिरता-सम्हलता हुआ धीरे-धीरे वह अग्नि के प्रकाश की तरफ बढ़ा। वह ज्यों-ज्यों

आगे बढ़ता त्यों-त्यों उसे झोंपड़ी साफ दिखाई देने लगी। राजा झोंपड़ी के द्वार पर जा पहुँचा।

राजा शिकारी के वेष में झोंपड़ी के द्वार पर खड़ा हुआ था। झोंपड़ी में एक किसान रहता था। राजा को देखते ही उसने कहा- 'आओ भाई, अन्दर आओ।' अहा! ऐसी घोर विपदा के समय यह स्नेहपूर्ण सम्बोधन सुनकर राजा को बहुत हर्ष हुआ।

किसान राजा को शिकारी ही समझ रहा था। उसके कपड़े पानी में तर देखकर किसान ने कहा- 'ओह! तू तो पानी से तरबतर हो गया है। आज तुझे बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी।' किसान के सहानुभूति से भरे मीठे शब्द सुनकर राजा गद्‌गद्‌ हो गया। भाटों और चारणों के द्वारा बखान की गई विरुदावली सुनने में और मुसाहिबों के मुजरे में जो आनन्द उसे अनुभव नहीं हुआ होगा, वह अपूर्व आनन्द किसान के इन थोड़े से शब्दों ने प्रदान किया।

किसान ने अपनी पत्नी से कहा- 'देख, इस शिकारी के कपड़े गीले हो गए हैं। इसको कम्बल देकर इसके कपड़े निचोड़कर सूखने के लिए डाल दे।'

किसान की स्त्री कम्बल ले आई। राजा ने बहुत से कीमती दुशाले ओढ़े होंगे, पर इस कम्बल को ओढ़ने में उसे जो आनन्द आया, वह शायद दुशालों से नसीब न हुआ होगा।

आज राजा को यह छोटी-सी झोंपड़ी अपने विशाल राजमहल की अपेक्षा अधिक आनन्ददायिनी प्रतीत हुई। किसान दम्पत्ति की सेवा उसे ईश्वरीय वरदान सी प्रतीत हुई। राजमहलों को अपना मानकर वह गर्व से इतराता था। जिस वैभव पर फूला नहीं समाता था, आज वह सब उसे तुच्छ प्रतीत हो रहा था।

राजा ने जब कम्बल ओढ़ ली तब किसान ने घास के बिछौने की ओर इशारा करके कहा- 'तू बहुत थका हुआ मालूम होता है। उसे बिछाकर विश्राम कर ले।'

राजा सो गया और थकावट के कारण उसे गहरी नींद आ गई।

किसान ने अपनी पत्नी से कहा- 'बेचारे की ठण्ड अभी गई नहीं है, जरा आग से तपा दे।' वह फटे-टूटे कम्बल के चीथड़ों का गोटा बनाकर राजा को तपाने लगी। किसान की पत्नी राजा की सेवा अपने पुत्र के समान विशुद्ध भावों से कर रही थी। सरल हृदय किसान-पत्नी के हृदय में वही वात्सल्य था, जो अपने बेटे के लिए होता है और किसान राजा के कपड़े हिला-हिलाकर अग्नि के ताप से सुखाने में लगा हुआ था।

जब राजा अंगड़ाई लेता हुआ उठा तो किसान ने कहा- 'अरे, अब तो तू अच्छा दिखाई देता है। अब तेरा चेहरा भी पहले से अच्छा मालूम होता है। पर यह तो बता कि तू घर से निकला कब था?'

राजा- 'सुबह।'

किसान- 'तब तो तुझे भूख लगी होगी।' अपनी पत्नी की तरफ देखकर किसान बोला- 'जा, इसके लिए रोटी और डूंगरी पालक की तरकारी ले आ।'

राजा मोटी रोटी जंगली तरकारी के साथ खाने बैठा। उसने अपने ससुराल में बड़ी मनुहार से अच्छे-अच्छे पकवान खाए होंगे, पर कहाँ वे पकवान और कहाँ आज की यह मोटी रोटी! उन पकवानों में जड़ का माधुर्य था और इस मोटी रोटी में किसान दम्पत्ति के हृदय की मधुरता! उन पकवानों को भोगने वाला था राजा और इस

रोटी को खाने वाला था साधारण मानव! राजा ने इस भोजन में जो नि:स्वार्थ भाव पाया वह उन पकवानों में कहाँ?

बहुत रात हो गई थी। किसान दम्पत्ति और उसके बाल-बच्चे सो गए। राजा भी उसी झोंपड़ी में सो गया। मगर राजा को नींद नहीं आ रही थी। मन ही मन वह किसान की सेवा पर मुग्ध हो रहा था। पण्डितों के उपदेश ने उसके हृदय पर जो प्रभाव नहीं डाला, वह प्रभाव किसान की सेवा ने डाल दिया। एक ही रात में उसका सारा जीवन पलट गया। अब तक वह केवल राजा था, लेकिन आज किसान ने उसे इंसान बना दिया।

प्रात:काल राजा ने अपने कपड़े पहने और किसान से जाने की आज्ञा मांगी। किसान को क्या पता था कि जिसके नाम मात्र से बड़े-बड़ों का कलेजा काँप उठता था, वे महाराजाधिराज ये ही हैं। किसान ने कहा- 'अच्छा भाई जाओ। यह झोंपड़ी तेरी ही है। फिर कभी आना।' इस आत्मीयता ने राजा के दिल में हलचल मचा दी। वह किसान के पैरों में गिर पड़ा। किसान को अपना गुरु मान वह वहाँ से चल दिया।

राजा अपने महल में पहुँचा। राजा के पहुँचते ही मातहतों ने मुजरा किया, रानियों ने आदर-सत्कार कर कुशलक्षेम पूछी, पर राजा को यह सब शिष्टाचार फीका मालूम हुआ। राजा के दिल में किसान की सेवापरायणता, किसान-पत्नी की सरलता और उन दोनों की सादगी एवं अतिथि-वत्सलता ने घर कर लिया था। वह उसे भूल नहीं सका। बार-बार वो सब याद करके वह प्रफुल्लित हो जाता था।

विद्वानों ने उसे बहुतेरे उपदेश दिए थे, पर उनका कुछ भी असर नहीं हुआ था। किसान की सरल और नि:स्वार्थ सेवा ने राजा पर ऐसा जादू डाला कि उसका सारा जीवनक्रम ही बदल गया। राज्य में त्रुटियाँ थीं, उसने उन्हें दूर कर दिया और अपने तमाम दुर्व्यसनों को तिलांजलि दे दी।

एक गरीब की प्रेमपूर्ण सेवा ने सारे राज्य को सुधार दिया। राजा उस किसान को अपना आदर्श और महापुरुष मानने लगा। जब भी उसे किसान का स्मरण आता, तभी वह किसान के चरणों में अपना सिर झुका देता।

जो कार्य बड़े-बड़े ज्ञानी नहीं कर पाए वो कार्य एक साधारण किसान ने कर दिया।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-18 (उदाहरण माला भाग-3)

श्रमणोपासक

बाजार में वही सिक्का चलता है, जिसके दोनों ओर छाप हो। एक तरफ छाप वाला सिक्का चल नहीं पाता। नोट, जिस पर रिजर्व बैंक की छाप लग गई हो, वह कागज यदि सौ रुपये का नोट है तो उसकी कीमत सौ रुपये बन गई। पर उसकी ही सानी का अन्य कागज लेकर बाजार में जायें तो बाजार में उसकी कोई कीमत नहीं मिलती। कीमत कागज की नहीं, छाप की होती है। छाप के आधार पर यदि वह सौ का है तो सौ की और पांच सौ का है तो पांच सौ की उसकी कीमत होती है। वैसे ही सम्यक्-दर्शन अपने-आप में छाप है, उसके दोनों तरफ संवेग और निर्वेद दोनों की छाप हैं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धर्मदेशना

सत्संग है सत्य का पोषक

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी...

आचार्यश्री फरमाते थे कि प्राय: सर्वत्र सत्संग के विषय में चर्चा होती है। जहाँ भी धार्मिक वातावरण बनता है, वहां सत्संग की बात होती है। सत्संग का अर्थ है सन्तों के पास जाना, उनकी वाणी सुनना, उनके पास बैठकर ज्ञानचर्चा करना और जीवन को नये आचरण में ढालने का संकल्प लेना। इतना ही नहीं, सत्संग की महिमा बताते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि पतित पावन सन्तों का सत्संग करने से करोड़ों भवों के पाप नष्ट हो जाते हैं। लेकिन क्या दिन-रात पाप करते रहो और कभी आध-पाव घड़ी के लिए सत्संग कर लो, तब भी सारे पाप नष्ट हो जाएंगे? ऐसा सोचना उचित नहीं है। जब कोई श्रोता सन्तों के पास बैठता है, उनके प्रवचन सुनता है और सोचता है कि सन्तों की वाणी मेरे अनुकूल लग रही है या नहीं और अगर वह वाणी प्रतिकूल लग रही हो तो उसे ठुकरा दूँ! श्रोता ऐसी भावना से सन्तों का सत्संग करता है और उनकी वाणी के विषय में इस तरह से सोचता है तो वह सत्संग का सही लाभ नहीं उठा सकता है।

यदि सन्तों के आध्यात्मिक चिन्तन को गहराई से समझो और उसे अपने अनुकूल मानकर तदनुसार अपने जीवन में संशोधन लाने का निश्चय करो, तभी वह सत्संग जीवन की उन्नति के लिए लाभदायक हो सकता है। सत्संग में दर्शन, श्रवण और चिन्तन का क्रम चलना चाहिए, जिससे अपने विचारों के ऊपर उठते रहने का अवसर मिले।

सत्संग के अनुरूप आप बनें

इस संसार में सामान्य रूप से मनुष्य मोहमाया के जाल में पड़ा रहता है। यह अवश्य है कि ऐसी आसक्तिपूर्ण अवस्था में भी उसके मन में कभी-कभी सत्य की आवाज उठती है जो उसे उस जाल से बाहर निकलकर अपनी अन्तरात्मा को देखने का आग्रह करती है, परन्तु वह उसे कई बार अनसुनी कर देता है, ठुकरा कर उसे भूल जाता है। इस प्रकार की मनोदशा में यदि उसे सत्संग का अवसर मिलता है तो उसकी आत्मा की आवाज को कुछ-कुछ बल मिल सकता है और धीरे-धीरे उस में मजबूती आ सकती है।

चिन्तन मन पर निर्भर करता है और चिन्तन के क्षणों में नानाविध विचार उसके दिल-दिमाग में उठते रहते हैं। वे विचार सही ही हों, यह जरूरी नहीं और यह भी जरूरी नहीं कि वे गलत ही हों। वे विचार सभी प्रकार के होते हैं। वे विचार विकारों की तरफ भी दौड़ते हैं तो बीच-बीच में विकारों से ऊपर उठने की चेतना भी जागती है। उसके दिल-दिमाग में कुछ ऐसा असन्तुलन समा जाता है कि वह अपनी वैचारिकता के बारे में कुछ भी निर्णय नहीं ले सकता है। वह अपने आपको कोई भी योग्य निर्णय लेने में असमर्थ पाता है। ऐसे लोगों में विरले ही होते हैं जो यह समझ सकें कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ, वह सही है या गलत। सामान्य लोग, सामान्य विचारों के घेरों तक ही सीमित रहते हैं, जब तक कि सत्संग के प्रभाव से उनके ज्ञान और आचरण में आवश्यक परिवर्तन नहीं आ जाते हैं।

ऐसे सामान्य लोग जब सन्तों के सत्संग में जाते हैं तो कई तरह की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं। कई तो यह सोचते हैं कि हमारे विचार ही सही हैं और अगर सन्तों की वाणी उन विचारों के अनुकूल नहीं लगती है तो वे उस सत्संग से दूर हो जाते हैं। कई यह सोचकर सत्संग में पहुँचते हैं कि मुझे वहाँ अपनी इच्छित भौतिक समृद्धि पाने का कोई सफल उपाय मिल जाए। यही नहीं, कई तरह की भावनाएँ और कामनाएँ लेकर लोग सन्तों के सत्संग में पहुँचते हैं। तो क्या अपनी कामनाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति का ही साधन होता है सत्संग? आप चाहोगे कि सत्संग आपकी अनुकूलता के अनुसार चले और आपकी इच्छाओं की पूर्ति करे, क्या सत्संग की यह महिमा होगी? यह मन:स्थिति विचारणीय है।

? क्या अपनी कामनाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति का ही साधन होता है सत्संग?

ध्यान रखिए कि अपने स्वार्थों की पूर्ति के उद्देश्य से कोई कितना ही समय सन्तों के समागम में व्यतीत कर ले या उनकी वाणी भी घंटों सुन ले, लेकिन उसके विकारपूर्ण जीवन में किसी परिवर्तन की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

सही स्थिति तो यह होती है कि सन्तों के सत्संग में पहुंचने वालों को वहाँ के वातावरण के अनुरूप अपने आपको बदलना और ढालना चाहिए। ऐसा क्यों? इस पर विचार करने के पहले सोचिए कि कोई सन्तों के सत्संग में जाना क्यों चाहता है अथवा जाता क्यों है? क्या वह अपने को पूर्ण पुरुष मानकर वहाँ जाता है कि वहाँ जाकर वह सन्तों को मार्ग दिखाएगा? ऐसा तो शायद आप नहीं मानेंगे। सन्तों के सत्संग में जाने वाले की यह भावना तो अवश्य रहती होगी कि मैं विकारी व्यक्ति हूँ और सन्त पवित्रात्मा हैं सो वहाँ जाने से मेरा कुछ-न-कुछ भला ही होगा। तात्पर्य कि वह सन्तों के प्रति श्रद्धा लेकर ही सत्संग में जाता है।

तो वह सन्तों को अपना मार्गदर्शक मानता है। ऐसी स्थिति में उसे क्या करना चाहिए वहाँ जाकर? अपनी मनमानी करनी चाहिए अथवा सन्त जैसा निर्देश दें उसका हृदय से पालन करना चाहिए? मार्गदर्शन लेने जा रहे हैं तो उनका मार्गदर्शन लेना ही चाहिए यानी कि आप अपने व्यवहार और अपनी निष्ठा को सन्तों के सत्संग के अनुकूल बनाएँ, इसे आपको अपना प्रथम कर्त्तव्य मानना चाहिए। ऐसा मानकर सत्संग में सम्मिलित होंगे तो आत्मसुधार की दृष्टि से आप उस सत्संग से पूरा-पूरा लाभ भी उठा सकेंगे।

आत्मा को जागृत करे वह सत्संग

जो अपनी आत्मा को जगाने के लिए तथा अपने विकारी जीवन में उन्नतिकारी परिवर्तन लाने के लिए सन्तों के सत्संग में जाते हैं और वहाँ के अनुरूप अपने व्यवहार को ढालते हैं वे होते हैं सच्चे सत्संगी और सच्चा सत्संग वह जो सोई हुई आत्मा को जागृति का मंत्र सुनाए। सत्संग कोई सांसारिक पदार्थों के लेन-देन का स्थल नहीं होता है। वहाँ के वातावरण में तो भाग लेने वाला आत्माभिमुखी और आत्मानन्दी बनने लगे इसी में सन्तों के सत्संग की सफलता है।

आत्म-जागरण की भावना लेकर ही सन्तों के सत्संग में पहुँचना चाहिए। जिज्ञासु व्यक्ति तब अपने सारे विकारों को त्याग कर शान्तभाव से स्थिरतापूर्वक पूछें कि हमारे जीवन निर्माण के लिए हमको क्या करना चाहिए, इसका मार्गदर्शन दीजिए। वह अपनी पृच्छा में

" सन्तों के सत्संग में जाने वाले की यह भावना तो अवश्य रहती होगी कि मैं विकारी व्यक्ति हूँ और सन्त पवित्रात्मा हैं सो वहाँ जाने से मेरा कुछ-न-कुछ भला ही होगा। तात्पर्य कि वह सन्तों के प्रति श्रद्धा लेकर ही सत्संग में जाता है।

विनय को प्रमुख स्थान दे तथा विवेकपूर्वक व्यवहार करे। सन्तों के सत्संग से ऐसा जिज्ञासु व्यक्ति ही सच्चा ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को विकास के पथ पर अग्रगामी बना सकता है। सत्य का चिन्तन जिसके मन में होता है, वही पुरुष सच्चा सत्संगी बनता है। वह अपनी आत्मा को जगाता ही जगाता है।

~ सत्संग से सत्य का पोषण

कोई भी जिज्ञासु व्यक्ति जब सत्संग के रंग में रंगता जाएगा तो उसी अनुपात से उसकी सत्यनिष्ठा भी सुदृढ़ बनती जाएगी। कवि कहता है कि कमल में जो मकरंद होता है, उसके रस का स्वाद लेने के लिए भँवरा कमल के चारों ओर मंडराता है, लेकिन मेरा मन रूपी भँवरा इस बाहर के मकरंद से सन्तुष्ट नहीं है। वह तो आपके चरण रूपी कमल के गुण रूपी मकरंद का ग्राहक है और मेरा मन तो उसी मकरंद को प्राप्त करके शान्त होगा। वह ऐसा मकरंद है जिसका रसास्वादन कर लेने के बाद न धन-सम्पत्ति की लालसा रहती है और न भौतिक पदार्थों में गहरी आसक्ति। वह ऊँचे से ऊँचे सत्संग का अभिलाषी बना रहता है।

कुछ वर्षों पहले देहली में कुछ सन्त एकत्रित हुए थे। उनकी चाहत थी कि यदि राष्ट्र का कोई बड़ा नेता उनके पास पहुँचे तो अतीव सम्मान की बात होगी। यह बात उन्होंने अपने भक्तों को कह दी तथा तदनुसार प्रयास चालू हो गए। बड़े नेता आ भी गए और सन्तों को भी सन्तोष हो गया। आप जानते हैं कि नेता स्वयं आता है या बुलाया जाता है? सन्तों की चाहत नेता को ज्ञात हो गई थी, इस कारण अपने भाषण में नेता ने कहा पहले के युग में राजा, महाराजा, सम्पत्ति, सम्मान, वैभव आदि ऋषि-मुनियों के पीछे भागते थे और ऋषि मुड़कर देखते नहीं थे, लेकिन आज के युग में विपरीत स्थिति देखने में आ रही है कि सन्त-मुनि लोग नेताओं के पीछे भाग रहे हैं। सोचिए कि ऐसा सन्त जीवन किस प्रकार का होगा?

"जिस सन्त जीवन में सत्य का पोषण देखने को नहीं मिलेगा तो वैसे सन्तों के सत्संग से भी सत्य का पोषण किस विध होगा, यह समझने की बात है।"

जिस सन्त जीवन में सत्य का पोषण देखने को नहीं मिलेगा तो वैसे सन्तों के सत्संग से भी सत्य का पोषण किस विध होगा, यह समझने की बात है। मानना पड़ेगा कि ऐसे सन्त सत्य की वास्तविकता को नहीं समझते हैं। जो सच्चा सन्त होता है उसे किसी भी नेता, पदधारी, सम्पत्ति या सम्मान के पीछे भागने की जरूरत नहीं होती है। जो स्वयं सन्त होकर भी अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए राजनेताओं की ख्याति के आगे अपने को झुकाता है, तो फिर सत्संग क्या होगा, एक व्यापार ही बन जाएगा। नेताओं को वोट चाहिए और सन्तों को वाहवाही। फिर क्या है दोनों एक-दूसरे से सौदागरी करते रहेंगे। नेता सोचेगा कि मैं सन्तों के पास जाऊँ तो वहाँ बड़ा जनसमुदाय मिलेगा, जिसे वह राजनीतिक रूप में अपने समर्थन में तैयार कर सकेगा ताकि चुनाव में एक समुदाय के लोगों के थोक में वोट मिल सकें। सन्त सोचेगा कि ख्याति प्राप्त नेता उसके प्रवचन में आएगा तो उसके प्रभाव को भी चार चांद लग जाएंगे। किन्तु दोनों के मन में सत्य के रसास्वादन की चाह नहीं होती है, जिसके बिना सत्संग का कोई मूल्य नहीं।

सत्संग से सत्य का ऐसा पोषण होना चाहिए कि जीवन की कैसी भी विकट परिस्थिति में सत्य का मार्ग न छूट सके। यह तभी हो सकता है जब सन्त भी पूर्णतया

सत्यानुगामी हो तथा जिज्ञासु व्यक्ति भी हृदय से सत्यनिष्ठ। ऐसा होने पर ही सत्संग के लिए प्रेरक वातावरण बनता है तथा सत्संग से जिज्ञासु व्यक्ति सन्तोषजनक रीति से लाभान्वित होते हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र का विकास करके आत्मा को सर्वतोमुखी जागृत बनाया जाए, यही सत्संग का मुख्य लक्ष्य माना जाना चाहिए।

~ सत्यवादी सत्संगी पर सबका विश्वास होता है

सन्तों के समागम में रहकर जो सत्य एवं सत्संग से घनिष्ठता साध लेता है, उसकी बात पर सभी लोग हृदयपूर्वक विश्वास करते हैं। सभी लोगों में शासक वर्ग के लोग और यहाँ तक कि उसके शत्रुओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

एक किस्सा है कि ऐसा ही एक व्रतधारी श्रावक था, जो सत्यवादी था। उसके एक पुत्र था। वह बड़ा होने पर उद्दंड हो गया और अपने पिता की आज्ञा के विपरीत चलने लगा। वह कहता था कि आपकी सत्यवादिता मुझे पसन्द नहीं है, मैं तो वही करूंगा जो करने को मेरा मन चाहेगा। इस तरह वह कुसंगति में पड़ गया और धीरे-धीरे चोर, लुटेरा और डकैत बन गया। पुलिस काफी कोशिश करके भी उसको पकड़ नहीं सकी। एक रात बहुत बड़ा डाका पड़ा। पुलिस को शक हुआ कि उसमें उस लड़के का हाथ हो सकता है। वह बुलवाया गया और उससे पूछताछ शुरू हुई। पूछा गया डाका पड़ा उस रात तुम कहाँ थे? वह लड़का धड़ाक से बोला मैं तो उस रात अपने बंगले में था। उसने झूठे गवाह खड़े करके राजा को भी बरगलाना चाहा तथा पुलिस को भी चकमा देने की कोशिश की। राजा ने फिर एक रास्ता निकाला। उसने सुझाव दिया कि इस लड़के का पिता पक्का सत्यवादी है। वह कभी भी, किसी भी हालत में झूठ नहीं बोलेगा, इस तथ्य की सही जानकारी के लिए उसके बयान ले लिए जाएँ।

सत्यवादी की विश्वसनीयता ऐसी होती है कि शासक भी उसकी बात का विश्वास करने को तैयार था, जिसके स्वयं के पुत्र के ही अपराध का मामला था। सामान्य रूप से यही सोचा जाता है कि कैसा भी पुत्र हो किन्तु पिता उसको बचाना चाहेगा। किन्तु एक सत्यवादी पिता का सुप्रभाव अलग ही होता है। राजा ने लड़के को कह दिया कि तुम्हारे पिता के बयान के मुताबिक तुम्हारा फैसला कर दिया जाएगा। यदि आरोप सिद्ध होता है तो तुम्हें फाँसी पर चढ़ा दिया जाएगा। पुत्र घर आकर पिता के सामने बुरी तरह से गिड़गिड़ाने लगा कि वे किसी भी तरह उसे फाँसी पर चढ़ने से बचा लें। पिता ने यही उत्तर दिया कि कुसंगति में पड़कर तूने मेरी बात नहीं मानी फिर भी तू पुत्र है और मुझे बहुत प्यारा है किन्तु यह भी ध्यान में रख लेना कि सत्य मुझे प्राणों से भी प्यारा है।

बयान के लिए बुलावे पर पिता राजा के पास पहुँचे। राजा ने पूछा डाका पड़ा उस रात आपका पुत्र कहाँ था? श्रावक ने स्पष्ट कहा राजन्! मैं सत्य और विश्वास के साथ कहता हूँ कि उस रात मेरा पुत्र मेरे बंगले में नहीं था। राजा ने स्पष्ट बयान पर उस लड़के के लिए फाँसी का फैसला सुना दिया। दूसरी ओर उसने श्रावकजी से कहा मुझे गौरव है कि मेरे नगर में ऐसे सत्यवादी भी हैं जो पुत्र मोह से भी ऊपर सत्य को स्थान देते हैं। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? श्रावकजी अपने पुत्र के पास गये और कहने लगे यदि अब भी अपनी अपराध वृत्ति छोड़कर सत्य की शरण में आ सकता है तो तेरी जान बचाई जा सकती है। पुत्र ने जब वैसी प्रतिज्ञा कर ली तो श्रावक जी ने राजा को उत्तर दिया आपका धर्म है कि आप अनीति का प्रतिकार करें, किन्तु अपराधी को कड़े से कड़ा दंड देने से ही अनीति को रोक नहीं सकते हैं। उसके लिए उसके हृदय को परिवर्तित करना होता है। मेरे पुत्र ने श्रेष्ठ परिवर्तन को स्वीकार कर लिया है। मेरा निवेदन है कि आप उसे अभयदान दे दें। इस पर राजा एकदम तैयार हो गया और श्रावक जी का पुत्र दंडमुक्त कर दिया गया।

साभार- नानेशवाणी-50 (आध्यात्म का कुआँ) श्रमणोपासक

धर्मदेशना

निकेय का विवेक

-परम पूज्य आचार्य-प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

सुमति चरणकज आतम अर्पणा,
दर्पण जेम अविकार सुज्ञानी।
मति तर्पण बहु सम्मत जाणिये,
परिसर्पण सुविचार सुज्ञानी।।

प्रार्थना की उपर्युक्त पंक्तियों में चैतन्य आत्मा को 'सुज्ञानी' शब्द से संबोधित किया गया है। जब तक आत्मा सुज्ञानी नहीं होगी अर्थात् उसमें विवेक प्रज्ञा जागृत नहीं होगी, वह अपने हिताहित का निर्णय करने में सक्षम नहीं होगी। वैसे कहा जा सकता है कि सामान्य व्यक्ति और यहाँ तक कि पशु भी हिताहित का विवेक रखते हैं। पशु जगत के प्राणी वर्षा, गर्मी, शीत आदि से सुरक्षा का ध्यान रखकर ही उसी अनुरूप अपने घोंसले, बिल आदि स्थान बनाते हैं। किसी रूप में पशु-पक्षी आदि अपने हितबोध की दृष्टि से मनुष्यों से अधिक जागरूक होते हैं। यह हितबोध उन्हें प्रकृति प्रदत्त होता है। पर 'सुज्ञानी' से जहाँ तक ज्ञानीजनों का संबंध है वहाँ यथार्थ हिताहित का संबंध आत्मा से जुड़ा माना जाता है। जिसमें आत्मा का हित निहित हो, वही श्रेय है, श्रेयस्कर है। जिस अवस्था में आत्महित नहीं हो, वह यथार्थ में अहित है। हिताहित का स्वरूप तभी माना जा सकता है जब हिताहित करने वाले (कर्ता) को जान लिया जाए। यदि उसे नहीं जाना गया तो हिताहित का सम्यक् ज्ञान नहीं हो सकता और जब आत्मा का परमात्म-चरण में समर्पण होता है तब आत्मा व परमात्मा दोनों का स्वरूप जानना होता है। जिसने आत्मा को जान लिया, उसने परमात्मा को जान लिया। कहा भी है- **'अप्पा सो परमप्पा'** अर्थात् जो आत्मा है, वही परमात्मा है। सिद्ध के स्वरूप और आत्मा के बीच कोई भेद-रेखा नहीं है-

सिद्धां जैसो जीव है, जीव ही सिद्ध होय।
कर्म मैल का आंतरा, बूझे विरला कोय।।

प्रत्येक जीव में सिद्धत्व-भाव रहा हुआ है। हो सकता है कि वह अभी तिरोहित हो, प्रकट नहीं हो। एक व्यक्ति जिसने घर की समस्त वस्तुओं का ज्ञान कर लिया है, वह दुनिया की सम्पूर्ण वस्तुओं को जान सकता है। यदि घर के पदार्थों का ही ज्ञान नहीं है तो वह विश्व को नहीं जान पाएगा। इसी प्रकार समाधि की चर्चा मात्र से समाधि को प्राप्त नहीं किया जा सकता। समाधि को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित हिताहित, कारण आदि का बोध होना भी आवश्यक है। इस दृष्टि से प्रभु ने तीन सूत्र बताए हैं- **आहार, सहाय और निकेय**। आहार का विवेक इसलिए आवश्यक है कि साधना का साधनभूत

शरीर आहार से संचालित होता है। आहार सात्विक, तामसिक, राजसिक जैसा भी होगा वैसे ही गुण व भाव पैदा होंगे। सहाय अर्थात् संगति का प्रभाव भी व्यक्ति पर पड़ता है। अब निकेय का विवेक भी जान लें। निकेय अर्थात् स्थान (मकान)। प्रश्न होता है कि जब समाधि का संबंध आत्मा से है फिर स्थान बीच में कहाँ आता है, जो उसका विवेक किया जाए? साधक की विवेक-प्रज्ञा जहाँ जागृत रहे वह ही योग्य स्थान है, परन्तु बात बिलकुल ऐसी नहीं है। इसे एक पौराणिक आख्यान के आधार पर समझने का प्रयास करें। श्रवणकुमार माता-पिता को काँवड़ में लेकर तीर्थाटन हेतु जा रहा था। ज्योंही वह कुरुक्षेत्र में पहुँचा उसमें हीन विचार पैदा होने लगे। उसने काँवड़ उतार दी और कहने लगा- 'आखिर मैं कब तक ढोता रहूँगा? पता नहीं कब तीर्थयात्रा पूरी होगी?' हालाँकि श्रवणकुमार श्रद्धाभाव से माता-पिता की सेवा में तत्पर रहने वाला पुत्र था, पर इन विचारों का कारण वह स्थान था जहाँ वह उस समय पहुँचा था। माता-पिता तुरन्त स्थान का रहस्य समझ गए और बोले- 'पुत्र, तुम जब इतना उठा लाए हो तो बस अब तो थोड़ा ही क्षेत्र रह गया है। हमें थोड़ा आगे और ले चलो।' बेमन से भी माता-पिता की आज्ञा मानकर श्रवणकुमार उन्हें थोड़ा और आगे ले गया तब तक कुप्रभाव का वह क्षेत्र पार हो चुका था। पार होते ही श्रवण कुमार का चिन्तन बदल गया और वह पूर्ववत् आज्ञाकारी समर्पित पुत्र बन गया। इस प्रकार प्रमाणित होता है कि स्थान का प्रभाव मानस पर पड़ता है। यह बात अलग है कि पूर्ण सजग साधक अप्रभावित भी रह जाए, पर थोड़ी-बहुत सफलता भी जिसने प्राप्त की है, उसे साधना के क्षणों में स्थान का ध्यान रखना होगा।

सामायिक के लिए चार प्रकार की शुद्धि की जो अपेक्षा की गई है, उनमें स्थान शुद्धि भी है। इस प्रकार द्रव्य से पोशाक अनुकूल हो, क्षेत्र से समतल जगह हो, जिससे साधक आसानी से बैठकर समभाव की साधना कर लें। क्योंकि यदि जगह ऊबड़-खाबड़ है तो वह लम्बे समय तक बैठ नहीं पाएगा। कुछ मिनटों में ही बेचैनी होने लगेगी। यदि उसके आस-पास गड्ढे हैं और वह बैठ भी गया तो भय बना रहेगा कि कहीं उसे झपकी न आ जाए और वह गिर न पड़े। वे गड्ढे मस्तिष्क में चक्कर काटते रहेंगे। साथ ही वहाँ जीवोत्पत्ति न हो। साँप, बिच्छू का यदि वहाँ उपद्रव है तो वह ध्यान में स्थिर नहीं रह पाएगा। किसी भी वस्तु का स्पर्श हुआ तो वह भय से चौंक जाएगा। काल की अपेक्षा जो समय सामायिक में लग रहा है वह काल सामायिक है। भाव से मन अशान्त न हो। प्रसंग है क्षेत्र का, निकेय का, उसमें साधुओं की दृष्टि से कहा गया है कि साधु के स्थान पर विजातीय (स्त्री) का रात्रि और विकाल में प्रवेश निषिद्ध है। शास्त्रों में कहा गया है कि रात्रि में वह उनसे चर्चा-वार्ता भी न करें। साधु, बहिनों से एवं साध्वी, भाइयों से यदि विशेष आवश्यक हुआ तो सिर्फ 5 प्रश्न कर सकते हैं, पर वे भी ज्ञानचर्चा के नहीं, मात्र जानकारी के लिए। मान लीजिए कि उपाश्रय का द्वार खुला हुआ है और किसी अनजान ने आकर पूछा-

(1) भीतर कौन है? उत्तर- हम संत हैं।
(2) किस सम्प्रदाय के हैं? उत्तर- अमुक सम्प्रदाय (नाम) के।
(3) कब तक विराजेंगे? उत्तर- जैसा भी विराजने का प्रसंग होगा।
(4) कल व्याख्यान होगा? उत्तर- यदि अवसर हुआ तो।
(5) विहार कब करेंगे? उत्तर- यथासमय आदि...।

ज्यादा चर्चा-वार्ता नहीं करें। यदि संत के रहने के स्थान पर कोई भाई भी सेवा में है या आया हुआ है तो वह संत से पूछकर उक्त जवाब दे दे। संत उत्तर न दें। यदि रात्रि में मंगल पाठ सुनाने को कहें और सिर्फ स्त्रियाँ ही हों तो साधु नहीं सुनाएँ। यदि भाई भी साथ में हों और वे सुनना चाहते हों तो साथ में बहिनें भी सुन सकती हैं। ये संक्षिप्त प्रश्नोत्तर एवं मंगलपाठ भी उपाश्रय के बाहर खड़े रहकर ही हो सकते हैं। संत-स्थल पर स्त्री एवं साध्वी-

स्थल पर पुरुष भीतर प्रवेश करके प्रश्नोत्तर आदि नहीं कर सकते। यदि अन्य चर्चा की जाती है तो निशीथ सूत्र में उसे प्रायश्चित्त का अधिकारी कहा गया है। इन सभी बातों का ज्ञान यदि श्रावक को भी है तो दोनों की समाधि की साधना हो सकती है। साधु की नियम-सुरक्षा में श्रावक सहभागी होता है।

श्रावक को शास्त्रों में माता, पिता और भाई से उपमित किया गया है। नियम जानने पर ही वह सहायक हो सकता है। दिन में भी यदि हजार स्त्रियाँ हों तो भी एक समझदार भाई की साक्षी बिना साधु व्याख्यान नहीं दे सकता या बैठने की इजाजत नहीं दे सकता। समझदार भाई से मतलब है जो आँखों से देखता है, कानों से सुनता है और उनके हाव-भाव समझता है। भिक्षाचर्या के लिए भी साधु यदि गृहस्थ के घर गया हो और वहाँ अकेली बहिन ही घर पर हो तो साधु तत्काल बाहरआ जाए। ये बातें बहुत सूक्ष्म हैं, पर प्रभु ने समाधि के इच्छुक के लिए इन्हें आवश्यक कहा है।

> क्योंकि कहा है....
> एकान्त पाप का
> बाप होता है।

समाधिवान के लिए स्थान कैसा हो? इसके संबंध में कतिपय अन्य बातें भी हैं। एकान्त स्थान सर्वथा वर्जित है, क्योंकि कहा है- एकान्त पाप का बाप होता है। रथनेमि के साथ ऐसा ही हुआ था। हालाँकि वह चरम शरीरी जीव था, पर एकान्त में राजमती को देखकर भग्न चित्त हो गया। शास्त्रकारों ने कहा है-

जहा बिरालावसहस्स मूले,
न मूसगाणं वसही पसत्था।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे,
न बंभयारिस्स खमो निवासो।।

(उत्तराध्ययन 32/13)

जिस जगह बिल्ली हो, वहाँ चूहा सुरक्षित नहीं रह सकता। चूहा हेकड़ी लगाए भी तो न जाने कब बिल्ली मौसी उसको खा जाए। इसीलिए प्रभु महावीर अपने पुत्र, मित्र और आत्मा के समान साधकों को संबोधित करते हुए कहते हैं- 'हे आत्मीयजनो! इन स्थानों से बचकर चलो।' पुराणों में उल्लेख आता है कि विश्वामित्र जैसे घोर तपस्वी को ज्योंही एकान्त के क्षण मिले, अप्सरा मेनका ने वहाँ पहुँचकर उन्हें तपस्या से च्युत कर दिया। वर्षों का तप और साधना भंग हो गए। समाधि के लिए प्रभु आह्वान कर रहे हैं- **'निकेय मिच्छेज्ज विवेगजोग्गं'** जिस मकान में समाधि रह सकती हो तथा जहाँ विवेक लुप्त न हो, उस स्थान पर रहें। इतना ही नहीं, शास्त्रकारों ने इस स्थिति को अत्यंत गंभीरता से समझा था। शिष्य ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर पूछा- 'गुरुदेव! स्त्री, पशु और नपुंसक युक्त मकान में तो नहीं रहना है, पर यदि गृहस्थ के मकान में स्त्री नहीं हो और वे नये मकान में रह रहे हों किन्तु गृहस्थी का सामान पड़ा हो जिसे लेने स्त्रियाँ आती रहती हों, वहाँ तो रह सकते हैं?' गुरु ने उत्तर दिया- 'वत्स! वहाँ रुकने की मनाही है। मकान में असमय आवागमन होते रहने से समाधि में व्यवधान होगा।' शिष्य ने पुन: प्रश्न किया- 'गुरुदेव! यदि आवागमन का मार्ग घुमावदार होने के कारण उस मकान से ही आना-जाना करे तो?' उसे उत्तर मिला- 'कभी भाई रहे या ना रहे, बार-बार स्त्रियों का आवागमन होने से साधक की समाधि स्थिर नहीं रह पाएगी।' समवायांग सूत्र में 18 स्थान कहे गए हैं और भाव-शुद्धि का दूसरा भेद कि जहाँ क्लेश नहीं हो, वह स्थान योग्य है। गृहस्थ के घर में यदि साधु रहता है तो परिवार में उतार-चढ़ाव आने पर अथवा पिता-पुत्र, माता-पुत्री, सास-बहू में क्लेश हो जाने पर वे साधु से कहेंगे, हमारे झगड़े का निपटारा कर दो, कौन सत्य है? न्याय कर दो। बतलाया जाता है कि दशरथनंदन, मर्यादा पुरुषोत्तम राम जब वनवास में थे तो एक दिन सीता और लक्ष्मण में कुछ बहस हो गई यानी बात ही बात में कोई प्रसंग छिड़ गया। सीता ने कहा, पौष में ठंड अधिक पड़ती है और लक्ष्मण कहते थे कि माघ में अधिक ठण्ड

पड़ती है। दोनों एक-दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं थे। निर्णय के लिए राम के पास पहुँचे। बात सुनकर राम विचारमग्न हो गए कि यदि पौष में अधिक ठण्ड पड़ती है तो लक्ष्मण सोचेगा कि आखिर भैया ने भाभी का ही पक्ष लिया और यदि लक्ष्मण की बात को ठीक कहूँ तो सीता कहेगी कि आखिर भाई का ही पक्ष लिया, मैं तो पराये घर की ठहरी। उस वहम का निराकरण नहीं हो सकेगा, क्लेश की स्थिति निर्मित होगी। अत: मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने चतुराई से उत्तर दिया-

ना सी पोसे, ना सी माघे,
फागणिए सी चौगुणो, जे बासंति वाए।

अर्थात् ठंड न पौष माह में होती है, न माघ माह में किन्तु यदि वायु चलने लग जाए तो फाल्गुन माह में चौगुनी ठंड पड़ने लगती है। खैर, उन्होंने तो अपनी प्रज्ञा से समाधान कर दिया, पर साधु यदि गृहस्थी की इन छोटी-छोटी बातों का ही निर्णय करता रहेगा तो घर वाले सोचेंगे कि साधु की इससे पटती होगी इसलिए इसका पक्ष लिया। साधु पर शंका होगी। ऐसे क्लेशमय वातावरण में रुकना उचित नहीं होगा। जहाँ भाइयों में उस मकान को लेकर विवाद चल रहा है तो वहाँ भी टाल करें। साधु निकेय के विषय में विवेक बरतेगा तो उसके ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना भली-भाँति हो पाएगी नहीं तो व्यवधान पैदा होगा। कषाय का उद्रेक हो गया तो चारित्र में ह्रास की स्थिति बनेगी।

कल्पसूत्र एवं वृहत्कल्प सूत्र आदि में साधु की निकेय विषयक मर्यादाओं की चर्चा है। यदि 13 बोल की योगवाई युक्त क्षेत्र हो तो वहाँ चातुर्मास करे। जिस मकान की छत नीची हो अर्थात् कान तक हो, वहाँ एक या दो दिन भले रह जाएँ, पर चातुर्मास नहीं करें। यदि उठने आदि के प्रसंग में सिर में चोट लग गई तो दर्द की स्थिति में समाधि में न्यूनता होगी। कहा भी है- '**पहला सुख निरोगी काया**'। काया स्वस्थ नहीं तो समाधि में व्यवधान होगा। दोनों हाथ सिर से ऊपर उठाकर जोड़े जाएँ इतनी ऊँचाई हो तो समाधि बरकरार रहेगी। धर्म साधना के लिए शांत स्थान होगा तो साधना अन्तर्मुखी होगी। विरले साधक ही शोरगुल में स्थिर रह सकते हैं। एक प्रसंग है- प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ध्यान साधना में थे। श्रेणिक की सवारी निकली। दो व्यक्तियों के शब्दों से मुनि के विचारों में काल्पनिक युद्ध प्रारंभ हो गया। यद्यपि बाह्यदृष्टि से कोई तीर-कमान या युद्ध सामग्री नहीं थी किन्तु भीतर ही भीतर कल्पना के शस्त्र तैयार हो गए। आप घर पर धर्म आराधना कर लेते हैं, पर जहाँ पारिवारिक वातावरण में बच्चों के झगड़े गृहक्लेश की स्थिति बनती हो वहाँ आपकी साधना शुद्ध कैसे रह पाएगी? धर्म स्थान का शांत वातावरण आपकी समाधि को अविचल रख सकता है। इसीलिए संत आपसे धर्म स्थान में साधना का आग्रह करते हैं। द्रव्य, क्षेत्र, भाव के साथ काल की भी शुद्धि **'काले कालं समायरे'** का ध्यान रखते हुए अपनी समीक्षण प्रज्ञा और विवेक प्रज्ञा को जागृत रखकर साधना में दत्तचित्त बनें। आहार, सहाय और निकेय के इन सूत्रों की अनुप्रेक्षा करें। यद्यपि अन्य सूत्र भी समाधि के संदर्भ में सहायक हैं तथापि इस गाथा के द्वारा जो सांकेतित हैं और इसमें जो सूत्र गर्भित हैं उन पर आचरण करते हुए समाधि भाव को प्राप्त करें तो मंगलमय अवस्था प्राप्त हो पाएगी।

साभार- श्री रामउवाच-1 (आणाए मामगं धम्मं) श्रमणोपासक

अपने-अपने स्थान पर सब नय महत्वपूर्ण हैं। एकान्तवादी बनकर किसी मत को पकड़ना वस्तुत: प्रभु के दर्शन में सहायक नहीं होगा। सातों नयों को साथ लेकर चलना चाहिए और अपेक्षादृष्टि से ही वस्तु का प्रतिपादन होता है। जब वस्तु के समग्र रूप को मुख्य करके वर्णन किया जाएगा उस समय पर्याय दृष्टि गौण होगी और जिस समय पर्याय दृष्टि का वर्णन किया जाएगा उस समय समग्र वस्तुदृष्टि गौण होगी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालाल जी म.सा.

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिए

मधुर वचन

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

15-16 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

4 बात-बात में टोकना

★ "बहुयं मा य आलवे"
'बहुत नहीं बोलना चाहिए' (श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1/10)

★ कुछ लोगों को बात-बात में टोकने की आदत होती है। छोटी सी बात भी हो, पर बिना बोले इनका मन ही नहीं लगता। इस आदत वाले लोगों की सबसे बड़ी खासियत होती है कि ये गलत करने पर तो टोकते ही हैं, सही करने पर भी टोकते हैं।

(A) एक परिवार में बहू लेट उठती तो टोकना - 'अरे ये कोई तरीका है, इतना लेट उठती हो।'
जल्दी उठने लग गई तो - 'इतनी जल्दी उठ जाती हो। काम क्या है सुबह-सुबह।'
जल्दी सोए तो - 'अरे ये कोई बात हुई, इतनी जल्दी सो जाती हो। इतनी जल्दी कोई सोता है क्या?'
लेट सोने लगी तो - 'कितना लेट सोती हो, सबकी नींद खराब करती हो।'
बाहर घूमने चली गयी तो - 'तुम तो घूमती ही रहती हो, घर पर रहना चाहिए।'
घर पर रहने लगी, सामायिक शुरू कर दी तो - 'तुम तो दिनभर मुँह बांधकर बैठ जाती हो, काम भी तो रहता है।'
सामायिक छोड़ दी, किताबें पढ़ना शुरू कर दिया तो - 'तुम तो दिनभर पढ़ती ही रहती हो, इतना क्या पढ़ना।'
साधारण कपड़े पहन लिए तो - 'कितनी गंदी रहती हो तुम। थोड़ा साफ रहना चाहिए।'
नये, साफ कपड़े पहनने लगी तो- 'इतना टिपटॉप नहीं रहना चाहिए।'

उससे सामने वाला कन्फ्यूज हो जाता है कि ये भी नहीं करना चाहिए, वो भी नहीं करना चाहिए, तो आखिर करना क्या चाहिए?

Note - आप इतना टोकेंगे तो कहीं आपके शब्दों की Value (वेल्यू) ही खत्म न हो जाए?

सही तरीका - हर पॉइन्ट पर अपनी राय देना जरूरी नहीं है। जितना आवश्यक हो, उतना ही बोलना चाहिए और इतना अच्छा बोलना चाहिए कि कोई सुनने के लिए खड़ा हो जाए।

(B) स्थानक में कोई व्यक्ति आए तो - 'तुम तो आते ही नहीं हो।'

आने लग जाए, सीखने लग जाए तो - 'तुम तो स्थानक में ही बैठे रहते तो, घर का काम कौन करता है?'

व्याख्यान में नहीं आए तो - 'कभी व्याख्यान में नहीं आते, इतना क्या काम है?'

आ गए तो - 'आज सूरज कहाँ से उगा है?'

2-4 दिन तक लगातार आ गए - 'तुम रोज कैसे आ रहे हो? क्या सीख रहे हो? दीक्षा के भाव हैं क्या?'

सही तरीका - नए व्यक्ति को देखकर भी सहज रहना, उसके पीछे नहीं पड़ना।

Note - कई लोग सुन-सुनकर स्थानक आना छोड़ देते हैं।

(C) इसी प्रकार किसी भी विषय में बार-बार टोकना - यहाँ मत बैठो, ऐसे मत करो, वैसे मत करो... आदि-आदि।

Note - 'दुनिया में कौन क्या कहता है, कौन क्या करता है, कौन क्या सोचता है, इस बुरी लत को छोड़ दें तो हमारा बहुत समय बच जाएगा।'

★ टोकने की आदत वालों को कोई पसंद नहीं करता, न घर पर कोई उनके सामने रहना पसंद करता है, न संघ में। वह लोगों के लिए अरति का कारण बन जाता है। विवेकवान श्रावक इस बात पर निरंतर विचार करे कि 'कहीं मेरी बोली किसी को टोकने जैसी तो नहीं लग रही है ना? कहीं मेरा व्यवहार किसी के लिए अरति का कारण नहीं है न?'

★ कभी-कभी टोकना जरूरी हो जाता है, परंतु तरीका पॉजिटिव होना चाहिए।

Situation : 15 साल का एक लड़का वंदना कर रहा है पर उसकी विधि गलत है -

गलत तरीका (Don't)	**सही तरीका (Do)**
श्रावक 1 : ऐसे कोई वंदना करता है? इतना भी नहीं आता? पाठशाला में क्या सीखते हो? सही तरीका सीख कर आना।	श्रावक 2 : आपने जो वंदना की, उसमें बाकी सब सही है, बस थोड़ी सी Mistake है। मैं आपको बताऊँ? ऐसा कहकर सिखा देना।

★ जो मधुरभाषी होते हैं वे अपनी बात को सकारात्मक तरीके से कहते हैं।

"Kind words are short and easy to speak, but their Echoes are truly Endless"

(Mother Teresa)

-क्रमश: श्रमणोपासक

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

- कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मन:पर्ययज्ञान

प्र. 2390 मन:पर्ययज्ञानी अतीत और अनागत काल कितना जानते हैं?

उत्तर काल की अपेक्षा मन:पर्ययज्ञानी वर्तमान के भावों को देखकर अनुमान लगा लेते हैं कि भूतकाल में असंख्यात वर्ष (पल के असंख्यातवें भाग) पहले कैसे मनोभाव थे और भविष्यकाल में असंख्यात वर्ष बाद कैसे मनोभाव रहेंगे।

प्र. 2391 मन:पर्ययज्ञानी कितने भावों को जानते-देखते हैं?

उत्तर

1. मन:पर्ययज्ञानी अनंत भावों को जानते-देखते हैं और सर्वभावों के अनंतवें भाग को जानते हैं।
2. इस शास्त्रवाणी का यह अर्थ है कि मन:पर्ययज्ञानी द्रव्य मन (मनोवर्गणा के पुद्गल) के अनंत स्कंधों को जानते-देखते हैं किन्तु द्रव्य मन के जितने भाव होते हैं, उनका तो अनंतवाँ भाग ही जानते हैं। केवली भगवान के समान त्रैकालिक अनंत भावों को नहीं जानते-देखते हैं।

प्र. 2392 मन:पर्ययज्ञानी मारणांतिक समुद्घात नहीं करते हैं। प्रमाण लिखिए।

उत्तर

1. श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र के 5वें पद में इनकी अवगाहना त्रिस्थान-पतित बताई है।
2. इनकी गति वैमानिक की है। यदि मारणांतिक समुद्घात करते तो अवगाहना चतु:स्थान पतित होती या
3. जन्म से मन:पर्ययज्ञान होता तो भी अवगाहना चतु:स्थान पतित होती, जो होती नहीं है।

अत: यह सिद्ध होता है कि मन:पर्ययज्ञानी तथास्वभाव से मारणांतिक समुद्घात नहीं करते हैं।

प्र. 2393 मन:पर्ययज्ञानी अनाहारक क्यों नहीं होता है?

उत्तर मन:पर्ययज्ञान न जन्म से होता है और न परभव में साथ जाता है, इसलिए अनाहारक नहीं होता है। मृत्यु के अगले समय इस कर्म का उपशम रुक जाता है। अत: ये ज्ञान परभव में साथ नहीं जाता है।

प्र. 2394 इस पंचम आरे में मन:पर्ययज्ञान का विच्छेद कब हुआ?

उत्तर जम्बूस्वामी के मोक्ष पधारने के बाद मन:पर्ययज्ञान का विच्छेद हो गया।

प्र. 2395 क्या मन:पर्ययज्ञान प्राप्त किये बिना भी जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है?

उत्तर हाँ, अतीत काल में अनंत जीव मन:पर्ययज्ञान प्राप्त किये बिना मोक्ष गये हैं और भविष्यकाल में अनंत जाएंगे।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमश: श्रमणोपासक

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

एकादश अध्ययन : बहुस्सुयपुज्जं

15-16 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण :- तीर्थंकर भगवान, सिद्ध भगवान, आचार्य, समस्त पाँच महाव्रतधारी साधु, जिनका श्रुत (शिक्षा) चारों ओर फैला हुआ है और विशाल है, ऐसे बहुश्रुत की पूजा भावों से अर्थात् गुणगान, बहुमान, आराधना आदि से होती है। प्रस्तुत अध्ययन में भगवान महावीर स्वामी ने सर्वप्रथम बहुश्रुत के आचार का सर्वांगीण परिचय दिया है।

प्रश्न 13. यहाँ सर्वप्रथम मुनि के 'आचार' की महत्त्वता का वर्णन क्यों किया गया है?

उत्तर धर्म श्रवण करने का मूल आधार विनय है। यहाँ 'आचार' से उचित क्रिया में विनय धर्म को ग्रहण किया गया है। विनयवान मुनि ही बहुश्रुतता प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 14. विनय धर्म से रहित मुनि को बहुश्रुत क्यों नहीं कहा जा सकता है?

उत्तर सम्मान आदि की इच्छा करने वाला जीवों की रक्षा नहीं कर पाता है। इस कारण से संयम जीवन में व्रतों में निर्मलता, मन में एकाग्रता नहीं आ पाती। एकाग्रता की अनुपस्थिति में साधक विनयवान नहीं बन सकता। अत: वह बहुश्रुत नहीं कहा जा सकता है। इसके संबंध में सर्वज्ञ ने दूसरी गाथा में इस प्रकार फरमाया है-

जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए।।2।।

भावार्थ- चाहे विद्वान् हो (शास्त्र के अभ्यास से रहित) या अविद्वान् हो (शास्त्र के अभ्यास से युक्त) किन्तु अभिमान करता है, सरस आहार आदि के लिए लुब्ध रहता है, अजितेन्द्रिय है तथा शास्त्र मर्यादा का ध्यान नहीं रखता है। ऐसे विनय धर्म से रहित होकर असम्बद्ध भाषण करने वाला अबहुश्रुत कहलाता है।

1. **अणिग्गहे : अजितेन्द्रिय** - इन्द्रियों के विषयों का निग्रह करने में असमर्थ होता है।
2. **अभिक्खणं : असम्बद्ध** - बीच में बोलता। बार-बार बिना कोई आधार के बोलता रहता है।

प्रश्न 15. कौन से साधक बहुश्रुत की उपमा से उपमित होते हैं?

उत्तर शास्त्रों का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करने से अथवा मुनि धर्म में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् चारित्र रूप धर्म को शिक्षा रूप में ग्रहण करके आचरण में लाने वाले साधक बहुश्रुत की उपमा से उपमित होता है।

प्रश्न 16. किन-किन कारणों से साधक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता है?

उत्तर इसके सम्बन्ध में सर्वज्ञ ने तीसरी गाथा में इस प्रकार फरमाया है-

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थंभा कोहा पमाएणं, रोगेणाऽऽलस्सएण य।।3।।

भावार्थ– इन पाँच स्थानों में शिक्षा प्राप्त करना संभव नहीं होता है–

1. मान, 2. क्रोध, 3. प्रमाद, 4. रोग, 5. आलस्य।

प्रश्न 17. यहाँ 'सिक्खा' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर 'सिक्खा' अर्थात् शिक्षा– यहाँ दो प्रकार की शिक्षा का वर्णन है–

ग्रहण शिक्षा :– गुरु से शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने को ग्रहण शिक्षा कहते हैं एवं

आसेवन शिक्षा :– गुरु के सान्निध्य में रहकर उनके अनुसार आचरण एवं अभ्यास करने को आसेवन शिक्षा कहते हैं। प्रायोगिक अभ्यास (Practical Application) के बिना किसी कार्य में निपुणता नहीं आती।

प्रश्न 18. 'थंभा' शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर **'थंभा'** अर्थात् अभिमान, खंभे के समान अकड़े हुए मानी व्यक्ति को ग्रहण शिक्षा प्राप्त नहीं होती है तो उसे आसेवन शिक्षा कहाँ से प्राप्त होगी? विरले ही मानी व्यक्ति अपने अभिमान को देख पाते हैं। मानी व्यक्ति विनय नहीं कर पाता है, अत: अभिमान शिक्षा प्राप्ति में बाधक होता है।

प्रश्न 19. साधक कैसे पता लगाएँ कि उसके मन-वचन अभिमान युक्त तो नहीं हैं?

उत्तर साधक को हमेशा मान के अलग-अलग रूपों को पहचानने का अभ्यास करना चाहिए। जैसे–

1. **आत्म प्रशंसा करना –** हम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी स्वयं की प्रशंसा कितना करते हैं एवं नहीं पूछने पर भी हम किसी तरह से अपनी उपलब्धियाँ सबको बताते हैं।
2. **पर-निन्दा करना –** यह अहं को साफ-साफ दर्शाता है। दूसरे रूप में यह स्वयं की प्रशंसा ही है। अपने प्रति गर्वान्वित है तभी हम दूसरों के प्रति हीन भावना लाते हैं।
3. **दूसरों के दोषों का चिन्तन करना –** यह अभिमान को पुष्ट करते हैं और दोष को शक्तिशाली बना देते हैं।
4. **हमारी बात नहीं मानने पर खिन्न होना –** जब हमारे अहं को चोट पहुँचती है तब हम नाराज होते हैं। हमारे शब्द इतने बहुमूल्य नहीं होते हैं कि सब उन्हें मान लें। जब कितने ही लोगों ने भगवान महावीर स्वामी की भी बात नहीं मानी तो हम क्या हैं?
5. **प्रशंसकों से प्रेम करना –** जो प्रशंसा करता है, उसी के पास जाना या उसी के लिए कार्य करना हमारे अहं को दर्शाता है। प्रशंसा सुनकर खुशी होती है, आशा बढ़ती है। लेकिन अगर आशा पूरी न हो या प्रशंसा किसी और की हो रही हो तो मन में हर्षित नहीं होता है। इन संकेतों को पहचानें।
6. **उसका ज्यादा ध्यान रखते हैं, मेरा नहीं ऐसा सोचना –** इस प्रकार की अभिवृत्ति अभिमान है। ऐसी भावना राख तुल्य है। ऐसे विचार जीवन में विष घोलकर पूरे जीवन की साधना को हीन बना देते हैं। हम अगर प्रसन्न हैं तो सारी दुनिया आकर भी दु:खी नहीं बना सकती है। हमारी अशान्ति का सबसे बड़ा कारण है तुलनात्मकता।
7. **निन्दक से घृणा करना –** मेरी निन्दा न हो, यह सोचना भी अहं है। वास्तविकता क्या है यह जानकर (उस गलती के बीज को पकड़ना) महत्त्वपूर्ण है।

'किं मे परो पासई, किं च अप्पा'

दूसरे मुझे किस तरह देख रहे हैं या मैं अपनी आत्मा को किस तरह देख रहा हूँ? इन दोनों चिन्तन में बहुत फर्क है।

–क्रमश: श्रमणोपासक

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

15-16 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंदकँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

दृढ़ निश्चय

दृढ़ निश्चय सफलता का प्रधान कारण है। महापुरुष हित-अहित का और सम्भावनाओं का विचार करके एक बार जो निश्चय कर लेते हैं उससे फिर विचलित नहीं होते। विघ्न-बाधाएँ उन्हें अपने पथ से डिगा नहीं सकती। आपत्तियाँ और रोड़े उनका मार्ग रोक नहीं सकते। वे अपने सारे साहस को बटोर कर उन आपत्तियों से संघर्ष करते हैं और उनका मूल मन्त्र होता है-

'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयं।'

'या तो कार्य सिद्ध करके छोड़ूँगा या शरीर को विदाई दे दूँगा।'

वीर आत्माओं का संकल्प इतना प्रबल होता है। विफलता उनके दृढ़ संकल्प के आगे खड़ी नहीं रह सकती।

आनन्दकुमारी जी ने भी अपने जीवन को संयम मार्ग पर आरूढ़ करने का प्रबल संकल्प कर लिया। आपने अपने विचारों को कितने ही दिनों तक तो रोक कर रखा। एक दिन आपने अपनी बड़ी बहन फूलकुँवर बाई के सामने अपने विचार प्रकट कर दिए। आपकी दिनोदिन बढ़ती हुई वैराग्यबेल को देखकर फूलकुँवर बाई ने पहले से ही अनुमान लगा लिया था। फिर भी आपकी कसौटी करने के लिए फूलकुँवर बाई ने कहा- 'रहने दे इन बातों को, तू अभी नादान बच्ची है। वैराग्य किस चिड़िया का नाम है, यह तो पता ही नहीं है और कहती है मेरा विचार दीक्षा लेने का है। साधुता का मार्ग बड़ा कठिन है। मालूम होता है तू इसे फूलों का मार्ग समझ रही है। यह फूलों पर चलने का मार्ग नहीं है, यह है नंगे पैर नुकीले काँटों पर चलने का मार्ग। विरले ही इस मार्ग को अपनाते हैं। कितने तो दूर से देखकर ही घबरा जाते हैं। तू मेरी बहिन है। मेरे पास धर्म की बातें सीखने आई है, किसी को चढ़ाने के लिए नहीं। अगर तू ऐसी बातें करेगी तो तेरे ससुराल वाले मुझे क्या कहेंगे? पीहर भेजी थी और बहिन ने बहकाकर साध्वियों के यहाँ चढ़ा दी। मैं तुम्हारे ससुराल की धरोहर को यों नहीं जाने दूँगी। तू बड़ी भाग्यशालिनी है जो तुझे धर्म पर अतुल श्रद्धा हुई है। मेरा निमित्त पाकर तेरे पूर्वजन्म के संस्कार जागृत हो उठे हैं। इसके लिए मुझे बड़ी प्रसन्नता है, पर अभी साध्वी नहीं

बनने दूँगी। गृहस्थ में रहो और जितना धर्माचरण हो सके, करो। इसके लिए मैं तुम्हारे मार्ग में कोई रुकावट नहीं डालना चाहती किन्तु साधु-जीवन तो बड़ा ही कठिन है। लोहे के चने चबाने के समान है। सिंहवृत्ति से ही पालन हो सकता है। तू अभी यौवन के सिंहद्वार पर है। इस अवस्था में विकारों की आँधियों से लड़ना कोई हँसी-खेल नहीं है। जरा सोच-विचार कर काम किया कर।'

आप अपनी बड़ी बहन को माता की दृष्टि से देखती थीं। उनका सरल स्नेह माता से किसी प्रकार भी कम नहीं था। जैसे कुम्भकार कच्चे घड़े पर चोट लगाता है, पर अन्दर से अपना हाथ दिये रहता है ताकि घड़ा फूट न जाए, इसी तरह फूलकुँवर बाई ऊपर से कृत्रिम कोप और भय दिखा रही थीं, पर उनके हृदय में आपके प्रति अपार स्नेह था। अतएव आपने अपनी बहन से अधिक संघर्ष करना उचित न समझा और गंभीरता धारण कर ली। आप अपने संकल्पों पर दृढ़ रही और समय की प्रतीक्षा करने लगीं।

इस तरह जब तक आप पीहर में रहीं तब तक फूलकुँवर बाई से काफी सहायता मिलती रही। वे आपको महासती जी के पास जाने-आने में कोई रुकावट नहीं डालने देतीं। कभी माता जी कुछ बोल उठती या कहने लगतीं- 'घर का काम तो सूझता नहीं है, दिनभर महासती जी के यहाँ दौड़ती रहती है। आजकल तुझे क्या हो गया है? रात को भी अधिकतर समय वहीं बिताती है।' उस समय आप चुप्पी साध लेतीं और अपना काम किया करतीं, पर फूलकुँवर बाई बीच में पड़कर माता जी को समझाया करतीं कि 'माँ, क्यों बेचारी लड़की पर गुस्सा कर रही हो? महासती जी के पास जाने में हानि ही क्या है? इसने जन्म से ही दु:ख के दिन देखे हैं। कहीं रहकर अपना मन बहलाती है और सुख से दिन काटती है तो तुम क्यों बाधक बनती हो?' इस तरह माता जी की ओर से भी आपको छुट्टी मिल जाती। आपके ऊपर कोई विशेष कार्य का बन्धन नहीं था, इसलिए जब चाहती तब महासती जी के पास पहुँच जातीं और सामायिक लेकर अपना ज्ञान-ध्यान करने लगतीं। महासती जी उन दिनों करीब दो वर्ष तक शारीरिक बीमारी के कारण से सोजत ही विराज रही थीं। महासती जी की स्नेहशील प्रकृति ने आपका मन मोह लिया। अब तो दिन में दस-दस और कभी बीस-बीस चक्कर लगते थे। जब देखो तब महासती जी के उपाश्रय में।

एक दिन मौका देखकर आनन्दकुमारी जी ने महासती जी के समक्ष विनम्र शब्दों में निवेदन किया- 'म.सा.! मैंने अब आपके पास रहकर साधु-जीवन की चर्या जान ली है। प्रतिक्रमण भी याद कर लिया है। अब आप उचित समझती हों तो मुझे चरण-शरण में लेकर कृतार्थ करें।'

महासती जी- 'दृढ़ निश्चय कर लो कि तुम्हें क्या करना है? जैन साध्वियों की जीवनचर्या तुम देख रही हो। सांसारिक सुख-सुविधाओं को यहाँ अवकाश नहीं है। यहाँ तो दिन-रात अपने को साधना की अग्नि में तपाना और आत्मा का वास्तविक रूप निखारना होगा। सिर के बालों को उखाड़ना, नंगे पैरों चलना, सर्दी और गर्मी के भयानक कष्टों का सामना करना इत्यादि कष्टों को तुम जानती ही हो। क्या तुम इन सब कष्टों को सहन कर सकोगी?' आनन्दकुमारी जी ने प्रसन्नमुद्रा के साथ कहा- 'हाँ, मैं इन कष्टों को तो क्या इनसे भयानक कष्टों को भी सहने के लिए तैयार हूँ। नरक में तो मैंने इससे भी असंख्य गुणा कष्ट सहे होंगे। मैं इन कष्टों से डरने वाली नहीं हूँ। मैंने खूब सोच-समझकर यह मार्ग अपनाने का निश्चय किया है। कृपया अब ज्यादा कालक्षेप न करें और मुझे अपनी शरण दें।'

'क्या तुम्हारे ससुराल वालों से आज्ञा मिल चुकी है?'

'म.सा.! अभी तक आज्ञा तो नहीं मिली है।'

'बिना अभिभावकों की आज्ञा प्राप्त हुए जैन दीक्षा कभी नहीं हो सकती। अत: पहले उनसे आज्ञा प्राप्त करो।'

'बिना आज्ञा शिष्या बनाने में क्या आपत्ति है?'

'आपत्ति क्या, यह तो एक तरह की चोरी है और साधु जीवन में किसी भी प्रकार की चोरी का जावज्जीवन त्याग होता है।'

'यदि आज्ञा न मिले तो?'

'तुम्हारे अन्दर दृढ़ लगन होगी तो सब कुछ मिल सकता है। अंदर की ज्वाला न बुझने दो। पक्की लगन रखो।'

महासती आनन्दकुमारी जी के साथ ही एक दूसरी महासती थीं। उन्होंने सोचा कि यह दीक्षा लेने को तो तैयार हो गई है, पर इसमें शिष्या के गुण हैं या नहीं? विनय का गुण, जो प्रथम गुण होता है, वह कितनी मात्रा में है। इसकी जाँच करनी चाहिए। उन्होंने हँसते हुए कहा– 'तुम मेरे से दीक्षा ले लो, मैं तुम्हारे पास से कोई भी काम नहीं कराऊँगी। भिक्षाचरी लाना आदि कोई भी सेवा का कार्य तुम से नहीं लिया जाएगा। तुम्हें मेरी शिष्या बनना पसन्द है?'

आनन्दकुमारी जी ने उनके मनोभाव जानकर उत्तर दिया– 'तब तो आप मुझे बिल्कुल आलसी बनाकर बिठाना चाहती हैं। आलसी को कहीं ज्ञान प्राप्त हो सकता है? बिना गुरु के विनय एवं सेवा-शुश्रूषा के कभी ज्ञान का झरना बह सकता है? आप इस प्रकार से क्या कह रही हैं?'

आखिरकार उन महासती जी ने कहा– 'मैंने तो तुम्हारी परीक्षा के लिए ऐसा कहा था। वास्तव में तुम दीक्षा के योग्य हो। आज्ञा के लिए दृढ़ प्रयत्न करो।'

अब आपको आज्ञा प्राप्त करने की धुन लगी। आप अपने पीहर से ससुराल चली गईं। यह पहले कहा जा चुका है कि ससुराल वाले रामस्नेही थे। वे जैन धर्म की बातों से अनभिज्ञ थे। अत: उनसे दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करना बड़ा कठिन था। फिर भी आपने साहस नहीं छोड़ा, हिम्मत नहीं हारी। कहावत है– **'हिम्मते मर्दां मददे खुदा'** अर्थात् जो हिम्मत रखता है उसे ईश्वरीय सहायता भी मिल जाती है।

आप अपनी ससुराल में रहतीं तब भी जो नियम आपने महासती जी से ले रखे थे उनका पालन करतीं। आपको घर के काम से अवकाश मिलता तो आप सामायिक में बैठ जातीं। वे लोग आपकी दिनचर्या देखकर कुछ भी समझ न पाए कि क्या माजरा है? सारे दिन ज्ञान-ध्यान की ही बातें करना, फिजूल गप्पों या हँसी-मजाक से बिल्कुल दूर। घर वाले देखकर दंग रह गए और कहने लगे– 'यह तो अब योगिनी बन गई हैं।' एक दिन भोजन करने का समय था। उस समय आप सामायिक करने बैठ गईं और अपनी माला फेरने लगीं। आपकी सासू जी व जेठानी जी आपके पास आईं और कहने लगी– 'आज क्या बात है? भोजन का समय हो गया है, फिर भी तुम अपने जाप में लगी हो? उठो जल्दी, भोजन ठण्डा हो रहा है।'

आनन्दकुमारी जी– 'वह तो मुझे मालूम है, पर अब मुझे आप कब तक भोजन कराओगी? मैंने अपने धर्म का स्वरूप समझ लिया है। महासती जी के दर्शनों के पश्चात् अब मेरी इच्छा शीघ्रत: उनके पास दीक्षित होने की हो रही है। मैंने संसार के सभी नाटक प्राय: देख लिए हैं। संसार का मार्ग अब मुझे बंधनकारक प्रतीत होता है। उस मार्ग पर चलने से कभी अन्त आने का नहीं। इसलिए अब मैंने मुक्ति के मार्ग पर चलने की ठानी है। वही मार्ग भवभ्रमण का अन्त ला सकता है। यही मार्ग स्वाधीनता का मार्ग है। जैन धर्म संसार के सभी धर्मों से ऊँचा उठकर मुक्ति का मार्ग, मोक्ष का पथ बतलाता है। वह पूर्ण त्यागियों के लिए कंचन और कामिनी (पुरुष के लिए स्त्री, स्त्री के लिए पुरुष) का आत्यन्तिक त्याग बतलाने वाला अलौकिक धर्म है। उसी धर्म में मैं दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण करना चाहती हूँ। आप जानती हैं कि जैन साध्वी मुमुक्षु के संरक्षक की आज्ञा के बिना दीक्षा नहीं दे सकती। अत: आप लोग मेरा हित देखकर मुझे हर्षपूर्वक दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान कीजिए। आप समझती होंगी कि यह हमें छोड़ देगी, ऐसी बात नहीं है। मैं तो एक कुटुम्ब की सेवा छोड़कर संसार के समस्त प्राणियों की सेवा का मार्ग अपना रही हूँ। मेरा प्रेम अब एक कुटुम्ब तक ही सीमित नहीं है।

अब तो सारा विश्व ही मेरा कुटुम्ब बनेगा। जहाँ जाऊँगी वहाँ के लोगों से भिक्षा मांगकर जीवन यापन करूँगी। मुझे कोई कष्ट नहीं होगा। इसलिए यदि आप सचमुच भोजन कराना चाहते हैं तो मुझे जैन भागवती दीक्षा के लिए अपनी अनुमति प्रदान करें।'

आपके मुँह से सहसा ऐसी बातें सुनकर घर के सब लोग हक्के-बक्के रह गए। आपकी सासु जी आदि ने कहा- 'बेटी! पहले भोजन तो कर लो, बाद में तुम्हारी बात सुन लेंगे। तुम्हें आज हो क्या गया है? इतने दिन तक तो कभी जिद्द करते नहीं देखा। आज तुम्हारे पर क्या किसी ने जादू कर दिया है? और हम तो तुम्हारे हितैषी हैं। तुम्हारे जीवन को सुखी देखना चाहते हैं। तुम्हें दीक्षा लेनी हो तो ले लेना, पर अभी इतनी जल्दी क्या है? अभी थोड़े दिन गृहस्थ में रहकर साधना करो, फिर देखा जाएगा। समय आएगा तो तुम्हारी दीक्षा को कौन टाल सकता है?'

आप तो दीक्षा के लिए आज्ञा प्राप्त करने की धुन में थीं। आपको अपनी धुन के सिवाय और कुछ नहीं सूझ रहा था। आप किसी तरह भी भोजन करने को तैयार न हुईं। संध्या हो गई, पर अभी तक आपने भोजन नहीं किया। ससुराल वालों का आप पर परमस्नेह था, अत: उस दिन सभी लोग भूखे ही रहे। आपके मुख से बराबर दीक्षा की आज्ञा देने की बात सुनकर और आपकी लघुवय व कोमल प्रवृत्ति का विचार कर आपकी सासु जी की आँखें डबडबा गईं। वे कल्पना भी नहीं कर सकी कि उनकी प्यारी पुत्रवधू जैन साध्वी बन सकती है!

अन्ततोगत्वा आपके जेठ जी श्री फतहचंद जी को बुलाया गया, जो उस दिन कहीं बाहर गए हुए थे। वे भी आपका यह हाल और कठोर साधना देखकर हैरान हो गए। उन्होंने बहुत समझाया और प्रलोभन देते हुए कहा- 'बेटी! हम तुम्हारे लिए घर में सब कुछ प्रबन्ध करा देंगे। तुम यहीं रहकर अपने धर्म की साधना करना और ज्ञान सीखना व दूसरों को सिखाना।'

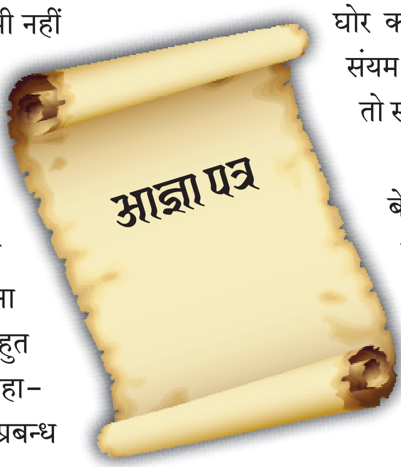

पर यहाँ तो पक्का रंग लग चुका था। जिसने आदर्श ब्रह्मचारिणी राजीमती सरीखी महासतियों की जीवनी सुन ली, वह अपने ध्येय से कैसे विचलित हो सकती थीं? उस महान नारी के सामने क्या प्रलोभन कम थे? उसके सामने क्या विलासिता के साधन कम थे? पर उसने उन सबको अपनी एक हुँकार से, एक सिंह गर्जना से खदेड़ दिया। विलासिता के वे सब गीदड़ दुम दबाकर भाग गए। आनन्दकुमारी जी भला ऐसे प्रलोभनों की बहकावट में कब आ सकती थीं? आप अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहीं, टस से मस न हुईं। जेठ जी के सारे प्रलोभन व्यर्थ गए।

अब आपके जेठ जी को एक ही उपाय सूझ रहा था और वह यह कि आपके पिता जी को बुलाकर उनसे समझाया जाए। फतहचंद जी शीघ्र ही आपके पीहर गए और आपके पिता जी को बुलाकर लाए। पिता जी को सारी स्थिति समझते देर न लगी। आनन्दकुमारी जी के विचार सुनकर पिता जी को बड़ा आश्चर्य व दु:ख हुआ। पहले वे अपनी पुत्री के धर्म-ध्यान व जीवन-विकास की प्रगति देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते थे, वहीं अब वे खिन्नता का अनुभव करने लगे। उन्होंने पुत्री के विचारों की गहराई को नहीं पहचाना। वे सोचने लगे कि नादान लड़की है। अभी जानती ही क्या है? किसी साध्वी के बहकावे में आ गई है। संयम के घोर कष्टों को ये क्या जाने? अभी इसे संयम के कष्टों की कहानियाँ सुनाऊँगा तो सही रास्ते पर आ जाएगी।

पिता जी कहने लगे- 'देख बेटी! यह साधुवृत्ति बच्चों का खेल नहीं है। इस मार्ग पर कायर नहीं बढ़ सकते। यह तो जम्बूकुमार जैसे सिंहों से ही पल सकता है। तू विचार कर रही होगी कि दीक्षा के बाद साध्वियों के यहाँ खूब

खाने-पीने को मिलेगा, लाड़-प्यार से रहेगी। पर तू इस भुलावे में मत रहना। रथनेमि जैसे महान साधक भी इस मार्ग से भटक गए थे तो तू क्या चीज है? पंच महाव्रतों का पहाड़-सा बोझ उठाकर यात्रा करना हर किसी के वश की बात नहीं है। तुमने सुना ही होगा कि गजसुकुमाल मुनि को कितना कष्ट उठाना पड़ा था? सोमिल ब्राह्मण ने उनके सिर पर धधकते अंगारे रख दिये फिर भी उन्होंने उफ तक नहीं की। यह है सच्ची साधुता। क्या तू ऐसे मार्ग पर चल सकेगी? तू उन साध्वियों के बहकावे में आकर दीक्षा मत ले लेना। सोच-समझकर निर्णय करना।'

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः श्रमणोपासक

भक्ति रस

आचार्य श्री रामेश का संघ

-धर्मेन्द्र पारख (धर्म सेनानी), रायपुर

गुरु हुक्मी के पद्चिह्नों को, गुरुवर शिखर तक पहुँचा रहे।
जहाँ दिव्यता ही जीवन है, स्वयं को वो तपा रहे।।

विपदाएँ कितनी भी आईं, कितने ही आघात सहे।
मन में ध्येय अरिहंत प्रभु का, अविचल ही वे खड़े रहे।।

तप-तपस्या, ध्यान-साधना की, अलख वो नित्य जगा रहे।
धर्म की फुलवारी से, संघ को सुगंधित बना रहे।।

दुर्गम क्षेत्रों में भी विचरण कर, जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं।
नित्य नए आयामों से, संघ को वे सिंचित् कर रहे हैं।।

कर रहे हर संत पुरुषार्थ, संकल्पों में अडिग रहे।
आगम के हर शब्द का, मूल अर्थ अंतर्हृदय में ढूंढ रहे।।

सत्य धर्म का परचम लहराया, जिनवाणी घर-घर पहुँचा रहे।
पंचम आरे के कष्टों को सहकर, स्व-पर का जीवन निखार रहे।।

दुष्प्रवृत्तियों से हर संभव बचाकर, संघ को संयम की ओर बढ़ा रहे।
नवम् पट्टधर के पद में, आठों ही आचार्यों का धर्मरथ आगे बढ़ा रहे।।

संघनायक ऐसे हमारे, जो सबके हृदयों में बसे हुए।
मैं भी सौभाग्यशाली सदस्य हूँ संघ का, पर सामर्थ्य रूप कुछ कर ना सके।।

एक ही अर्ज गुरुवर से मेरी, शुभ भाव, शुद्ध आचरण हो मेरा।
गुरुकृपा निरंतर बरसती रहे हम पर, ऐसा हो जीवन मेरा।।

श्रमणोपासक

Kids Corner

बालमन में उपजे ज्ञान

– मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

सौरभ और उसके friends की यह journey बहुत ही interesting बनती जा रही है। इसे और interesting बना रही है सौरभ की माता जी। सौरभ और उसके friends की life में पिछले दिनों बहुत बदलाव आया है। उन्होंने कई good habits सीखी और कई bad habits को छोड़ा। आगे देखते हैं सौरभ की माता जी बच्चों को क्या नई शिक्षा देने वाली हैं।

(सभी बच्चे समय पर सौरभ के घर पर)

सभी बच्चे एक स्वर में- जय जिनेन्द्र आंटी!

सौरभ की माता जी- जय जिनेन्द्र बच्चों!

नितिन- आंटी! हम आज क्या सीखने वाले हैं? आप आज क्या पढ़ाएँगी?

सौरभ की माता जी- सिखाऊँगी तो जरूर, पर आज से हम सब कुछ याद भी करना शुरू करेंगे।

पंकज- याद... क्या याद करना है?

नीलिमा- आंटी! आपकी बातें सुनने में कितना मजा आता है! आप याद करने को क्यों कह रही हैं?

सौरभ- हाँ मम्मी, school में already इतना course है।

सौरभ की माता जी- अरे! शांत हो जाओ बच्चों। मैं तुम्हें बहुत थोड़ा-थोड़ा याद करने को दूँगी और वह भी पूरा अर्थ समझाकर। अर्थ समझकर पढ़ी हुई theme जल्दी याद होती है।

नीलिमा- आंटी! मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी नई-नई सीख की तरह याद करने का पाठ भी interesting ही होगा।

सौरभ की माता जी- बिलकुल बच्चों! हम याद करेंगे सामायिक सूत्र। एक स्थान पर 48 मिनट मुँहपत्ती बांधकर, आसन लगाकर शुद्ध मन से बिना हिले-डुले धर्माराधना करने को सामायिक कहा जाता है।

पंकज- याद आया... जब हम स्थानक गए थे तब आपने बताया था। वहाँ बहुत सारे लोग सामायिक के वस्त्रों में बैठकर कुछ पढ़ रहे थे।

नितिन- आंटी! क्या अब से रोज हम भी सामायिक करेंगे?

सौरभ की माता जी- कर सकते हैं, परन्तु पहले सामायिक के सभी पाठ और विधि याद करना आवश्यक है। चाहें तो हम किसी और से भी सामायिक ले सकते हैं, परन्तु स्वयं को याद हो तो अतिउत्तम है। चलो! शुरूआत नवकार महामंत्र से करते हैं।

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

अरिहन्तों को नमस्कार हो।
सिद्धों को नमस्कार हो।
आचार्यों को नमस्कार हो।
उपाध्यायों को नमस्कार हो।
समग्र लोक में स्थित सब साधुओं को नमस्कार हो।
पंच परमेष्ठी रूप महान् आत्माओं को किया गया नमस्कार सब पापों का पूर्णरूपेण नाश करने वाला है तथा विश्व के समस्त मंगलों में प्रथम-प्रधान-सर्वश्रेष्ठ मंगल है।

(सभी बच्चे आँखें बंद कर नवकार महामंत्र का उच्चारण करते हैं)

सौरभ- मम्मी! हम बहुत excited है कि अब हम भी सामायिक सूत्र सीख पाएँगे।

पंकज- देखना, सबसे पहले मैं ही पूरी सामायिक याद करूँगा।

(पहले मैं... पहले मैं से पूरा कमरा गूँज उठा)

सौरभ की माता जी खुश थी कि वह आज के बच्चों के जीवन में अध्यात्म एवं धर्म का उजाला भर रही है, जिसका प्रकाश उन्हें भविष्य की बाधाओं के अंधकार में प्रकाश देगा।

नीलिमा- आंटी! प्रतिज्ञा आज हम बताएँगे। क्रमशः एक-एक बच्चा प्रतिज्ञा बताता है।

1. हम घर जाकर 108 बार नवकार महामंत्र बोलेंगे।
2. घर के बड़े-बुजुर्गों के साथ बैठकर नवकार महामंत्र का अर्थ अच्छे से समझेंगे।
3. रात में सोने से पहले एवं सुबह उठते ही सबसे पहले नवकार महामंत्र गिनेंगे।

सभी बच्चे जिनकी आयु 15 वर्ष से कम हैं, वे नवकार महामंत्र को अपनी कल्पना अनुसार सुन्दर एवं शुद्ध रूप में लिखकर भेजें। आप चाहें तो different colours और words की अलग-अलग styles का भी use कर सकते हैं। लेकिन इतना ध्यान रखें कि लिखना हाथ से ही है। Computer द्वारा बनाकर एवं print निकालकर भेजा हुआ मान्य नहीं होगा। ध्यान मुद्रा, साधु-साध्वी का चलचित्र आदि कोई भी आकृति मान्य नहीं होगी। इसकी last date 15 नवंबर 2023 रहेगी। Results नवंबर माह के समाचार अंक में प्रकाशित किए जाएँगे। अतः PDF बनाकर स्पष्ट शब्दों में नाम, मोबाइल नंबर, सिटी एवं अंचल का नाम लिखकर WhatsApp 9314055390 पर भेजें।

संस्कार सौरभ

विश्वास व संवाद से संवरेगा संबंध

-गौतम पारख, राजनांदगाँव

संकेत, सावधानी, संदेश, सूचना, संवाद इन शब्दों पर मेरा ध्यान आकर अटक गया। संकेत का अभिप्राय है किसी विशेष ओर इंगित करना। आकृति मौन रहकर भी जब संदेश देने लगे, सावधान करने लगे, सूचना देने लगे तो निशान के निशाने को समझकर उससे सीख लें अन्यथा दुर्घटना द्वार पर आकर खड़ी हो जाएगी। वहीं दूसरी ओर आँखें, मुखमण्डल, अंगुलियाँ भी मौन रहकर इशारों-इशारों में संकेत दे जाते हैं। आँखें तो न जाने अपने कितने रूप मुखमण्डल के साथ बनाकर प्यार, नफरत, निषेध व सहमति का संकेत दे जाती हैं। चाहे कैसा भी संकेत हो, हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। सावधान नहीं हुए तो दुर्घटना होना स्वाभाविक है। कहावत है- **'आ बैल मुझे मार'**। सड़कों पर, बिजली के खंभों पर, नदी के पुलों पर, दीवारों पर, प्रवेश द्वारों पर खतरे का, स्पीड ब्रेकर का, खतरनाक मोड़ का, पेड़ न काटने का, विभिन्न स्थानों की ओर जाने का, सिग्नल लाल, पीले, हरे का निशान आदि संकेत हमें सावधान करते हैं। ये निशान मौन रहकर हमें संकेत करते हैं। ज्योतिष शास्त्र में हमारे आभामण्डल के साथ शरीर के विभिन्न स्थानों पर बने निशानों, शारीरिक आकृतियों को देखकर ज्योतिषी अपनी राय व्यक्त करते हैं।

सूचना कहें या संकेत, एक अभिप्राय से दोनों का अर्थ एक ही होता है, लेकिन समग्र दृष्टि से दोनों का अर्थ अलग-अलग होता है। आजकल प्राय: मोबाइल में व्हाट्सएप से सूचना, आमंत्रण, संदेश भेजा जाता है। संदेशों, सूचनाओं का आदान-प्रदान भी मोबाइल से कर लिया जाता है। कई बार व्यक्ति व्हाट्सएप के माध्यम से इतने सारे ग्रुप्स से जुड़ा होता है कि व्हाट्सएप देख ही नहीं पाता। काश सूचना, संदेश, आमंत्रण आदि टेलीफॉनिक संवाद से होता तो प्रभावशाली निर्णयात्मक होता। कोई भी आमंत्रण, निमंत्रण व्हाट्सएप में डालकर छोड़ देता है। आप उसे गंभीरता से नहीं लेते। मोबाइल आदि के माध्यम से संवाद स्थापित कर विधिवत् आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं तो आत्मीयता में विस्तार व रिश्तों में जान आती है।

संवाद जीवन जीने की कला के साथ-साथ रिश्तों एवं व्यवहार में शुचिता लाता है। निष्कपट भाव से किया गया संवाद ग्रंथियों का विमोचन कर वास्तविकता के पट खोलता है। समझने, स्वीकारने, सुधरने व सत्य से साक्षात्कार करने हेतु किया गया संवाद वास्तव में आत्मीयता का विस्तार करता है, गलतफहमियों तथा गलत धारणाओं से आई कटुता को दूर करता

है। संवाद सहजता, सरलता के साथ किया जाए तो छल-कपट, ईर्ष्या की दीवारें स्वत: ही टूट जाती हैं।

मेरे स्मृतिपटल पर इतिहास के पृष्ठों में अंकित संवाद के अभाव में घटित दु:खद प्रसंग उभर आए। महाराज श्रेणिक के पुत्र कौणिक ने अपने पिता से संवाद के अभाव में राज्य पाने की अतिचाह में अनर्थ कर डाला। कौणिक ने अपने ही पिता महाराज श्रेणिक को काठ के कारागृह में बंदी बना दिया।

निर्दयता, क्रूरता की पराकाष्ठा के बीच प्रतिदिन अपने ही पिता श्रेणिक महाराज को स्वयं पाँच सौ कोड़े मारता था। जिस दिन उसे अपनी माता चेलना से प्रसंगवश सच्चाई ज्ञात हुई कि मेरे पिता तो मुझे अत्यधिक प्यार करते हैं तो पश्चात्ताप के आंसुओं से भीग गया और अपने आप को धिक्कारने लगा। काठ के कारागृह से अपने पिता को मुक्त करने के लिए कुल्हाड़ी लेकर निकल पड़ा। महाराज श्रेणिक कौणिक के हाथों में कुल्हाड़ी देखकर सोचने लगे कि आज कौणिक मुझे मारने आ रहा है। कौणिक के पहुँचने तक को महाराज श्रेणिक ने अपने हाथ में हीरे की अंगुठी में लगे तालपुट जहर को खाकर आत्महत्या कर ली। मैं सोचने लगा कि कौणिक तो अपने पिताश्री को बंधनमुक्त कर क्षमायाचना करने हेतु स्वयं को धिक्कारते हुए जा रहा था, लेकिन कौणिक के प्रति जो धारणा महाराज श्रेणिक के मन में बनी थी उसने उनको आत्महत्या करने हेतु विवश कर दिया। काश, उन्होंने संवाद कर लिया होता तो यह अनर्थ ही नहीं होता। संवाद एवं आपसी संदेश का अभाव ही तो मन की इंद्रियों को आक्रोशित बनाता है।

मैंने यह अनुभव किया है कि अनेक रिश्ते सरल मन से संवाद के अभाव में टूट जाते हैं। एक-दूसरे के प्रति दुर्भावना की ग्रन्थि गाँठ बन जाती है। कभी-कभी मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति भी इन गाँठों को खोलने में सफल नहीं हो पाता। तलाक शब्द भी विश्वास, विवेक, विनय के मूलसूत्र के अभाव में अनेक ग्रंथियाँ बना देता है। गलतफहमियाँ इन ग्रन्थियों का पोषण कर गलत धारणाएँ बना देती हैं। भूत को भूलकर वर्तमान में विश्वास से संबंधों को सुधार, निष्कपट भाव से संवाद कर एक-दूसरे को माफ करने के महामंत्र से जीवन जयवन्त बन जाएगा। हाल ही में दिल्ली में सम्पन्न जी20 सम्मेलन में विभिन्न स्तरों पर विभागीय अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न पहलुओं पर विभिन्न देशों से बार-बार संवाद किया। वस्तुस्थिति व सम्मेलन के उद्देश्य को रेखांकित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्मेलन में सभी प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित हो गए। यूक्रेन व रूस के बीच लम्बे समय से चल रहे युद्ध के बीच शान्ति, सद्भाव का प्रस्ताव भी सर्वानुमति से पारित होना एक कठिन चुनौती था। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पूरे विश्व में संदेश देने में भी सम्मेलन सफल रहा। श्रमणोपासक

"प्रभु संकेत की भाषा समझने, सावधान रहने व संवाद पर गहरा विश्वास करने की हमें समझ, शक्ति व सद्बुद्धि दें।

संस्कार सौरभ

विवेक से ही धर्म स्थान पावन

-लता बोथरा, बेल्लारी

धर्म स्थान में जाते हैं प्रियधर्मी।
विवेक, अभिगम का पालन करते हैं दृढ़धर्मी।।

धर्म का अर्थ है वह क्रिया जिससे पुण्य का उपार्जन होता है अर्थात् जिसके द्वारा जीव पुण्य की पोटली बाँधता है। स्थान का तात्पर्य होता है जगह, ठिकाना, स्थल आदि। विवेक का सामान्य अर्थ होता है बुद्धि, ज्ञान, अक्ल, कायदा, अदब, समझदारी, चैतन्य इत्यादि।

धर्म स्थान में विवेक रखना अतिआवश्यक है। जैसे किसी थिएटर, पार्क, रेलगाड़ी, बस, जहाज आदि की यात्रा में टिकट का होना जरूरी है वैसे ही धर्म स्थान में विवेक या समझदारी रखना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए। सभी धर्मों की मान्यता है कि जहाँ दिव्य विधान, उचित संहिता के मूल सिद्धान्त का अपने कर्त्तव्य और स्वभाव के अनुरूप पालन होता है वही धर्म स्थान है। धर्म स्थान में जो नियम रखे जाते हैं उन्हें अभिगम भी कहा जाता है। अभिगम पाँच प्रकार के होते हैं-

सचित्त का त्याग, अचित्त का विवेक,
उत्तरासंग कर जोड़।
कर मन को एकाग्रचित्त,
सब बंधनों को तोड़।।

ये पाँच नियम आमतौर पर सब श्रावक-श्राविकाओं को धर्म स्थान में पालन करने चाहिए। जैसे गाड़ी चलाने वाला सिग्नल के नियमों को नहीं अपनाता है, तो दुर्घटना का डर रहता है या जुर्माना भरना पड़ सकता है, वैसे ही सचित्त का त्याग, अचित्त का विवेक रेड लाइट सिग्नल है। उत्तरासंग और करबद्ध ग्रीन लाइट का सिग्नल है कि अब आप अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। मन की एकाग्रता धर्मस्थानक में मन को स्थिर करने का संदेश देती है अर्थात् जैसे ऑरेंज लाइट तैयार रहने का संदेश देती है वैसे ही धर्म के लिए तैयार हो जाना चाहिए। धर्म स्थान में अभिगम नहीं पाला तो अयतना रूपी जुर्माना लग जाता है। उसका भुगतान करने के लिए प्रायश्चित्त लेना ही पड़ता है।

धर्मस्थान एक ऐसा चौराहा है जहाँ से मानव किसी भी गति की ओर प्रस्थान कर सकता है। अब वह किस गति की ओर प्रस्थान करेगा, यह उसके धर्म स्थान संबंधित विवेक पर निर्भर करेगा।

हर कार्य की सम्पन्नता में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अहम भूमिका होती है। धर्म स्थान में विवेक रखने के लिए भी ये चारों घटक महत्त्वपूर्ण हैं-

1. द्रव्य से – प्राय: देखा जाता है कि हम द्रव्य भाव से तो धर्म स्थान में बैठे होते हैं, पर वहाँ भी सारे जगत की बातें कर लेते हैं। किसी ने सही कहा है– ***बायाँ मिली चार, बातां हुई हजार***। एक-दूसरे से मिलते ही आस-पड़ौस एवं देश-दुनिया की चर्चा होने लग जाती है। क्या हम ऐसा करके अपने विवेक को भूल रहे हैं। श्रावक-श्राविका वे होते हैं जो **श्र-** श्रवण करके, **व-** जिनवाणी के वचनों को सुनकर, **क-** कथनी-करनी में एकरूपता रखते हैं। धर्म स्थानक की चार दीवारें हमें प्रेरित करती हैं कि जहाँ तक हो सके इस चित्त को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप में लगाकर अपने भव को सार्थक करें, जो अत्यन्त दुर्लभता से प्राप्त हुआ है।

2. क्षेत्र से – बहुत बार सुनने में आता है कि स्थानक में जाते ही शान्ति का अनुभव होता है। इसका कारण है कि वहाँ के पुद्गल अति शुभ होते हैं। वहाँ प्रवेश करते समय निस्सिही शब्द का उच्चारण दर्शाता है कि 18 पापों का त्याग कर संसार के प्रपंचों से मुक्त होकर प्रवेश कर रहे हैं। जब हम ये सब बातें जानते हैं तो फिर दुनिया की बातें कर शुभ पुद्गलों को अशुभ पुद्गलों में बदलने में संकोच क्यों नहीं करते ?

जैसा स्थान वैसा भान अर्थात् हमें यह तो भान रखना चाहिए कि हम कहाँ बैठे हैं। जैसे कोई कहे कि पार्क या थिएटर में संवर या सामायिक करो एवं मुँहपत्ती लगाकर बैठो तो आपको कैसा लगेगा? आप यही सोचेंगे कि कहने वाले का दिमाग स्थिर नहीं है। हो सकता है कि हम अपशब्द कहने से भी नहीं चूकें। ठीक वैसे ही धर्म स्थान में दुनिया की चर्चा करना हमारे आत्मा के लिए सही नहीं। हमारी व दूसरों की एकाग्रता बढ़े ऐसा प्रयास करना चाहिए। ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। ज्ञानचर्चा ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

3. काल से – जिस स्थान का दरवाजा चारों तीर्थ के लिए हर समय खुला रहता है वह है धर्म स्थान। धर्म क्रिया करने के लिए कोई पाबंदी नहीं है। जितनी आराधना करोगे उतना ही इस मनुष्य भव को संवार पाओगे। धर्म स्थान में प्रवेश का कोई शुल्क नहीं लगता, फिर भी हम जाने में प्रमाद करते हैं। हम यदि प्रतिदिन स्थानक में जाएँगे तो बच्चे भी हम से प्रेरित होकर वहाँ जाने लगेंगे। श्रावक-श्राविकाओं को समय का विवेक रखते हुए चारित्रात्माओं की सेवा में उपस्थित होना चाहिए। यदि हम हवाई जहाज, रेलगाड़ी या बस आदि से यात्रा कर रहे हैं तो हमें समय पर उन तक पहुँचना अतिआवश्यक है, नहीं तो समय और धन दोनों का अपव्यय होता है। वैसे ही प्रार्थना, प्रवचन, मांगलिक एवं ज्ञानचर्चा आदि के समय का विवेक रखना चाहिए। समय अमूल्य है इस बात का ध्यान रखेंगे तो ही जीवन सार्थक बन सकता है।

4. भाव से – जैसा भाव वैसा भव। हमें इतना अच्छा सुअवसर मिला है तो इसका उपयोग कर बुद्धिमानी का परिचय दें। धर्म स्थान में मन, वचन, काया तीनों की प्रवृत्ति शुभ होने से भावों में शुद्धता आती है। भाव हमें तिरा भी सकते हैं तो डुबा भी सकते हैं। हमारे आचरण में जिनवाणी के प्रति आदरभाव, अहोभाव, नम्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ने चाहिए। शुद्धभावों से हमारी आत्मा निज स्वभाव में रमण करती है। भावों में कलुषता न हो, ऐसी सजगता सदैव रखनी चाहिए। श्रमणोपासक

“एक सीढ़ी होती है उसका हर पायदान अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है। पहला पायदान भी आवश्यक है, दूसरा भी आवश्यक है, वैसे ही आखिरी भी आवश्यक है। दूसरा पायदान चढ़ेगा तो पहला छोड़ना ही पड़ेगा। यह छोड़ना यथार्थ है, वास्तविक है। इतना जरूर ध्यान रखना चाहिए कि मंजिल पायदान नहीं, मंजिल पायदानों से परे है। अगर यह लक्ष्य में आ गया तो दुर्गम नयवाद में आप उलझेंगे नहीं और महत्वपूर्ण जीवन को साकार करते हुए आगे बढ़ सकेंगे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

संस्कार सौरभ

धर्म स्थान में विशेष

-सजग, नीमच

धार्मिक क्रिया करने या साधु-साध्वियों के ठहरने का स्थान तथा विवेक का अर्थ है समझदारी। अधिकांश लोग धर्म स्थान पर जाकर अपनी अनुकूलता के अनुसार धार्मिक क्रिया करते हैं किंतु कुछ लोग ऐसे कार्य कर देते हैं जो धार्मिक स्थान की मर्यादा के विपरीत होते हैं। धार्मिक स्थान का मुख्य उद्देश्य कर्मनिर्जरा तथा आत्मशुद्धि करने का होता है। हम सभी के लिए यह आवश्यक है कि जब भी धार्मिक स्थल पर जाएँ तो इन मुख्य बातों का ध्यान रखें-

1. मन, वचन तथा काया से धर्म स्थान पर ही रहें।
2. सचित्त वस्तु साथ लेकर ना जाएँ।
3. अचित्त वस्तु का विवेक रखें अर्थात् अतिआवश्यक वस्तुएँ ही साथ लेकर जाएँ।
4. साधु-साध्वियों को देखते ही वंदन, नमस्कार करें।
5. मन में सांसारिक कार्यों या भौतिक सुख व पदार्थों के विषय में विचार ना करें।
6. आत्मशुद्धि तथा धर्म क्रिया का ही लक्ष्य रखें।
7. आपस में सांसारिक जीवन की बातें ना करें।
8. शालीनता तथा सभ्यता का परिचय दें।
9. शालीन परिधान (वस्त्र) पहनकर जाएँ।
10. अनुकूलता हो तो मोबाइल, सेल वाली घड़ी घर पर ही रखकर जाएँ अथवा धर्म स्थान से बाहर रखें।
11. प्रदर्शन के उद्देश्य से महंगे आभूषण तथा परिधान ना पहनें।
12. धर्म स्थान पर सामायिक करने का लक्ष्य रखें।
13. उठने-बैठने तथा चलने में विशेष सावधानी रखें, जिससे जीवों की रक्षा हो सके।
14. धर्म स्थान पर बैठते समय यह ध्यान रखें कि जीव हिंसा ना हो तथा किसी अन्य को असाता ना पहुँचे।
15. धर्म स्थान पर शांतिपूर्वक बैठें।
16. ज्ञानचर्चा तथा धर्मचर्चा का लक्ष्य रखें।
17. परफ्यूम, इत्र या अत्यधिक सुगंधित तेल का प्रयोग करके ना जाएं।
18. महिलाएँ श्रृंगार (मेकअप) करके ना जाएँ।
19. घर से धर्म स्थान की दूरी कम हो तो वहाँ पहुँचने के लिए वाहन का उपयोग ना करें।
20. धर्म स्थान में समय सीमा का विशेष ध्यान रखें।

श्रमणोपासक

"हमारा विवेक ही हमारा गुरु है। मन के हाथी को विवेक के अंकुश की जरूरत होती है। - शेक्सपियर

संस्कार सौरभ

आत्मा के पतन से बचाता है विवेक

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

जीवन का ताना-बाना जन्म-जन्मान्तरों में उलझा हुआ है। इसे सुलझाने के लिए तीर्थंकर प्रभु ने एक महत्त्वपूर्ण दृष्टि दी है, जिसका नाम है विवेक। जीवन में विवेक उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना शरीर के लिए स्वास्थ्य। विवेक का अर्थ है भले-बुरे का ज्ञान कराने वाली निर्मल बुद्धि अर्थात् मेरे लिए क्या हितकर है इसका बोध कराने वाली दृष्टि। यह भी सत्य है कि आँख का अंधा संसार में सुखी हो सकता है, पर विवेक का अंधा कभी सुखी नहीं हो सकता। उपयोगशून्य क्रिया का नाम ही अविवेक है। क्रिया करते हुए उसी में उपस्थिति रखना विवेक है और अनुपस्थिति अविवेक है। विवेकी मनुष्य में गुण उसी प्रकार सुन्दरता प्राप्त करते हैं जैसे सोने में जड़ा हुआ रत्न। अत: विवेक को अपना शिक्षक बनाएँ। विवेकपूर्ण जीवन पापों से बचाता है।

विवेक हमारा संस्कार है, विवेक हमारी शान है।
विवेक से ही बच सकते हैं, 84 चक्र की खान से।।

विवेक जीवन रूपी खेत में बीज के समान है। इस जीवन में जितने अच्छे बीज बोएँगे उतने ही खुशियों व आनन्द के फूल खिलेंगे। विवेक के क्षणों में ही हमारे धैर्य, शान्ति और समझदारी की कसौटी होती है। विपरीत परिस्थिति का निर्माण होना जीवन का हिस्सा है, पर परिस्थितियों का सकारात्मक रूप से सामना करना और धैर्य, शान्ति और समझदारी रखना ही जीवन जीने की कला है। गुरुजनों की चरण-वंदना करना ये तो धर्म का एक बहुत ही सामान्य चरण है। किसी के प्रति राग-द्वेष न रखना, वैर-वैमनस्य न रखना, दुश्मन के प्रति भी प्रेम बनाए रखना ही असली धर्म है। धर्म वही है जो हमारे आत्मा के आभामण्डल को निर्मल बनाए, लोगों के दिलों में जगह बनाए, आत्मा को पतन से बचाए। आत्मा का पतन खाने-पीने या ऐशो-आराम की दो चार चीजों को अपनाने से नहीं होता है बल्कि क्रोध, कषाय, राग-द्वेष और वैर-वैमनस्य से होता है। दुनिया में हर किसी को कुछ दीप जलाने चाहिए, कुछ फूल खिलाने चाहिए, जिनकी रोशनी एवं खुशबू भले ही सारी दुनिया तक न पहुँचे, लेकिन हमारे आस-पास के आभामण्डल को तो आनंदित व प्रकाशित करे।

संघर्ष गति का होता है, सीढ़ियों का नहीं।
संघर्ष दृष्टि का होता है, पीढ़ियों का नहीं।।
गति बदल जाए, सीढ़ियाँ बदलने की जरूरत नहीं।
दृष्टि बदल जाए, पीढ़ियाँ बदलने की जरूरत नहीं।।

यह जीवन बहुत छोटा-सा है। न जाने कब ये चंद साँसों का सफर खत्म हो जाए। जीवन जीने की अनुपम दिव्य दृष्टि है विवेक। चाहे कोई घटना प्रिय हो या अप्रिय, परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, जीवन में चाहे लाभ हो या हानि, सत्कार मिले या तिरस्कार, निन्दा हो या प्रशंसा; किसी भी परिस्थिति में व्याकुल न होकर सहजता से उसे स्वीकार करना ही विवेक है। जहाँ विवेक होता है वहाँ शिकायत नहीं होती है। गृहस्थ हो या संन्यासी, सभी में विवेक दृष्टि होना अनिवार्य है। जिनके पास विवेक दृष्टि नहीं होती वे जीवन में घोर संताप और अशांति का अनुभव करते हैं।

जीवन बहुमूल्य सम्पदा है। इसका मूल्यांकन वही कर सकता है जिसके जीवन में विवेक का दीप प्रज्ज्वलित हो गया हो। अक्सर यही होता है कि जिंदगी बीत जाती है, लेकिन हम में विवेक नहीं आता। जीवन का आनन्द लेने के लिए जागना अनिवार्य है। भगवान

महावीर का कथन है– 'जन्म और मृत्यु के बीच जीवन का जो अत्यल्प समय है उसे यूँ ही सोने में गँवाना उचित नहीं है। मानव जन्म तो नींद से जागने का परम अवसर है। जागने के लिए कोई विशेष उपक्रम की जरूरत नहीं है, सिर्फ अन्तर्द्वार को खोलना है। बाहर सूरज मौजूद है। अत: अंतस् के द्वार खोलने का श्रम करें।' जिसका अंतस् सोया हुआ है वह जागते हुए भी सोया है और जिसका अंतस् जागा हुआ है वह सोते हुए भी जाग रहा है। अंतस् की आँखों का खुल जाना ही जागृति है। भीतर की बंद आँखों का खुल जाना ही जागृति है। भीतर की बंद आँखों को खोलने के लिए श्रम तो करना ही होगा। जितने जल्दी जाग जाए उतना ही अच्छा है। यदि जागना है तो जागे हुए व्यक्ति का साथ करना चाहिए। जैसे संगीत सीखने के लिए संगीतज्ञ का साथ चाहिए। जागृत व्यक्ति का एक वचन भी जागृति ला सकता है। एक वचन सुनकर ही वाल्मीकि लुटेरा जागा था और एक वचन सुनकर ही धन्ना-शालिभद्र जी ने गृहस्थ का त्याग किया था।

जब भी मोहनिद्रा में सोई हुई कोई आत्मा जागती है तो सर्वप्रथम उसकी दृष्टि बदलती है। दृष्टि के बदलने से सोचने, समझने का ढंग भी बदल जाता है। इस तरह जीवन की दशा और दिशा दोनों बदल जाते हैं। जब आत्मा भीतर से जागती है तो बाह्य घटनाओं का मूल्य स्वत: ही कम हो जाता है। जैसे साँप अपनी केंचुली को छोड़कर आगे बढ़ जाता है वैसे ही जागृत आत्मा बाहर से भीतर की ओर बढ़ जाती है और जीवन का सूर्योदय हो जाता है। एक बार आत्मा जागृत हो जाने के पश्चात् उससे भूलें नहीं होती।

अमावस किस माह में नहीं आती।
थकावट किस राह में नहीं आती।।
संसार में कोई बतावे तो सही।
समस्या किस राह में नहीं आती।।

जीवन एक बाजी है, जिसमें हार-जीत होना हमारे हाथ की बात नहीं है, लेकिन बाजी को सही तरीके से खेलना हमारे हाथ में है। मनोबल जितना प्रबल होगा, आत्मा की अनन्त शक्ति के साथ हमारा संबंध उतना ही गहरा होता जाएगा और हम अपनी मंजिल को सहजता से प्राप्त कर पाएँगे। श्रमणोपासक

भक्ति रस

मुँहपत्ती

-धीरज मेहता (अधिवक्ता), डूंगला

श्रावक की असल संपत्ति है,
संयम की साथी मुँहपत्ती है,
मुँहपत्ती संयम का शृंगार है,
करती मोक्ष का सपना साकार है,
मुँहपत्ती श्रावक का विवेक है,
मुँहपत्ती के लाभ अनेक हैं,
मुँहपत्ती जीवदया का साधन है,
जीवदया का संदेश देते आगम हैं,
मुँहपत्ती लगाना श्रावक का धर्म है,
मुँहपत्ती लगाकर बोलना उत्तम कर्म है,
मुँहपत्ती कर्मों को खपाती है,
मुँहपत्ती पुण्यों को कमाती है,
मुँहपत्ती का रहस्य न समझें जब लोग,
तब कोरोना में मुँहपत्ती दुनिया को
अपनी कीमत बताती है।
दुनिया की होड़ दौड़ में तो
संकट बढ़ते ही जाएँगे,
मुँहपत्ती लगा स्थानक जाइए श्रावक जी!
सारे प्रश्नों के उचित हल मिल जाएँगे।।

श्रमणोपासक

> **साधु भगवन्त 'दया पालो' की प्रेरणा एवं आशीर्वाद हमें देते हैं। यह सच है कि धर्माराधना की चाबी यतना है और धर्म जीवन है।**

धर्म स्थान पर हमारा विवेक

-पदमचन्द गाँधी, जयपुर

वह राष्ट्र धन्य होता है जिसके नागरिकों के मजबूत, सुदृढ़ एवं सांस्कृतिक मूल्य होते हैं। सांस्कृतिक मूल्य जीवन मूल्यों में अभिवृद्धि करते हैं, जिनके आधार पर अध्यात्म के धरातल पर कदम बढ़ाते हुए, आत्मकल्याण करते हुए विश्वकल्याण को साकार करते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों का आधार है-हमारी धार्मिकता। मैं धार्मिक तो हूँ, लेकिन मुझमें धार्मिकता नहीं है। धार्मिक होना मूल्यवान है, लेकिन उससे ज्यादा मूल्यवान है धार्मिक बनना। धार्मिकता के लिए व्यक्ति को धर्म स्वीकार करना पड़ता है, धर्म आचरित करना पड़ता है, धार्मिक मूल्यों को ग्रहण करना पड़ता है। इसके लिए सर्वोत्तम साधन है हमारे धार्मिक स्थल, आराधना स्थल और स्थानक। आराधना स्थल के परमाणु पुद्गल, जो जिनवाणी से ओतप्रोत होते हैं, जहाँ गुरु-भगवन्तों की अमृतमयी वाणी की सतत् धारा बहती है, जहाँ पर जप, तप, आराधना, स्वाध्याय, धार्मिक अनुष्ठान आदि क्रियाएँ होती हैं, जिनके प्रभाव से वे स्थल पवित्र, निर्दोष, साताकारी होते हैं तथा जिनकी पावनता एवं शुद्धता हमारे मन को ऊर्जा से भर हमारे भीतर सकारात्मकता उत्पन्न करती हैं, जिनसे हमारे विचार, विकार रहित, पाप रहित एवं कषाय रहित बनते हैं। इसलिए कहा है-

चिन्ताहरण धर्म स्थान है, प्रवचन श्रवण इनाम।
कर्म खपाने की जगह, चिन्तामुक्त परिणाम।।
पावन धर्म का द्वार है, मिले ज्ञान भण्डार।
पावे असीम गुरुकृपा, पावे पद निर्वाण।।

ऐसे पावन पवित्र स्थान को **'स्थानक'** कहते हैं, जहाँ पर साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका धर्म-आराधना करते हैं। ऐसे स्थान पर स्थिरता प्राप्त होती है, जो हमें गुणों में स्थिर करती है। जहाँ देव, गुरु, आगम एवं धर्म-आराधना होती है, वह स्थानक होते हैं। स्थानक वे होते हैं, जहाँ पर शुभभाव के नये अक्षत हो, जिनसे सामायिक में उत्तम स्वास्तिक हो और स्वाध्याय के बोलों की ध्वनि उच्चारित होती हो, यही स्थानक होते हैं। स्थानक सच्ची आराधना के स्थान होते हैं, जहाँ पर अहिंसा, विवेक एवं यतना का पूरा ध्यान रखा जाता है। जिनेश्वर देव ने दया एवं करुणा को ही आराधना कहा है। इसीलिए साधु भगवन्त **'दया पालो'** की प्रेरणा एवं आशीर्वाद हमें देते हैं। यह सच है कि धर्माराधना की चाबी यतना है और धर्म जीवन है। जिनेश्वर देव की आराधना ही सच्ची आराधना है, जिससे चित्तवृत्तियों को मोड़कर उनका शमन किया जाता है।

अपना स्थानक, चेतन में हो वास हमारा।
हम है स्थानकवासी, स्थानक में हो वास हमारा।।

प्रश्न उठता है ऐसे पवित्र स्थलों पर कैसे जाया जाए? धार्मिक स्थल पर जाने के नियम होते हैं, मर्यादाएँ होती हैं, जिनका पालन साधक को करना आवश्यक है। आराधना स्थल शादी के मण्डप नहीं होते जिनको मण्डप की तरह सजाया जाता है। जैसे कई जगहों पर देखने को मिलता है। स्थानक तो ऐसे शान्त, निर्मल, पावन स्थान होते हैं, जिनका सीधा सम्बन्ध आत्म-आराधना से, मन की एकाग्रता से एवं अनुशासन से जुड़ता है। ये वे नियम

हैं जो हमें मर्यादित करते हैं। ऐसी मर्यादाएँ, नियमों की पालना ही हमें एक नई पहचान देती है। सिक्ख लोग गुरुद्वारे में जाएँ या मुसलमान लोग दरगाह, मस्जिद में जाएँ अथवा ईसाई लोग चर्च में जाएँ, वहाँ उनके द्वारा पूर्णरूप से नियमों का पालन किया जाता है। लेकिन हम हमारे धर्मस्थान में कैसे जाते हैं? सोचने का बिन्दु है। जैन स्थानक में, आराधना भवन में जाने के लिए प्रभु महावीर ने हमें श्रेष्ठ एवं उपयोगी नियम दिए हैं, जिन्हें श्रावक-श्राविका **अभिगम** (उववाई सूत्र) के रूप में तथा श्रमणों के लिए **'शैय्याषणा'** (उत्तराध्ययन सूत्र सामाचारी अध्ययन के अन्तर्गत) दिए हैं। जिनके द्वारा हमें अपनी मर्यादाओं का पालन करना है। पाँच अभिगम में स्पष्ट किया है-

सचित्त त्याग अचित्त रख, उत्तरासंग कर जोड़।
कर एकाग्र चित्त को, सब झंझटों को छोड़।।

धर्म स्थान पर जाने के लिए हमें निम्न बातों का विवेक रखना होगा, जिनसे हम सच्चे अर्थों में श्रमणोपासक बन पाएँगे-

(1) धर्म स्थानक में 'खाली' होकर जाएँ :

कोरे कागज पर हम कुछ भी लिख सकते हैं। लिखे को पढ़ सकते हैं, समझ सकते हैं। भरे हुए पेज पर लिखने का कोई अर्थ नहीं होता। खाली बैग लेकर जाएँगे तो सामान भरकर ला सकते हैं, लेकिन भरे हुए बैग में हम कुछ नहीं ला सकते। कहने का अर्थ यह कि हमारे मन के अहंकार भाव, कषाय भाव, विकार, कुटिलता आदि के भावों को स्थानक के बाहर विसर्जित करके जाएँ तो हमारा चित्त, मन एवं मस्तिष्क हल्के होने से वहाँ पर फरमाई जाने वाली जिनवाणी, अमृतमयी वाणी हम ग्रहण कर सकेंगे। घर से जब आराधना स्थल जाएँ तब अहोभाव से जाएँ, जबरदस्ती नहीं। धर्म को जबरदस्त मानकर जाएँ, तभी वह गुणकारी होगा।

प्रभु महावीर ने इसके लिए उत्तम शब्द दिया है- निस्सिही-निस्सिही। इस शब्द का तीन बार उच्चारण करके ही प्रवेश करें। इसका अर्थ है बाह्य क्रियाओं का निषेध करता हूँ, आरम्भ-समारम्भ नहीं करूँगा, नहीं करवाऊँगा तथा न ही करने वाले का मन, वचन, काया से अनुमोदना करूँगा। सामान्य भाषा में मैं निर्विकार होकर जाऊँ क्योंकि मुझे सिद्धों को सिद्ध करना है, मलीनता को छोड़ना है, विलासिता से दूर रहना है। मुझे अपनी आत्मा के लिए जाना है, स्वयं के लिए जाना है। दूसरों को दिखाने के लिए या हाजिरी देने मात्र के लिए नहीं जाना है। ऐसा विवेक हमें रखना है। स्कूलों के बाहर लिखा होता है- **'ज्ञान के लिए प्रवेश, सेवा के लिए प्रस्थान।'** ऐसे ही हमारे स्थानक हैं, जहाँ **'ज्ञान एवं क्रिया'** की शिक्षा मिलती है तथा मानवता, परोपकार एवं आत्मोत्थान का पाठ सीखने को मिलता है। जिन्हें हम आचरित कर जीवन मूल्यों को साकार करते हैं।

(2) इलेक्ट्रिक उपकरणों से रहित जाना :

श्रमण एवं श्रावक की साधना के लिए सचित्त का त्याग बताया है। अहिंसा तथा यतना का ध्यान रखते हुए छह कायों को बचाने का प्रारब्ध करता है तथा स्वयं एवं स्थानक को निर्दोष रखने के लिए तथा किसी के 'संघट्टा' नहीं हो उसके लिए इन्हें वर्जित बताया है। सावद्य योग के त्याग के साथ-साथ ऐसे उपकरण बाधा भी उत्पन्न करते हैं। मोबाइल की घंटी प्रवचन को बाधित करती है और हमारा ध्यान भंग होता है। अतः साधु-सन्तों को वन्दन करते समय, चरणस्पर्श करते समय ये उपकरण (मोबाइल, सेल घड़ी, कार की चाबी, लैपटॉप इत्यादि) पूर्णतः वर्जित हैं। अतः हमें श्रमणों की संयम-साधना में सहायक बनना है। उनके दर्शन, वन्दन एवं पर्युपासना करनी है तो भूलकर भी ऐसे उपकरणों को धर्मस्थान पर न ले जाएँ, यही हमारा विवेक है।

(3) इलायची, पान, गुटखा इत्यादि सचित्त वस्तुएँ वर्जित हैं :

स्थानक जाते समय हमें सचित्त के त्याग का विवेक रखना है। कुछ लोगों की आदत मुखवास रखने की, खाने की होती है। इनको सचित्त माना गया है। इनके

साथ बादाम, बीजयुक्त दाख, फूलमाला, लालटेन, चालू टॉर्च आदि का पूर्ण विवेक रखना है। जितनी भी सचित्त वस्तुएँ हैं उनसे दूर रहना है, यही हमारा विवेक है। ये सब धर्मस्थान में वर्जित हैं। श्रमणों के संयम की पुष्टि के लिए हमें इनका विवेक रखना है और सहयोगी बनना है।

(4) साधना का विष है विभूषा :

पाँच अभिगम में अचित्त के विवेक का बहुत महत्त्व है। 'विभूषा' का अर्थ है वस्त्र विवेक। अत: शरीर व वस्त्रादि एवं अलंकारों का उपयोग विवेकपूर्ण हो। धर्म स्थानक में जाते समय श्रावक एवं श्राविकाओं के द्वारा इनका पूरा विवेक रखना जरूरी है। देखने में आता है कि स्त्रियाँ शरीर और वस्त्रादि की सजावट के साथ स्थानक में प्रवेश करती हैं। इससे ब्रह्मचारी साधकों का वेद मोहनीय कर्म उदय में आने की शंका बनी रहती है तथा श्रावकों की भी चक्षुरिन्द्रिय दूषित हो सकती है साथ ही भोग और काम का आकर्षण बढ़ने से मन में विकार एवं दूषित विचार आ सकते हैं। इसलिए दशवैकालिक सूत्र 6/65 में कहा है– **'मेहुणा उवसंतस्स वि विभूसाए कारियं'**।

अर्थात् विभूषा भोगियों का श्रृंगार एवं भूषण है, पर भोग त्यागी मुनियों के लिए दूषण है। विभूषा से शरीर का सौन्दर्य बढ़ता है, इन्द्रियों में उत्तेजन आती है और सुन्दरता के कारण देह आकर्षण का केन्द्र बन जाती है। विभूषा मोहभाव को जागृत कर साधक को प्रमत्त बनाती है और सुगति मार्ग में अवरोध करती है। अत: हमें श्रमणों के संयम में सहायक बनना है और दर्शनार्थी बन्धुओं के चक्षुओं में विकार उत्पन्न नहीं करने हैं। इसलिए ऐसे अलंकार एवं तड़क-भड़क के वस्त्रों का विवेक रखना है। साधना के लिए सादे एवं ढीले वस्त्रों का उपयोग करना है। जिनसे मन सात्त्विक बन सके। हमें शरीर की बाह्य विभूषा को छोड़कर ज्ञानादि गुणधर्म वाली भाव विभूषा को ग्रहण करके लोक और लोकोत्तर दोनों को गौरवशाली बनाने का प्रयास करना है।

(5) जिज्ञासा एवं इच्छाकार विवेक :

श्रावक को कई प्रकार की जिज्ञासाएँ हो सकती हैं, जिनके लिए वह प्रश्न करता है। ज्ञानवृद्धि के लिए जिज्ञासा का होना जरूरी है, जिससे शंकाओं का समाधान किया जा सके। जिज्ञासा प्रकट करने का विवेक भी श्रावक को होना जरूरी है। कोई ज्ञान सीखना चाहता है तो विनम्रता के साथ कहे– 'आपके साता हो, अनुकूलता हो, आपके पास समय हो तो मेरे प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करें या अमुक ज्ञान सिखाने की कृपा करें।' ऐसे भाव आपके ज्ञान को पुष्ट करते हैं तथा गुरु-भगवन्तों का प्रियपात्र बनाते हैं।

(6) की गई भूल के लिए खेद प्रकट करना :

'मिथ्याकार' मानव का स्वभाव है। गुरु-भगवन्तों की पर्युपासना करते समय, प्रवचन के दौरान यदि कोई भूल हो गई हो, गलती हो गई हो तो उसे छुपाओ मत, उसके लिए मिथ्यावचन मत बोलो, उनका निवेदन भाव के साथ खेद प्रकट करके समाधान करो। यह श्रावक का विवेक है।

(7) वन्दन एवं अभ्युत्थान विवेक :

अभिगम स्पष्ट करते हैं कि वन्दना दोनों हाथों से अंजली पुट बनाकर जघन्य वन्दना, फिर अनुकूलता देख मध्यस्थ व उत्कृष्ट वन्दना करें। वन्दना विनय का सूचक है। वन्दना समर्पण एवं श्रद्धा के साथ की जाती है। प्रवचन स्थल पर बड़े महाराज के आने पर हाथ जोड़, सिर झुकाकर आदर-सत्कार करें, सम्मान करें, विनयभक्ति करें। इस नियम से बड़ों के साथ कभी गलत व्यवहार नहीं होगा। यही हमारा विवेक है।

(8) उत्तरासंग एवं तहक्कार विवेक :

गुरुदेव के वचनों को तहत्ति कहकर स्वीकार करें। वचनों को हर्षित होकर आचरण में लाएँ। अनुकूल मानें, प्रतिकूल नहीं मानें। गुरु जो कहें सो करें। गुरुदेव तो आत्मा से परमात्मा बनाने में बाधक दोष दूर करने वाले होते हैं। अत: उनकी आज्ञा स्वीकार करके चलना चाहिए। जब भी गुरुदेव से बात करें या उनके पास

जाएँ तो खुले मुँह बात नहीं करें। सदैव मुँहपत्ती का उपयोग जरूरी है। आठ पट वाली 21 अंगुल लम्बी तथा 16 अंगुल चौड़ी मुखवस्त्रिका का उपयोग करने से वायुकाय के जीवों की विराधना से बचते हैं। इससे हम हिंसा से बचेंगे, मुँह से आने वाली बदबू दूसरों तक नहीं जाएगी। मास्क की तरह काम करती है मुँहपत्ती। यह कीटाणुओं को दूसरों तक नहीं जाने देती। अत: इसका विवेक अवश्य रखें।

(9) पर्युपासना एवं उपसम्पदा विवेक :

यह जीवन विकास का आगम सूत्र है। अगर अपने जीवन को ऊपर उठाना चाहते हैं तो बड़ों के पास, गुरु-भगवन्तों के पास बैठें। तत्त्वों एवं धर्म के मर्म को जानने के लिए गुरु के पास बैठकर तत्त्वों के प्रति भक्ति, ज्ञान के प्रति जिज्ञासा आदि भावों को प्रकट कर सकते हैं तथा समाधान प्राप्त कर सकते हैं। गुरु के पास बैठने पर अनावश्यक क्रियाएँ नहीं होंगी। अनुशासित होकर बैठने से गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान से जीवन का विकास होगा। गुरु के पास बैठने से बुराई आएगी ही नहीं। पर्युपासना तीन प्रकार से होती हैं- कायिक, वाचिक और मानसिक अर्थात् काया से स्थिर मुद्रा में, वचन के अनुसार जो जैसा कहे वैसा ही उसे मानना तथा मानसिक पर्युपासना के अनुसार जिनवाणी श्रवण हेतु मन में प्रीतिभाव और तीव्र अनुराग एवं श्रवण की प्यास का होना है।

(10) श्रवण की प्यास एवं मन की एकाग्रता :

सन्त का समागम पारसमणि की तरह होता है। उनमें हमें लोहे से सुवर्ण बनाने की क्षमता है। आपके एक-एक शब्द को ध्यान से सुनें। चित्त को उन्हीं की वाणी में एकाग्र रखने से जिनवाणी भीतर उतर जाएगी तथा उसमें रस भी आएगा। अत: गृहस्थ पापकारी कार्यों से मन हटाकर जिनवाणी में अपने मन को स्थिर करे। मन की चंचलता आपको स्थानक में बैठने पर भी भटकाती है। द्रव्य से तो आप वहाँ होते हैं, लेकिन मन के भावों से आप बाहरी दुनिया में भटकते रहते हैं। अत: मन को स्थिर रखकर श्रवण का लाभ लेवें। श्रवण की यदि प्यास है तो आप समय पर प्रवचन स्थल पर गुरु-भगवन्तों के पास पहुँचेंगे। मन की एकाग्रता से अपनी पाँचों इन्द्रियों को संयमित कर सम्पूर्ण ध्यान जिनवाणी पर केन्द्रित कर पाएँगे। इसलिए कहा है प्रवचन में प्रमाद नहीं करें। यही सद्विवेक है। श्रमणोपासक

“ इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म ध्यान, आराधना स्थल पर जाने से पूर्व एक चिन्तन अवश्य करें। अहोभाव से उपरोक्त आगम संगत तथ्यों को ध्यान में रखकर धर्मस्थान में प्रवेश करें। ऐसी क्रियाओं के पालन से ही सच्चे श्रमणोपासक की पहचान बनती है। आप गुरु के प्रिय बनते हैं। कहते हैं मणि, मन्त्र, माला से ज्यादा शक्ति आशीर्वाद में होती है, जो गुरु भगवन्तों के भीतर से निकलता है और फलीभूत होता है। धन्य हैं वे श्रावक जो गुरु के दिल में बसते हैं। अत: धर्मस्थान में जाते समय अपने विवेक का उपयोग अवश्य करें।

“ साधुओं के लिए कहा गया है- तुम स्वाद के लिए भोजन करोगे तो अनेकानेक मिर्च-मसाले जोड़ते चले जाओगे, क्योंकि स्वाद में मनमर्जी की चीजें चाहिए। कई भाई कहते हैं- चाय अपने हाथ की पसन्द है, दूसरे के हाथ की पसन्द नहीं। कई व्यक्ति ऐसे होंगे जो दूसरों के हाथ की चाय पसन्द करते होंगे। साधु जीवेषणा में नहीं पड़े, इसलिए कहा गया है कि उसे रांधन-पाचन का कार्य नहीं करना है। वह दूसरे घरों में जाएगा, जहाँ साधु की मालिकी है नहीं, अत: दूसरा जो देगा, जो-कुछ बहराएगा, उसमें उसे सन्तोष करना पड़ेगा। संतोष नहीं तो अध्यवसाय विचलित होंगे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

> जैन धर्म में ऐसे धर्म स्थान में प्रवेश के नियमों व मर्यादाओं को 'अभिगम' कहा जाता है।

धर्म स्थान की आवश्यकता व उपयोग

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

धर्म स्थान अर्थात् वह स्थान जहाँ धर्माराधना की जाती है। वैसे तो धर्माराधना निज निवास स्थान पर भी की जा सकती है, लेकिन निवास स्थान से पृथक् किसी स्थान विशेष पर करने से धर्माराधना अधिक शुद्ध, निर्दोष रूप में की जा सकती है। सभी धर्मों में धर्माराधना के लिए एक विशेष स्थान निश्चित किया गया है, जिसे सनातन में मन्दिर, बौद्ध में मठ, ईसाई में चर्च, इस्लाम में मस्जिद एवं सिख धर्म में गुरुद्वारा कहा जाता है। ऐसे ही धर्माराधना के स्थान को जैन धर्म में उपाश्रय, स्थानक, पौषधशाला आदि नामों से पुकारा जाता है।

तीर्थंकरों के समय से नगर में पृथक् धर्मस्थान होने का वर्णन मिलता है। उस समय राजाओं के राजमहलों में पृथक् धर्म स्थान का भी उल्लेख मिलता है। जैसे- कृष्ण वासुदेव ने अपनी पौषधशाला में पौषधयुक्त तेला तप किया था।

प्राय: सभी धर्म स्थानों में प्रवेश हेतु नियम, मर्यादाएँ होती हैं। जैन धर्म में ऐसे धर्म स्थान में प्रवेश के नियमों व मर्यादाओं को **'अभिगम'** कहा जाता है। धर्म स्थान में प्रवेश करने के नियमों से पहले हमें धर्म स्थान की आवश्यकता के बारे में समझना होगा। धर्म स्थान की आवश्यकता क्यों होती है? धर्म स्थान का निर्माण क्यों करना होता है? धर्म स्थान में क्या-क्या विवेक रखना चाहिए?

धर्म स्थान श्रावक-श्राविका वर्ग की आवश्यकता है, न कि साधु-साध्वीवृंद की। तीर्थंकरों ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की है- आगार धर्म एवं अणगार धर्म। प्राचीनकाल में 'घर' को अगार या आगार भी कहा जाता था। यहाँ अणगार धर्म का अर्थ आगार रहित या बिना घर के मान सकते हैं। अणगार धर्म में घर का त्याग किया जाता है। साधु जीवन में अणगार धर्म का पालन किया जाता है। साधु-साध्वियों का कोई घर नहीं होता है। अत: उनके निमित्त से कोई भवन, स्थानक आदि न तो खरीदने चाहिए और ना ही निर्माण करवाने चाहिए। संत-सती वर्ग विचरण के दौरान किसी निर्दोष कल्पनीय स्थान की गवेषणा कर विराज सकते हैं। अगर कोई कल्पनीय हो तो गृहस्थ के घर पर भी मर्यादित समय के लिए विराज सकते हैं।

धर्म का एक और प्रकार है आगार धर्म। घर में रहते हुए आत्मकल्याण करने वाला धर्म आगार धर्म है। इसमें घर का पूर्ण रूप से त्याग करना आवश्यक नहीं है। इसमें कई तरह के आगार रखकर धर्म का शुद्ध पालन किया जा सकता है। धर्म स्थान की विशेष आवश्यकता श्रावक-श्राविका वर्ग को होती है ताकि घर के बजाय धर्म स्थान में धर्माराधना की जाए तो अधिक शुद्धता व निर्दोषता रहती है और कुछ समय के लिए हम परिवार एवं परिजनों से दूर रहकर, सांसारिकता से दूर रहकर मोह, ममता को कुछ अंश में कम कर सकते हैं। श्रावक-श्राविकाओं को नियमित रूप से धर्म स्थान में संवर, पौषध, सामायिक आदि क्रियाएँ करने का लक्ष्य रखना चाहिए। इससे प्रतिदिन साफ-सफाई होती रहेगी,

जिससे मकड़ी के जालों एवं अन्य कई प्रकार के छोटे-छोटे जीवों की उत्पत्ति व विराधना नहीं होगी। यदि धर्म स्थान स्वच्छ है तो साधु-साध्वियों के पधारने पर ये स्थान उनके लिए साताकारी एवं कल्पनीय रहेंगे।

धर्म स्थान का उपयोग नियमपूर्वक करें एव प्रवेश के लिए पाँच अभिगम का पूर्णत: पालन सुनिश्चित करें। इससे मन, वचन, काया की निर्मलता व शुद्धता बनी रहेगी एवं बंधे हुए कर्म शीघ्र ही क्षय हो सकते हैं।

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं, धर्म क्षेत्रे विनष्यति।
धर्म क्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

अर्थात् अन्यत्र किसी भी स्थान पर किए गए पाप धर्म स्थल पर जाकर नष्ट हो जाता है, परन्तु धर्म स्थल में किया हुआ पाप वज्र के समान जीव का पीछा करता है। अत: जहाँ कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं, वहाँ कर्मबंध क्यों किया जाए?

धर्म स्थान में आकर हमें क्या करना और क्या नहीं करना, इस बात का विवेक रखना आवश्यक है। धर्म स्थान हमारे पूर्व पाप कर्मों के विसर्जन का स्थान है, लेकिन नवीन कर्मों के बंध का नहीं। अत: धर्म स्थान का उपयोग हम कर्मनिर्जरा के लक्ष्य से करें।

धर्म स्थान में यदि चारित्रात्माएँ विराजित हों तो नित्य प्रात: उनके दर्शन कर सुख-साता की पृच्छा एवं जिनवाणी श्रवण का लक्ष्य रखना चाहिए। चारित्रात्माओं के समय की अनुकूलता होने पर उनके सान्निध्य में नया ज्ञान सीखना चाहिए। नियमित स्वाध्याय एवं ज्ञानार्जन में अगर कोई जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो उसे स्पष्ट रूप से लिखकर रखें ताकि साधु-साध्वी आदि का सान्निध्य मिले तो समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिल जाना हमारे लिए बड़ा ही दुर्लभ एवं उत्तम सुअवसर है, लेकिन ऐसे सुअवसरों का लाभ उठाने में भी विवेक आवश्यक है। ध्यान रहे, संयमी जीवन में कई दैनिक क्रियाएँ आवश्यक होती हैं साथ ही काल की भी मर्यादा होती है। हमारे कारण चारित्रात्माओं की व्यस्ततम जीवनचर्या में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होनी चाहिए।

साधु-साध्वियों को नित्य स्वाध्याय, प्रवचन, प्रतिक्रमण, गोचरी-पानी आदि सहित कई नियमित कार्यों के साथ सेवा कार्य का भी दायित्व रहता है। इसलिए उनके समय की अनुकूलता को ध्यान में रखकर ही धर्म स्थान में पहुँचने का लक्ष्य रखना चाहिए।

काल का भी विवेक अनिवार्य है। असमय, बार-बार धर्म स्थान में आना-जाना उचित नहीं है। साधुओं के विराजने के समय अकेली बहिन और साध्वियों के विराजने के समय अकेले भाई को धर्म स्थान में नहीं जाना चाहिए। प्रात: सूर्योदय के पश्चात् ही दर्शन-वंदन करने का लक्ष्य रहे एवं दोपहर पश्चात् भी काल मर्यादा के अनुसार ही जाना चाहिए।

धर्म स्थान पर हमें नये कर्मों के बंध से बचना चाहिए। ऐसे स्थान पर आकर भी यदि हमारा मन परिवार, व्यवसाय एवं सांसारिक प्रपंचों में भटकता रहा तो धर्म स्थान में आने का कोई औचित्य नहीं रहेगा।

इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। दो मित्र थे, दोनों ही जैन परिवार से। एक दिन अवकाश था तो एक मित्र ने कहा- आज फिल्म देखने चलें। इस पर दूसरा बोला- नहीं, आज तो हम सामायिक करेंगे। दोनों मित्र एक-दूसरे से सहमत नहीं हुए तो दोनों अपने-अपने इच्छित स्थान पर चले गए। फिल्म देख रहे मित्र के मन में विचार आया कि मैं व्यर्थ ही समय बर्बाद कर रहा हूँ। कुछ समय के मनोरंजन के लिए सामायिक जैसी साधना से वंचित रह गया। दूसरी ओर सामायिक में बैठे मित्र ने विचार किया कि क्यों मैं सामायिक करने स्थानक में आ बैठा? मित्र के साथ फिल्म का आनन्द लेता तो कितना अच्छा होता।

ऐसे समय में हम केवल शारीरिक रूप से धर्म कर रहे हैं, लेकिन आत्मिक रूप से कर्मों का बंध हो रहा है। सामायिक में बैठे मित्र से ज्यादा तो फिल्म देख रहे मित्र ने कर्मों की निर्जरा कर ली। क्या मिला धर्म स्थान में आने से? अत: धर्म स्थान पर मन, वचन, काया तीनों ही धर्म में लीन हो जाना चाहिए। धर्म स्थान पर भी यदि संयमित नहीं रहे तो निष्कर्ष वही **'ढाक के तीन पात'** रहेगा।

पाँच अभिगम पालें

-डॉ. दिलीप धींग, बंबोरा
शोध-प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शसुन जैन कॉलेज

प्रभु दर्शन में, मुनि दर्शन में, अविनय दूषण टालें।
पाँच अभिगम पालें।।ध्रुव।।
प्रबल पुण्य से मिले योग का पूरा लाभ उठा लें।
पाँच अभिगम पालें।।ध्रुव।।
त्याग सचित्त का बोध कराता, जीवाजीव को जानें।
धर्म अहिंसा तत्त्व ज्ञान से, निज चेतन पहिचानें।
प्राणीमात्र के प्रति करुणा का मंगल भाव जगा लें।
पाँच अभिगम पालें।।1।।

जो अचित्त है उन चीजों का भी विवेक रखना है।
मान और सम्मान छोड़कर, आत्म-स्वाद चखना है।
भारमुक्त तन-मन से होकर आगे कदम बढ़ा लें।
पाँच अभिगम पालें।।2।।
ज्यों ही दर्शन का क्षण आए, उत्तरासंग लगाएँ।
देव, गुरु और धर्म के प्रति, श्रद्धाभाव जगाएँ।
भाषा समिति, वचन गुप्ति से, जीवन सफल बना लें।
पाँच अभिगम पालें।।3।।
अहोभाग्य दर्शन गुरुवर के, स्वत: हाथ जुड़ जाएँ।
बना अंजलि शीश लगाकर वन्दन से झुक जाएँ।
विनयभाव से आत्मभाव के सुर संगीत बजा लें।
पाँच अभिगम पालें।।4।।

गुरुदेव की पावन निश्रा, मन एकाग्र बनाएँ।
धर्मध्यान की, आत्मज्ञान की, बातों में रम जाएँ।
उनके बतलाए आदर्शों को जीवन में ढालें।
पाँच अभिगम पालें।।5।।
पाँच अभिगम पाँच रत्न हैं, जीवन का सच्चा धन।
मर्यादा का बोध कराते, प्रगटाते अनुशासन।
पालें शिष्टाचार, बना लें तम सारे उजियारे।
पाँच अभिगम पालें।।6।।

तत्त्व ज्ञान

नैरयिक व परमाधार्मिक

15-16 सितम्बर 2023 अंक से आगे....

प्रश्न 1. बहुत पाप करने वाले जीव कहाँ जाते हैं?

उत्तर नरक गति में जाते हैं।

प्रश्न 2. पृथ्वियाँ कितनी हैं व उनके क्या नाम हैं?

उत्तर पृथ्वियाँ सात हैं- घम्मा, वंसा, सेला, अंजना, रिट्ठा, मघा और माघवई।

प्रश्न 3. इनके गोत्र गुण निष्पन्न नाम क्या हैं?

उत्तर रत्नप्रभा (काले रत्न की भयंकर प्रभा वाली), शर्कराप्रभा (तलवार जैसी तीक्ष्ण पत्थर वाली), बालुकाप्रभा (ऊष्ण रेती वाली), पंकप्रभा (लोही, माँस के कीचड़ वाली), धूमप्रभा (धुआँ वाली), तम:प्रभा (अंधकार वाली), तमस्तम:प्रभा (घोर अंधकार वाली)।

प्रश्न 4. रत्नप्रभा पृथ्वी कहाँ है?

उत्तर समभूमि के नीचे 1,80,000 (एक लाख अस्सी हजार) योजन की मोटी रत्नप्रभा पृथ्वी है।

प्रश्न 5. पहली पृथ्वी हम से कितनी दूर है?

उत्तर पहली पृथ्वी की छत पर ही हम रहते हैं।

प्रश्न 6. इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कितना क्षेत्र तिरछे लोक में है?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी का 900 (नौ सौ) योजन का क्षेत्र तिरछे लोक में है।

प्रश्न 7. शेष छ: पृथ्वियाँ कहाँ पर हैं?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी से असंख्यात योजन नीचे दूसरी पृथ्वी है। इस तरह एक-एक से असंख्यात योजन नीचे शेष पृथ्वियाँ हैं।

प्रश्न 8. नैरयिक जीव कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर नरकावास की दीवारों पर बिल के आकार के संवृत्त गवाक्ष बने हुए हैं। पापी प्राणी उन स्थानों में उत्पन्न होते हैं। वहाँ सब पर्याप्ति पूर्ण करने के बाद बिल के नीचे रही हुई कुम्भी में नीचे सिर ऊपर पैर करके गिरते हैं।

प्रश्न 9. नैरयिकों के माँ-बाप होते हैं या नहीं?

उत्तर नहीं, वे नैरयिक जीव कुंभियों में जन्मते हैं।

प्रश्न 10. नैरयिकों की कुंभियाँ कैसी होती हैं?

उत्तर तिजारा (अफीम) के डोडे की तरह पेट चौड़ा, मुँह संकड़ा, ऊँट की गर्दन की तरह टेढ़ी-मेढ़ी, घी की कुप्पी जैसी, जिसका मुँह संकड़ा और अधोभाग चौड़ा होता है। डिब्बे जैसी ऊपर-नीचे समान परिमाण वाली होती है।

प्रश्न 11. सात पृथ्वियों में कुल कितने नरकावास हैं?

उत्तर चौरासी लाख।

प्रश्न 12. प्रत्येक पृथ्वी में कुल कितनी कुंभियाँ हैं?

उत्तर असंख्येय कुंभियाँ हैं।

प्रश्न 13. प्रत्येक पृथ्वी में कितने नैरयिक हैं?

उत्तर असंख्येय।

प्रश्न 14. नैरयिक को नरक गति में क्या दु:ख है?

उत्तर केवल दु:ख ही दु:ख हैं, सुख कुछ भी नहीं है। क्षेत्र वेदना, परस्परोदीरित वेदना और परमाधार्मिककृत वेदना इतनी होती है कि जिसके सुनने मात्र से हृदय काँपने लगता है।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमश: श्रमणोपासक

अपने आप पर नियंत्रण कर लेना ही संयम है

-आचार्य श्री रामेश

धर्म का मूल है विनय

-उपाध्याय प्रवर

नीमच चातुर्मास समाचार

दृढ़ संयम की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।
सत्वचनों की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।।

76 मासखमण के प्रत्याख्यान, 360 लोच सम्पन्न, धर्मचक्र तप का भव्य आयोजन, 108 उपवास की तपस्या गतिमान

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)।

पुण्यवानी है आज हमारी, राम गुरु को ध्याते हैं।
हुक्मसंघ के अष्टाचार्यों की झलक इनमें पाते हैं।।

साधना के शिखर पुरुष, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रान्ति प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में साधना महोत्सव चातुर्मास में धर्माराधना, तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान एवं आगमसम्मत हृदयस्पर्शी प्रवचनों सहित विभिन्न ज्ञान शिविरों की शृंखला गतिमान है। देश-विदेश से श्रद्धालुओं का ताँता लगा हुआ है। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से अब तक 76 मासखमण के प्रत्याख्यान एवं लोच में क्या सोच कार्यक्रम में 360 कायाक्लेश तप हो चुके हैं। छोटे से बालक कलश पटवा ने लोच करवाकर गुरुभक्ति का परिचय दिया। धर्मचक्र तप आराधना में छोटे-बड़े सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर कीर्तिमान स्थापित किया। कर्मबन्ध और हमारा जीवन शिविर एवं मोक्ष आरोहण शिविर का सफल आयोजन हुआ। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, बहू मण्डल एवं समता युवा संघ, नीमच इस साधना महोत्सव चातुर्मास की सफलता हेतु दृढ़संकल्पित हो सेवा कार्यों में लगे हुए हैं।

तीर्थंकर देवों की आज्ञा पर चलना दुष्कर है

16 सितम्बर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् जैन संस्कार पाठ्यक्रम, दशवैकालिक सूत्र, जैन सिद्धान्त बत्तीसी का गहन अध्ययन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया।

राठौर परिसर में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **"तलवार की धार पर चलना बहुत आसान है, हो सकता है हमें आसान नहीं लगे किन्तु तीर्थंकर देवों की आज्ञा पर चलना अतिदुष्कर है। जहाँ पर हम हमारे मन की सुनने लग जाते हैं, वहाँ पर भगवान की वाणी गौण हो जाती है। गौतम स्वामी का मन जब तक भगवान की आज्ञा में नहीं चला तब तक उनको अपनी विद्वत्ता का घमण्ड था, लेकिन जब भगवान की आज्ञा में आए तो उनका घमण्ड चूर-चूर हो गया। जब तक हम अपने मन के अनुरूप चलेंगे तब तक कठिनाइयाँ खड़ी रहेंगी और जब भगवान की आज्ञा के अनुरूप चलने लगेंगे तो कठिनाइयाँ आ भी जाएँ तो वे परेशान करने वाली नहीं बनेंगी, क्योंकि हमारा मन सध जाएगा। फिर चाहे कितनी ही चोटें लगें, हमारा मन आहत नहीं होगा, हमें दुःख पैदा नहीं होगा। मेरे मन ने कवच धारण किया हुआ है तो मेरे मन को चोट नहीं लगेगी।**

जिनका मन संयमित हो गया उनको कष्ट, कठिनाइयाँ महसूस ही नहीं होती। प्रत्याख्यानों से संयम पैदा होता है। संयम का अर्थ है अनुशासन। अपने आप पर नियंत्रण कर लेना ही संयम है। कष्टों के समय मन को नियंत्रित कर लिया तो कष्ट हमारे भीतर प्रवेश नहीं कर पाएँगे। हमारा मन आहत नहीं होगा।"

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे मन में कभी भी शासन नायक के प्रति अन्यथा भाव नहीं आने चाहिए। गुरु के प्रति हमारी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान ने आचारांग सूत्र में फरमाया है कि यदि तू दुःख से मुक्त होना चाहता है तो अपनी आत्मा को देख। सभी जीव सुख चाहते हैं, शांति चाहते हैं, पर काम करते हैं दुःख के। सुख हम सभी चाहते हैं और प्रवृत्ति करते हैं दुःख की। जो व्यक्ति अपनी आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करता है वह सुख पाता है। प्रदर्शन और पर-दर्शन दो चीजों को छोड़ना जरूरी है। आत्मदर्शन के लिए जितना समय हम दूसरों को देखने में लगा रहे हैं, उससे कम समय भी हमने अपनी आत्मा को दे दिया तो हम कभी अशांत नहीं रहेंगे। दुनिया को बदलने के लिए पुरुषार्थ की जरूरत नहीं है, स्वयं को बदलने के पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

देश के कोने-कोने से पधारे स्थानीय एवं राष्ट्रीय संघ पदाधिकारियों एवं स्वाध्यायियों ने महापुरुषों से विशेष ऊर्जा एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। दोपहर में जैन सिद्धांत बत्तीसी का गहन अध्ययन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए।

टाउन हॉल में समता प्रचार संघ द्वारा आयोजित स्वाध्यायी समागम कार्यक्रम में वीर स्वाध्यायी, श्रमण परिवार स्वाध्यायी, संथारा साधक परिवार एवं 25 वर्ष से स्वाध्यायी सेवा देने वाले स्वाध्यायियों का सम्मान समारोह एवं वर्ष 2019 से 2023 तक स्वाध्यायी सेवा देने वाले स्वाध्यायी भाई-बहिनों को पुरस्कार वितरण हेतु आयोजित कार्यक्रम संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, समाजसेवी नाहरसिंह जी राठौड़, मध्य प्रदेश शासन के पूर्व मंत्री नरेन्द्र जी नाहटा, नीमच संघ अध्यक्ष, समता प्रचार संघ के राष्ट्रीय संयोजक वीरपिता निर्मल जी संघवी सहित संयोजक मण्डल की गरिमामय उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ।

जीवन की कमजोरियों को दूर करें

17 सितम्बर 2023। प्रात:काल की मंगल बेला में आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम रविवारीय समता शाखा में समता आराधना हेतु जनसैलाब उमड़ पड़ा। गुरु के प्रति निष्ठा व समर्पणा का अद्भुत दृश्य परिलक्षित

हो रहा था। जैन सिद्धांत बत्तीसी, जैन संस्कार पाठ्यक्रम एवं दशवैकालिक सूत्र का गहन अध्ययन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया।

धर्मसभा में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**व्यक्ति चाहता कुछ है और करता कुछ और है। चाह और राह की भिन्नता के कारण मंजिल की प्राप्ति नहीं होती। अरिहंत बनने के लिए अर्हता (योग्यता) की आवश्यकता है। अरिहंत यानी अपने आपको योग्य बनाना है। अरिहंतों की अर्हता प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। स्व का अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है। हमने शरीर का अध्ययन तो किया, पर क्या आत्मा का अध्ययन किया है? इन्द्रियों के विषय हमें नीचे गिराने वाले हैं। अरिहंत बनने के लिए जीवन की कमजोरियों को दूर करना होगा। साधुओं के दर्शन पुण्यकारी होते हैं क्योंकि ये वो तीर्थ रूप हैं, जिनके सहारे तिरा जा सकता है।**'' गुरुवंदन पाठ का हृदयस्पर्शी विवेचन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मविश्वास, हर क्षेत्र में विजय दिलाता है। जो मन से हार गया वो कुछ भी नहीं कर पाता है।

संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्रीगणों ने संघ समर्पणा गीत एवं गुरु चरणांजलि *'गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए'* प्रस्तुत कर गुरुचरणों में सच्ची निष्ठा एवं संघ समर्पणा के भाव प्रकट किये। साध्वी श्री निर्ग्रन्थ श्री जी म.सा. के 32 उपवास एवं अन्य दीर्घ तपस्याओं के अवसर पर आचार्य भगवन् के आह्वान पर 111 तेला तप के प्रत्याख्यान हुए।

समता प्रचार संघ के संयोजक मण्डल एवं स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने *'संकल्प मेरे मन में हो ऐसा, अब मैं बनूँगा अरिहंत जैसा'* गीत प्रस्तुत किया। देश के कोने-कोने से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने युवती शक्ति की बहिनों को तत्त्वज्ञान एवं प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया। झारड़ा संघ के सदस्य नीमच तक 40 किमी. पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित हुए।

जानना सरल, पर करना कठिन

18 सितम्बर 2023। भोर की मंगल प्रार्थना में *'शुभ मंगल हो, शुभ मंगल हो, जीवन का हर क्षण मंगल हो'* के स्वर प्रस्फुटित हुए। तत्त्वज्ञान का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**आज मोबाइल आदमी के हाथ में है या आदमी मोबाइल के हाथ में? सुनना, सुनाना उतना ही जितना हमारे लिए अनिवार्य हो। जानो उतना जितना जरूरी हो। जो जानना जरूरी नहीं उसका त्याग कर दो। जो निरर्थक हैं उन बातों की ओर से ध्यान हटा लो। जितना ज्ञान मिले उतना अच्छा है। कौन-सा रास्ता दुःख का है और कौन-सा सुख का, यह जानने की जिज्ञासा जितनी प्रबल है उतनी ही आचरण की प्रबलता हो तो जीवन ऊपर उठ सकता है। जानना सरल है, पर करना कठिन है। अनाथी मुनि की तरह राम गुरु ने प्रतिज्ञा की थी कि बीमारी शांत हो जाए तो दीक्षा ले लूँगा और उनकी भावना फलवती हुई।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ज्यादा सुनना और कम बोलना चाहिए। साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्या के उपलक्ष में कई भाई-बहिनों ने एक घण्टा मौन करने का प्रत्याख्यान लिया।

धर्म को स्पर्श करना कठिन

19 सितम्बर 2023। प्रात: मधुर स्वर लहरियों में प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी व दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्याय का गहराई से अध्ययन कराया। धर्मसभा में अपार जनसमूह को भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म को स्पर्श करना बहुत ही कठिन है। इसके लिए मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, अशुभ योग से बाहर आना होगा। इनसे बाहर आएँगे तो उजास बढ़ेगा, उल्लास बढ़ेगा। शुभ योग में धर्माराधना का विचार बन सकता है। काया को स्थिर रखना असंभव है। हाथ-पैर नहीं हिलाएँ तो जंग लग जाएगी। मन को स्थिर करना मुश्किल है। शरीर की प्रवृत्ति किए बिना काम नहीं चलेगा। प्रवृत्तियाँ दो प्रकार की बताई गई हैं- सभ्य और असभ्य। भाषा भी सभ्य व असभ्य होती है। सभ्य भाषा मधुर शब्दों में बोली जाती है और बिना लगाम के जैसे घोड़ा दौड़ता है वैसे बोली गई भाषा असभ्य भाषा कही जाती है। हम सभी के पास मन है। मन से क्या प्रवृत्ति कर रहे हैं, ये हम ही जानते हैं, बाहर वाला शायद ही जान पाए। मन द्वारा किया गया विचार बाहर झलकता है। हम सावधान रहते हैं कि हमें कोई देख रहा है। जैसे भाव रहेंगे वैसे कर्मबन्धन होंगे। धर्म जीवन व्यवहार में उतरने से ही जीवन धर्ममय बनेगा।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो श्रेष्ठ है उसका आचरण करना चाहिए। सुनने से ही कल्याण का मार्ग या पाप का मार्ग प्रशस्त होता है। सुनने से ही सुमार्ग और कुमार्ग का ज्ञान होता है। किस मार्ग पर चलकर आत्मा का कल्याण होता है और किस मार्ग पर पतन, इसका विवेक भी सुनने से ही होता है। जिनवाणी के माध्यम से हम हित-अहित का ज्ञान करें।

साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'राम गुरु के गुण गाया कर, जीवन धन्य बनाया कर'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने महिलाओं को धर्म तत्त्व का बोध कराया।

धैर्य से मिलती है सफलता

20 सितम्बर 2023। मंगलमय प्रार्थना के साथ दिन के शुभारंभ के पश्चात् जैन सिद्धान्त बत्तीसी, धर्म तत्त्व का ज्ञानार्जन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया। विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''भगवान महावीर ने दो धर्म प्ररूपित किए हैं- आगार धर्म और अणगार धर्म। आगार धर्म श्रावक का धर्म है, जिसमें मर्यादा सहित व्रत-नियमों का पालन किया जाता है तथा अणगार धर्म में परिपूर्ण रूप से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन किया जाता है। साधु जीवन में कोई चिंता-फिक्र नहीं होती है। भूख लगे तो भिक्षा के लिए चले जाओ, भूख न लगे तो तपस्या कर लो। क्षुधा का जो भेदन करे वह भिक्षु है। साधारण आदमी भोजन न मिले तो परेशान हो जाता है, लेकिन ऋषभदेव भगवान को एक वर्ष तक आहार नहीं मिला, फिर भी उनको कोई परेशानी नहीं हुई। धैर्य, मेहनत, पुरुषार्थ रंग लाते हैं। धैर्य से सफलता मिलती है। घर में पदार्थों के नहीं होने की बात नहीं है। निर्दोष भिक्षा बहराने का लक्ष्य होना चाहिए। क्योंकि जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन। अपनों से विवाद नहीं संवाद करें।''**

ममत्व बुद्धि दुःख का कारण

21 सितम्बर 2023। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के साथ ही धर्म तत्त्व का ज्ञानार्जन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. कराया। आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''सुख-दुःख हमारे मन की अवस्थाएँ हैं। साधारण भाव में लोग यह मानते हैं कि जो मेरे अनुकूल है वो सुख और जो प्रतिकूल है वो दुःख। किन्तु आज जो अनुकूल है वह कल प्रतिकूल भी हो सकता है। शादी के बाद पुत्र पराया मान लिया जाता है। यह मन का संवेदन है, क्योंकि हम ऐसा वातावरण देखते हैं। माता-पिता मान लेते हैं कि बेटा अब वैसा नहीं है। हमारी ममत्व बुद्धि दुःख का कारण है। हमने श्रावक जीवन को नहीं समझा इसलिए गृहस्थ व श्रावक को समान मान लेते हैं। गृहस्थी में उल्लास रहता है। श्रावक का मन स्वस्थ होता है। उसके अन्दर यही विचार चलता है कि कोई मेरा नहीं, मैं किसी का नहीं। मैं संसार में रहते हुए कर्त्तव्य का निर्वाह कर रहा हूँ। श्रावक जीवन में आकांक्षा गौण हो जाती है और कर्त्तव्य प्रधान रह जाता है। उसके मन में संसार, परिवार, मोह, ममत्व से निवृत्ति हो जाती है। जो मन से हार जाता है उसका पतन हो जाता है। इसलिए हर हालत में मन को जीतें, मन को साधें और प्रसन्नता बनाए रखें।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमने रिश्ते बदले, कपड़े बदले, पर जीवन को नहीं बदल पाए। मनुष्य जन्म स्वर्णिम अवसर है। इसको सार्थक करें। साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'आगम का भण्डार हैं गुरु राम'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। प्रवचन पश्चात् तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आगाज हुआ।

राग-द्वेष संसार के बीज हैं

22 सितम्बर 2023। प्रातःकालीन शुभ बेला में मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व का बोध कराया। अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में आयोजित धर्मसभा को भगवान महावीर के अमृत वचनों से सिंचित् करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''राग-द्वेष की बिल्डिंग अनंत-अनंत मंजिल पर खड़ी है। हम प्रवृत्तिवश राग-द्वेष में फँस जाते हैं। जिस पर मन रुचिकर बनता है वह राग है, जो प्रतिकूल अवस्था है वह द्वेष है। राग-द्वेष में फँसना बहुत सरल है किन्तु निकलना बहुत ही कठिन है। पदार्थों के प्रति आसक्ति से राग-द्वेष एवं समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हम गलत धारणाओं के कारण राग-द्वेष को छोड़ नहीं पा रहे हैं। मन की समीक्षा से ही राग-द्वेष घट सकता है। राग-द्वेष का छेदन ही मोक्ष की प्राप्ति कराता है। त्याग से ही मन नियंत्रित होता है और व्रत नियम में भावना यह रहे कि मेरा राग-द्वेष घटे। ऐसा भाव पैदा करने से आत्मशक्ति मजबूत होगी और राग-द्वेष पर विजय प्राप्त कर पाएँगे।''** आचार्य भगवन् ने सुनंदा चारित्र की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत करते हुए धर्मचक्र तप में अधिक से अधिक भाग लेने का आह्वान किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी सत्य है, निःशंक है। जिनवाणी मुक्ति दिलाने वाली है। जिनवाणी को आत्मसात् कर जीवन धन्य बनाएँ।

हिन्दी कार्यशाला के अन्तर्गत श्री नीरज मुनि जी म.सा. एवं आशुतोष जी शुक्ल ने हिन्दी के शुद्ध लेखन एवं उच्चारण विधि का ज्ञान कराया। महिलाओं को जैन सिद्धांत बत्तीसी व श्रुत आरोहक का ज्ञान श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने कराया। समग्र जैन चातुर्मास सूची के प्रधान सम्पादक बाबुलाल जी जैन 'उज्ज्वल', मुम्बई एवं शिक्षाविद् उम्मेद जी संघवी-जयपुर सहित अनेक गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

राग-द्वेष की भयंकरता

23 सितम्बर 2023। पंच परमेष्ठी के गुणगान सहित प्रात:कालीन प्रार्थना हुई तत्पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी आदि का अध्ययन कराया।

परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी से भक्तों को अमृतवाणी का पान कराते हुए धर्मसभा में फरमाया कि ''राग-द्वेष में जो फँसा है उसे अभिशाप लगा हुआ है। बिल्डिंग नींव पर खड़ी की जाती है, लेकिन संसार की बिल्डिंग राग-द्वेष पर खड़ी है। हम राग-द्वेष किसे मानते हैं? जिन पर मन की अनुकूलता है और हमारा भाव रुचिकर बनता है वह राग है, जो रुचिकर नहीं हो वह द्वेष है। यह राग-द्वेष मजबूत खंभे हैं, जिन पर हमारी बिल्डिंग खड़ी है। अनंत-अनंत मंजिलों (कर्मों) की बिल्डिंग खड़ी हो गई है। राग-द्वेष में फँसना आसान है, पर इनसे निकलना कठिन है। यह प्रिय है, मनोज्ञ है, मन को भाने वाली है आदि जैसे भाव मन में बनते रहना ही गहरा राग है। राग-द्वेष से बचने का उपाय भगवान ने बतलाया है, पर हमारा मन तैयार होगा तो ही हम बच पाएँगे। राग-द्वेष संसार में बाँधने वाले हैं। राग-द्वेष सांसारिक कर्मों के बीज हैं। ये भाव कर्म हैं। जब तक हम रहेंगे तब तक द्रव्य कर्म बंधते रहेंगे। हमने इनसे बचने का क्या उपाय किया? तपस्या करने के बाद समीक्षा करें कि राग-द्वेष कम हुआ या नहीं? हमारा मन बड़ा भोला व चालाक है। रोज छोटे-छोटे प्रत्याख्यान लेने का नियम लेना चाहिए। एक सूची बनाकर रखें। किसी भी पदार्थ के प्रति हमारा लगाव नहीं रहेगा तो हमारी आत्मशक्ति बढ़ेगी। शाश्वत सुख को प्राप्त करना है तो राग-द्वेष पर नियंत्रण करें।''

मेरेपन से बढ़ता है मोह

24 सितम्बर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय बेला में आयोजित रविवारीय समता शाखा में समता आराधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों की उपस्थिति हर्षित करने वाली थी। हर कोई आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम का लाभ उठाकर कर्मनिर्जरा करने की ओर अग्रसर था। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी सहित अनेक विधाओं का ज्ञानार्जन कराया।

सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य श्री रामेश ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए धर्मसभा में फरमाया कि ''जिनवाणी का सार महामंत्र नवकार एवं यतना और विवेक, ये दो बिन्दु हमारे जीवन में आ जाएँ तो हमारे जीवन की दशा व दिशा बदल जाएगी। सारा सार इन दो बिन्दुओं में भर दिया गया है। गेहूँ और चावल दोनों ही अन्न हैं, लेकिन भिन्न-भिन्न पदार्थ बन जाते हैं तो खाने में रुचि बढ़ जाती है। प्रवचन के सार रूप में विषय-कषाय दूर हो जाएँ तो समभाव आ जाए। संसार का मूल कारण राग-द्वेष एवं मोह हैं। संसार में जितने भी व्यक्ति हैं वे किसी न किसी मोह में फंसे हैं। मोह नहीं हो तो संसार में क्या है? हो सकता है कि मैं उसका अनुभव नहीं कर पा रहा हूँ। यदि मोह गहराई में न जमा हो तो कोई कारण नहीं कि हम संसार में रुके हुए हैं। मेरेपन की मति का त्याग करें तो मोह घटता जाएगा। मेरेपन की ममत्व बुद्धि को हटाने के लिए 'इदं न मम' को आत्मसात् करें। लेकिन केवल शब्दों से नहीं, इससे काम नहीं चलेगा। इसके लिए हमारे भीतर से तैयारी आवश्यक है। जिस दिन यह विषय हमारे जीवन में उतर जाएगा फिर मुक्त होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अन्यायपूर्वक धन उपार्जन ना करें। इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयती श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'राम आ गए हैं, गुरु राम आ गए हैं'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् ने अक्टूबर माह में षट्रस तप करने का आह्वान किया। जिसमें पाँच-पाँच दिवस के लिए दूध, दही, घी, तेल, मीठा एवं नमक का त्याग करने का नियम रहता है।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, मंदसौर ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास की भावभरी विनती प्रस्तुत की। आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा. की जन्मस्थली धामनिया से संघ सदस्यों ने 28 किमी. की पदयात्रा कर गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया एवं शेखेकाल में क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की। कर्मबंध एवं हमारा जीवन शिविर में साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. ने कर्मों की सुन्दर व्याख्या फरमाई।

बुरे विचार एवं बुरे कार्यों से हम दुःखी

25 सितम्बर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना *'शुभ मंगल हो'* के साथ ही धर्म तत्त्व का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रदान किया। धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु को की जाने वाली वंदना हमारे भीतर शक्ति का संचार करती है और वह शक्ति हमें विनम्र बनाती है। जितना विनय आएगा उतने ही हम ऊँचे उठेंगे। जिस वृक्ष की जड़ें जितनी गहरी होती है वह उतना ही ऊपर उठता है। हमारे भीतर गहराई विनम्रता है। धर्म का मूल ही विनय है। जड़ का काम जमीन के भीतर रहकर गहराई को प्राप्त करना है। जड़े ऊपर नहीं दिखती, केवल फल, फूल, पत्ते व डालियाँ ही दिखती हैं। फूल व पत्तियों आदि को सारी ताकत जड़ों से मिलती है। कोई जड़ों को काट ले तो पेड़ धीरे-धीरे सूख जाता है। जीवन का रस विनय से प्राप्त होता है। विनय ही वह अदृश्य शक्ति है जो विभिन्न कार्यों का संपादन करती है, जैसे जड़ें अदृश्य रहकर पेड़ को पोषण देती हैं। कुछ लोग काम करके अपना महत्त्व दर्शाते हैं और कुछ लोग सिर्फ काम करते हैं, अपना महत्त्व नहीं दर्शाते। जहाँ द्रव्य, क्षेत्र, काल हार जाते हैं, वहाँ भाव काम करते हैं। बुरे विचार बुरे कार्य (कर्म) हमें दुःखी बनाते हैं। अच्छी सोच, अच्छे विचार और अच्छे कर्म ही हमें सुखी बनाते हैं। अगर स्वयं सुखी रहना चाहते हैं तो कोई दुःखी नहीं कर सकता। हम अपने विचारों और कार्यों को बदलें।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि निंदा, प्रशंसा में समभाव रखें। शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'धन्य है बहुश्रुत जी, धन्य हैं इनका नाम'* भक्ति गीत प्रस्तुत किया। 12 वर्षीय बालक कलश पटवा-भीनासर ने चातुर्मास समाप्ति तक मोबाइल त्याग का पच्चक्खाण लिया। 8 वर्षीय आरव भंडारी-चेन्नई ने आजीवन जमीकंद त्याग का संकल्प लिया। कई भाई-बहिनों ने 12 एकासन, 12 आयंबिल करने का नियम ग्रहण किया। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। कर्मबंध और हमारा जीवन शिविर में साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. ने कर्मों की व्याख्या फरमाई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम का अध्ययन बहिनों को कराया।

मन को जीतने वाला विश्वविजेता

26 सितम्बर 2023। प्रात:कालीन दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों के पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति से समवसरण जैसा अद्भुत नजारा परिलक्षित हो रहा था। धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि ''जो स्वयं को जीत लेता है वह जिन होता है। जब तक दूसरों को

जीतने का लक्ष्य रहता है तब तक स्वयं को नहीं जीत पाते। आज प्रभुता की लड़ाई सब जगह चल रही है। प्रत्येक देश अपनी संप्रभुता को स्थायी रखना चाहता है। हमने चक्रवर्ती के जैसे यदि विश्व पर जीत हासिल कर ली तो भी स्वयं को जीतना बाकी रह गया। जिसने अपने आपको जीत लिया, उसको दूसरों को जीतने की आवश्यकता नहीं। जब तक हम दूसरों को जीतते हैं तब तक हम शून्य होते जाते हैं। स्वयं को जीतने का तरीका क्या है? जिससे हम अपने आपको जीत सकते हैं, वह है पाँच इन्द्रियों का निग्रह। इनसे हमारे भीतर धैर्य का विकास होगा। जिसने इनको जीत लिया वह इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षित नहीं होगा। जिसने मन को जीत लिया उसने सारे जगत् को जीत लिया। हम अपनी प्रशंसा सुनने के लिए बेताब रहते हैं, पर दूसरों की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या जागृत होती है। उस ईर्ष्या भाव को हटाने के लिए हमारे मन में प्रशंसा का भाव बढ़ाना चाहिए। मासखमण की तपस्या करना बहुत ही आसान है, किन्तु ईर्ष्या को छोड़ना, बड़प्पन को तजना बहुत मुश्किल है। मन को जीत लेना, दूसरों के प्रति विपरीत विचार पैदा नहीं होने देना कठिन है। बरसाती पहनकर तालाब में उतरने पर शरीर नहीं भीगेगा, पर हमने कर्मों की बरसाती पहन रखी है जो हमारे हृदय को नहीं भिगो रही है। जन्म-जन्मान्तरों तक ईर्ष्या साथ चलती है और जलाती रहती है। जिन बनने के लिए पाँच इन्द्रियों का निग्रह करना होगा। उससे हमारा धैर्य बनेगा और कैसी भी कठिनाई आएगी तो मन विचलित नहीं होगा।'' सुनंदा चारित्र भाग की सुन्दर व्याख्या आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत की।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि वर्तमान को जिसने साध लिया, वर्तमान का पूरा उपयोग साधना में कर लिया, उसका जीवन सार्थक हो गया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं समता महिला मण्डल, भीलवाड़ा ने आचार्य भगवन् के पावन चरणों में आपश्री जी के आगामी चातुर्मास एवं विभिन्न प्रसंगों हेतु विनतियाँ प्रस्तुत की। दोपहर में कर्मबंध और हमारा जीवन शिविर में साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. ने आठ कर्मों की सुंदर व्याख्या फरमाई।

27 सितम्बर 2023। प्रात:कालीन शुभ बेला में मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी, जैन संस्कार पाठ्यक्रम, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि का गहन अध्ययन कराया।

आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियाँ उच्चारित करते हुए फरमाया कि –

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''धर्म-अधर्म दोनों तत्त्व साथ-साथ चल रहे हैं। इनकी पहचान कठिन लग रही है कि किसे धर्म समझा जाए और किसे अधर्म। अधर्म की पोशाक धर्म भी सजा लेता है। धर्म की पहचान मन को संतुष्टि, प्रसन्नता एवं आनन्द की अनुभूति कराने वाली है, लेकिन अधर्म मन को कभी आह्लादित नहीं कर पाता और हमारी नासमझी का हमें भान नहीं हो पाता। धर्म से मिलने वाली खुशहाली व प्रसन्नता अधर्म से मिलने वाली प्रसन्नता से विपरीत होगी। धर्म-अधर्म की पहचान अच्छे से जरूरी है। धर्म से मन को संतुष्ट नहीं मिले इसका कोई कारण नहीं है। छोटी-छोटी कठिनाइयों में हम खिन्न हो जाते हैं। हम मात्र धर्म क्रिया कर रहे हैं, पर धर्म का स्पर्श नहीं किया। हमारी समझ सही होनी चाहिए तभी धर्म की सही परख कर पाएँगे। आडम्बर से धर्म नहीं हो पाएगा। अधर्म से तत्कालीन संतुष्ट मिल जाएगी, पर चिरशांति व समाधि नहीं मिलेगी। तीन मनोरथ का उच्चारण भी ऊपरी तौर पर हो रहा है। जिस दिन उसका रस भीतर उतरेगा वह क्षण अमूल्य होगा। सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्था ये धर्म का बोध कराने वाले हैं।'' आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने श्रेष्ठ विचार और श्रेष्ठ कार्यों को निरन्तर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

रामपुरा महिला मण्डल ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत करते हुए विभिन्न त्याग-तप ग्रहण किए। '**कर्मबंध और हमारा जीवन**' शिविर में साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. ने कर्मबंधन से बचने की प्रेरणा दी। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बहिनों को तत्त्वज्ञान का बोध दिया। डॉ. श्रेणिक नाहटा-दुर्ग ने नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर में अपनी सेवाएँ प्रदान की।

जितनी उम्र है उतने नवकार महामंत्र गिनने का प्रत्याख्यान सभा में सैंकड़ों भाई-बहिनों ने लिया।

सुख दिये सुख होत

28 सितम्बर 2023। प्रार्थना एवं तत्त्व बोध कक्षा के आयोजन पश्चात् राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा में आचार्य भगवन् ने अपनी ओजस्वी देशना में फरमाया कि "यदि हमने बहुतों को सुखी बनाया होता तो हम दु:खी होते ही नहीं। हमें दु:ख है इसका मतलब कि हमने लोगों को दु:खी बनाया, दु:ख दिया। यदि दिया ही नहीं तो मुझे दु:ख क्यों मिलेगा? सुख सब चाहते हैं। हमने जिनमें सुख मान लिया उन चीजों के लिए हम तरसते रहते हैं। दुनिया में अधिकांश लोग ऐसे ही होंगे जो इन्द्रिय-विषयों में आनन्द मनाते हैं और उसे वो सुख मानते हैं। दूसरा सुख मानते हैं कि अभाव नहीं हो। मैं जो चीज चाहूँ वो मुझे मिल जाए। हम जिसे सुख मान रहे हैं, वो बर्फ की शिला के समान है। वो धीरे-धीरे पिघल जाएगा और एक दिन नजर ही नहीं आएगा। सुख से जीना बहुत अच्छी बात है और ये भी ठीक है कि मुझे चीज का अभाव नहीं लगे। हमको अभाव की अनुभूति कब होती है? जब हमारी इच्छाएँ, अपेक्षाएँ पूरी नहीं होती हैं। हमें लगता है कि कुछ चीजों का अभाव है और वो अभाव हमें दु:खी बना देता है। ऐसा क्या उपाय किया जाए कि हमें कोई अभाव रहे ही नहीं? इसका सुंदर उपाय है कि हम किसी पदार्थ की अपेक्षा करें ही नहीं। जो है उसी में सुखी रहें। सुख दिये सुख होत है, दु:ख दिये दु:ख होत। हम जैसा बीज बोएँगे वैसा ही फल मिलेगा। अंतरमन से हम सबकी भलाई के भाव रखें।"

उभय गुरु-भगवंतों के सान्निध्य में मोक्ष आरोहण शिविर का आगाज हुआ। जामुनियाकलां के गुरुभक्तों ने 8 किमी. पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित हो क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की। आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु जावद (गादी गाँव) संघ अध्यक्ष तथा नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने पुरजोर विनती गुरुचरणों में अर्पित की। खैरोदा संघ ने अहोभाव व्यक्त किये। दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम, जैन सिद्धांत बत्तीसी आदि का तलस्पर्शी अध्ययन कराया।

हम कर्मों के अनुसार हो जाते हैं ट्रांसफर

29 सितम्बर 2023। प्रात: प्रार्थना एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा के पश्चात् गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी को धर्मसभा के माध्यम से संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि "सुख भी दो प्रकार का है- एक संबंधों का सुख और दूसरा शाश्वत सुख। संबंधों का सुख आसानी से मिल जाता है, बहुत सस्ता है। अधिकांश लोग संबंधों में रचे-बसे सुख को ही सुख मान लेते हैं। संबंधों का सुख शाश्वत सुख नहीं दिला पाएगा। जब तक शाश्वत सुख नहीं मिलता, तब तक वे संबंधों के सुख को सुख मान लेते हैं। यह सुख शाश्वत (सदा रहने वाला) सुख नहीं है। कर्म हमें जहाँ ट्रांसफर करते हैं, हम वहाँ चले जाते हैं। कर्म हमें कहा जन्म देंगे, किस घर में जन्म देंगे, इसका हमें ज्ञान नहीं है। कर्म सच्चाई जानते हैं, हम उनसे अनभिज्ञ हैं। कर्म संयोग करते हैं। माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी वाले संबंध द्रव्य के संबंध हैं। किन्तु संबंधों को बनाए रखने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। आपसी लेन-देन, आदान-प्रदान संबंधों को सुदृढ़ रखते हैं। हमारी समझ में यह बात रहनी चाहिए कि जो संबंध

हैं वे अस्थाई हैं, इनमें स्थायित्व नहीं है। एक समय तक ये संबंध रहने वाले हैं। यह बोध हमारे भीतर बना रहना चाहिए। आज नहीं तो कल ये संबंध छूटने वाले हैं और छूटेंगे अवश्य। ऐसा हमारा विश्वास होगा तो लगाव कम होगा। अलगाव होने के समय हमारा मन दु:खी न हो। गहरा लगाव वियोग में दु:ख देने वाला है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज धन के पीछे भाई-भाई में विवाद हो रहा है। परिवार बिखर रहे हैं। तृष्णा का कोई अंत नहीं है। साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'गुरुवर तेरी आगमचर्या पावन है'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उपस्थित अनेक भाई-बहिनों ने ऊनोदरी तप करने का संकल्प लिया।

प्रत्येक पूर्णिमा को गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेने वाले देश के अनेक क्षेत्रों के गुरुभक्तों ने गुरुवर के दर्शन कर आत्मतृप्ति प्राप्त की। भजन स्तवन शिविर में साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति पर मार्गदर्शन दिया।

श्रेय मार्ग

30 सितम्बर 2023। दैनिकचर्या के अन्तर्गत प्रात: की शुभ बेला में प्रार्थना एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा अध्ययन करवाने के पश्चात् विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें सर्वप्रथम जन-जन की आस्था के केन्द्र परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी सिंहगर्जना में दिव्यदेशना देते हुए फरमाया कि ''संसार के प्राणियों के दो मार्ग हैं-

1. श्रेय मार्ग यानी आत्मा का मार्ग और
2. प्रेय मार्ग यानी इन्द्रियों का मार्ग।

अनादिकाल से हम भी संसार के मार्ग पर दौड़ रहे हैं। एक, दो, तीन सामायिक और धर्म क्रिया करते हुए हमें थकान आती है। इसका मतलब है कि हमें संसार का मार्ग प्रिय है। मित्र याद आए या न आए, लेकिन शत्रु जरूर याद आता है। हमारे भीतर राग-द्वेष दोनों हैं। राग-द्वेष की अवस्था हमें आगे बढ़ने से रोकने वाली होती है। राग-द्वेष मोह के भेद हैं। ये जब हमारे पीछे लगे रहेंगे तो हमें आगे गति नहीं करने देंगे। आत्मा में रमण करने का अपना अलग अनुभव होता है। यह हमें संसार मार्ग से दूर कर देता है। अंतर्यामी अपने भीतर की अवस्था के ज्ञाता बन गए। हमारा मन किधर दौड़ता है इसका मात्र 10 से 15 प्रतिशत ही हमें ध्यान रहता है। शेष 85 प्रतिशत हम नहीं जानते कि क्या गति हो रही है। एक क्षण के विचार मेरे से अबूझ नहीं बनेंगे। हमारे मन की गति, प्रवृत्ति हमारी जानकारी में हो रही है या हम उससे अनजान हैं। यह अनदेखी अवस्था मन को स्वस्थ बनाने वाली है। भगवान ने संयम की आवश्यकता बताई है। मन और इन्द्रियों पर अपना नियंत्रण हो। मन कहाँ प्रवृत्त हो रहा है, इसकी हमें जानकारी हो। हमारा मन हमें अवगत कराता रहे कि मैं मौजूद हूँ। रिपोर्टिंग करे कि मन ने क्या-क्या किया। हम मन से रिपोर्ट लेने लगे तो वह अनुकूल बनने लगेगा। भगवान ने इसे संयम कहा है। मेरे उपयोग में सारी अवस्थाएँ रहनी चाहिए। मन ऐसा बन जाएगा कि गलत रास्ते नहीं बढ़ेगा। इन्द्रियाँ प्रेय मार्ग से हटेंगी तो ही उन्हें श्रेय मार्ग मिलेगा। जो मन स्वच्छंद है उसके लिए ये असंभव है। मोक्ष किसे कहना? जो हमने संग्रह किया उससे मुक्त हो जाना मोक्ष है। धन, परिवार को छोड़ना आसान है, लेकिन मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा भाव को छोड़ना कठिन है। जिससे हमारे मन में उथल-पुथल हो वह प्रेय मार्ग और जिससे शांति-समाधि मिले वह श्रेय मार्ग।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आजकल किसी को किसी की परवाह ही नहीं है। आत्मीय भाव समाप्त हो रहे हैं।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने महिलाओं को जैन संस्कार पाठ्यक्रम एवं श्रुत आरोहक का तत्त्वबोध कराया। भजन स्तवन शिविर में बालक-बालिकाओं को साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने भजनों का अभ्यास कराया। दिल्ली साधुमार्गी जैन संघ ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। देश के अनेक स्थानों से गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। मोक्ष आरोहण शिविर में 52 बालक-बालिकाओं ने महापुरुषों के सान्निध्य में मार्गदर्शन प्राप्त कर सुसंस्कारित जीवन की ओर कदम बढ़ाया।

एक धर्मचक्र में एक तेला व 42 बेला सहित 6 धर्मचक्र सम्पन्न हुए। कुल 258 तपस्वियों ने तपाराधना की। प्रतिदिन दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए। नीमच में गतिमान साधना महोत्सव चातुर्मास में चारित्रात्माओं के सान्निध्य में जन-जन धर्म के रंग में रंगा हुआ है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में नीमच की पुण्यधरा पर दीक्षाओं का ठाठ

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में नीमच की पुण्यधरा पर विभिन्न प्रसंगों का अपूर्व लाभ गुरुभक्तों को प्राप्त हो रहा है। इसी क्रम में आचार्य भगवन् के पावन श्रीमुख से मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता सुपुत्र श्री विजय जी सुनीता जी मेहता, रतलाम (म.प्र.), मुमुक्षु बहिन सुश्री तमन्ना जी जैन सुपुत्री श्री शुभकरण जी मनभर जी जैन, अलीगढ़ रामपुरा (राज.) तथा मुमुक्षु बहिन सुश्री आर्ची जी नाहर सुपुत्री श्री राजेश जी सुषमा जी नाहर, बेगूँ (राज.) की जैन भागवती दीक्षाएँ क्रमशः 18 अक्टूबर 2023, 05 नवम्बर 2023 एवं 22 जनवरी 2024 के लिए स्वीकृत की गई है। अलग-अलग दिवसों पर इन पावन दीक्षाओं की आगारों सहित घोषणा के साथ ही सर्वत्र खुशी की लहर दौड़ गई। इन अवसरों पर सम्पूर्ण प्रवचन पाण्डाल जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गूँज उठा। मुमुक्षु आत्माओं के त्याग एवं समर्पण की चर्चा से हर कोई अपनी कर्मनिर्जरा कर रहा है। नीमच का कण-कण आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं समस्त चारित्रात्माओं के प्रति नतमस्तक हो रहा है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री हर्षित मुनि जी म.सा.	एकांतर तप (निरंतर)	एकान्तर तप	साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.
साध्वी श्री निर्ग्रंथ श्री जी म.सा.	32 उपवास		
साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	10 उपवास		
साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.	11 उपवास		
साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.	बेले-बेले पारणा (निरंतर)		

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	महेन्द्र जी जैन-सवाई माधोपुर, माणकचंद जी लीलावती जी बरड़िया-पाडल्या, डॉ. सुरेश जी पारीक-चौपड़ा, रमेश जी प्रेमलता जी जैन-भड़गाँव, भगवतीलाल जी चंडालिया-कपासन, पारसमल जी जारोली-मोरवन, चैतन्यलाल जी संचेती-चित्तौड़गढ़, केशुराम जी तिवारी-मन्दसौर, प्रवीण जी ललवानी-शिरूड़, गजेन्द्र जी मीना जी डांगी-उदयपुर, अशोक जी बाघमार-मेरठ, सम्पतलाल जी धारीवाल-फरीदाबाद, शकुंतला देवी चौरड़िया-नाथद्वारा, हजारीमल जी सुशीला जी आँचलिया-देशनोक, प्रकाश जी कोठारी-धार, महेन्द्र कुमार जी अंगूरबाला जी रांका-रतलाम, धर्मचंद जी रेवंतीबाई जैन-सवाई माधोपुर, जुगल किशोर जी टेलर-जावद, ज्ञानमल जी पुष्पादेवी पोखरना-अहमदाबाद, रामकरण जी चौधरी-जेठाना, राजेन्द्र कुमार जी प्रीति जी नवलखा-भीकमगाँव, सुरेश कुमार जी सुशीला जी जैन-सवाई माधोपुर
पक्की नवकारसी	200- दीनप्रभा जी जैन 100- नरेन्द्र जी जारोली-बागेड़ा, संजू जी छजलानी, निर्मला जी सालेचा-खैरागढ़, संदीप जी मूलावत-भीलवाड़ा, सीमा जी पिपाड़ा-किसनगढ़
पक्की पोरसी	300- प्रेमलता जी जैन 100- केसरबाई दुग्गड़-सोमेसर
उपवास	**108 :** श्रीमती इन्द्रादेवी नाहर-नीमच (गतिमान), **48 :** सुशीलाबाई कांठेड़ (गतिमान), **38 :** प्रवीण जी नागसेठिया-बलवाड़ी, **37 :** मांगीलाल जी चौधरी, **31 :** हेमलता जी वीरवाल-जावद, प्रियंका जी दशोरिया-नयागाँव, **30 :** किरण जी सिपाणी-गुवाहाटी, सपना जी नलवाया-नीमच, **27 :** सुरेश जी गांधी-केसुंदा (गतिमान), **20 :** गुप्त (गतिमान), **19 :** निर्मलादेवी डूंगरवाल-दलौदा, **13 :** शीतल जी गांधी-नीमच, **12 :** राखी जी ओसवाल (गतिमान), **11 :** अंजली जी पामेचा-नारायणगढ़, श्यामादेवी झामर-सिंहपुर, **9 :** संगीता जी गांधी, संजय जी चौधरी, हेमंत जी सालेचा-जगदलपुर, प्रवीण जी सालेचा-जगदलपुर, समता जी सालेचा-जगदलपुर, **अठाई :** वीरमाता सुमन जी राठौड़, सागरमल जी वया, सोनम जी धींग-गादोला, महेश जी कोटड़िया-धमतरी
वर्षीतप	बीसवां- सरला जी सांखला-खैरागढ़ दूसरा- पिस्ता जी सांखला-अहमदाबाद
एकासन	251- रमेश जी बोहरा-अक्कलकुआँ
गाथा का स्वाध्याय	प्रतिदिन 1100- सरोज जी मुणोत-रतलाम
आजीवन क्रोध का त्याग	शांतिलाल जी हड़पावत-उदयपुर

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता

नाम	:	मुमुक्षु नमन जी मेहता
निवास स्थान	:	रतलाम (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	12 सितम्बर 2000
वैराग्यकाल	:	7 माह
पदयात्रा	:	लगभग 150 किमी.
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
धार्मिक ज्ञान	:	श्री दशवैकालिक सूत्र 1-5 गाथा, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1, 2, 11, 9 अध्याय
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
तपाराधना	:	मासखमण, आयंबिल का मासखमण, 9 उपवास

पारिवारिक परिचय

दादी जी-दादा जी	:	स्व. श्रीमती कंचनबाई-स्व. श्री सुजानमल जी मेहता
माता जी-पिता जी	:	श्रीमती सुनीता जी-विजय जी मेहता
बड़े माता जी-पिता जी	:	श्रीमती विमलादेवी-स्व. श्री चन्दनमल जी, श्रीमती विनयबाला जी-स्व. श्री रखबचन्द जी, श्रीमती कुसुम जी-पारसमल जी, श्रीमती जयश्री जी-विनोद जी
बुआ जी-फूफा जी	:	स्व. श्रीमती शांताबाई-पारसमल जी मेहता
भाई, बहिन	:	राजेश जी, महावीर जी, अमित जी, राहुल जी, सौरभ जी, अक्षय जी, पियूष जी, सुनीता जी, मिनाक्षी जी, प्रियंका जी, नेहा जी
भतीजा, भतीजी	:	अचल, प्रांजल, अवनी, सिद्धि, प्रिंसी, अनन्या
नानी जी-नाना जी	:	श्रीमती चांदीबाई-स्व. श्री रखबचन्द जी मांडोत
मामी जी-मामा जी	:	श्रीमती निर्मला जी-मनोहरलाल जी, श्रीमती अंजु जी-अशोक जी मांडोत
मौसी जी-मौसा जी	:	श्रीमती मंजूबाला जी-पारसमल जी जैन, श्रीमती गुड़बाला जी-स्व. श्री बाबुलाल जी कटारिया, श्रीमती अनिता जी-ललित जी बोहरा

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री तमन्ना जी जैन

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री तमन्ना जी जैन
जन्म स्थान	:	अलीगढ़ रामपुरा, उखलाना (टोंक, राज.)
जन्म तिथि	:	01 जुलाई 2005
वैराग्यकाल	:	लगभग 3 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	12 (बारहवीं)
धार्मिक ज्ञान	:	**आगम** – श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, सुखविपाक सूत्र, पुच्छिंसु णं, भक्तामर-स्त्रोतम्, रत्नाकर पच्चीसी, छोटी साधु वंदना, उववाई सूत्र की 22 गाथा, **थोकड़े** – जैन सिद्धांत बत्तीसी, 67 बोल, छः काया, 50 थोकड़े, लघुदण्डक, गति-आगति, गुणस्थान स्वरूप, जीवधड़ा, गमक, नियंठा, सभाद्वार, गांगेय-अणगार, श्रीमद् प्रज्ञापना सूत्र भाग (1)
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धान्त बत्तीसी, जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1
तपाराधना	:	नीवीं, आयंबिल, उपवास, तेला, ग्यारह, षट्रस त्याग तप

पारिवारिक परिचय

दादी जी-दादा जी	:	स्व. श्रीमती केसर जी-स्व. श्री हीरालाल जी
बड़े माता जी-पिता जी	:	श्रीमती तुलसा जी-श्री जसकरण जी, श्रीमती तुलसा जी-श्री उम्मेद जी, श्रीमती नर्मदा जी-स्व. श्री बृजमोहन जी
माता जी-पिता जी	:	श्रीमती मनभर जी-श्री शुभकरण जी
भुआ जी-फुफा जी	:	स्व. श्रीमती कन्या जी-स्व. श्री पाँचूलाल जी, श्रीमती ललिता जी-श्री जमनालाल जी, श्रीमती लोडकी-श्री हेमराज जी
बहन-बहनोई	:	श्रीमती सुरसता जी-राजेश जी, श्रीमती राजन्ती जी-भागीरथ जी, श्रीमती सीमा जी-रामावतार जी, श्रीमती सुमित्रा जी-जसराम जी, श्रीमती गायत्री जी-स्व. श्री रूकमकेश जी, श्रीमती निरमा जी-पहलवान जी, श्रीमती सुमन जी-अजय जी, श्रीमती सुगना जी-यश जी, श्रीमती अनिता जी-छुट्टन जी, श्रीमती चमेली जी-बाबुलाल जी, सुश्री विमला जी
भाभी-भाई	:	श्रीमती भाग्यश्री जी-सुदर्शन जी, श्रीमती संतरा जी-ओमप्रकाश जी, श्रीमती सजना जी-मुकेश जी, श्रीमती अनिता जी-महिपाल जी, श्रीमती आरती जी-विनोद जी, श्रीमती अवनि जी-सतीश जी, श्रीमती ऐरन्ता जी-राजेश जी, श्रीमती प्रियंका जी-राकेश जी
भतीजा-भतीजी	:	महेश, कविता, अभिषेक, रोहित, राजवीर, रघुवीर, सोना, खुशी, ज्योति, मंथन, मोहित, आशीष
भांजा-भांजी	:	कल्पना, पूजा, आरती, कुन्दन, ललित, मुस्कान, पिन्टू, ज्योति, सागर, ऋषभ, आरव, राम, जय, रौनक, महावीर, संयम, चिराग
नानी जी-नाना जी	:	श्रीमती तुलसा जी-स्व. श्री रामनिवास जी
मामी जी-मामा जी	:	श्रीमती शान्ति जी-कजोड़ जी, श्रीमती जानकी जी-रामस्वरूप जी
मौसी जी-मौसा जी	:	श्रीमती केशन्ती जी-रामप्रसाद जी, श्रीमती फोरन्ती जी-पदम जी, श्रीमती रामेती जी-बत्तीलाल जी, श्रीमती हंसी जी-भरतलाल जी

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'स्वाध्याय विवेक, विहार विवेक'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

आपके संस्मरण बने अन्यों के लिए मार्गदर्शक

विगत समय में श्रमणोपासक में विभिन्न नवाचारों को स्थान प्रदान किया गया है ताकि सुधी पाठकों को अलग-अलग विधाओं की विशिष्ट सामग्री उपलब्ध हो सके। इसी कड़ी में एक और नवाचार करते हुए 'संस्मरण' स्तंभ प्रारंभ किया जाना प्रस्तावित है। आप सभी गुरुभक्तों से निवेदन है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के प्रवचन, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान, विहार, स्वाध्याय एवं साधना आदि अनेकानेक प्रसंगों से संबंधित यदि आपके कोई संस्मरण हों, जिसने आपके अंतर्मन को प्रभावित किया हो या आप में कोई सकारात्मक परिवर्तन आया हो तो ऐसे संस्मरण शुद्ध एवं स्वच्छ अक्षरों में अंकित कर आपके नाम, पते, मोबाइल नं. एवं M.I.D. सहित हमें वॉट्सएप 9314055390, email : news@sadhumargi.com पर भिजवाने का कष्ट करें। हमारा लक्ष्य रहेगा कि आपकी रचना को इस स्तंभ के अन्तर्गत श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जा सके।

-सह-सम्पादिका

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095

Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond® Duroflex
Diamond® DUROLON
DURO RING
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

@absjainsangh www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261